कर्ताक सम्बन्धिकक बोध करओनिहार जे शब्द तकरा अर्थमे क्रियाक उद्देश्य फलक विवक्षा नहि हो। देवदत्त *अपना मायक सङ्ग काशी गेलाह*, एहि ठाम *मायमे* सहगमनरूप क्रियाक उद्देश्य सुरक्षितत्वरूप फलक विवक्षाक प्रतिषेधसँ देवदत्त *अपना मायक सङ्ग काशी गेलथीन्ह* एतादृश प्रयोग नहि भेल ॥७॥

की शब्दसँ बनल जे शब्द (ककर, कोना, कखन इत्यादि) ताहिमे एवशब्दक सम्बन्ध (योजना) नहि हो। तस्मात् *ककरे लग* इत्यादि प्रयोग नहि भेल ॥८॥

कनमा आदिसँ परिमाणमे *ही* तद्धित अबैत अछि। *कनमाही पैली, पौआही, सेरही, मोनही* ॥९॥

सेरशब्दान्त ओ मोनशब्दान्त समाससँ परिमाणमे ईकारस्वरूप तद्धित आबए। *अधसेरी, अधमोनी, पसेरी* (चलोप), *एकमोनी* ॥१०॥

स्त्रीप्रत्यय ओ तद्धित दूहूक प्राप्तिमे पहिने स्त्रीप्रत्यय ॥११॥ आदेशापन्न तृतीयासँ पूर्व *आना-टाका* क प्रथम आकेँ ह्रस्वता ॥१२॥

स्त्रीप्रत्यय तथा तद्धित-प्रत्यय दूहूक प्राप्ति सन्ताँ पहिने स्त्रीप्रत्यय आबए, पश्चात् तद्धित। *बतहिआ* एहि ठाम *बताह* शब्दसँ प्रथमतः इकाररूप स्त्रीप्रत्यय आएल, तत्पश्चात् अनादरमे आकार तद्धित भेल ॥११॥

तृतीयाक स्थान ऍं आदेश कहल गेल अछि, ताहिसँ पूर्व *आना* शब्दक ओ *टाका* शब्दक आकारकेँ ह्रस्व अकार आदेश होइत अछि। *अने सेर आलू देत, बारह अनेँ घृत। चारि टकेँ भगवानक मुकुट लेल* ॥१२॥

इच्छामे विहित तिङ् प्रेरणहुमे ॥१३॥ अकर्मक अबन्तकेँ अबन्तकार्य नहि ॥१४॥

जे तिङ् इच्छा अर्थमे कहल गेल अछि से *अय, ऐक* इत्यादि प्रेरणहु अर्थमे अबैत अछि। *लोक कार्य देखए। तौँ दे ज़हिँ। हमहु देखी। अहाँ हमर कार्य करी* ॥१३॥

अकर्मक जे अबन्तधातु तकरा अबन्तनिमित्तक कोनो कार्य नहि हो। *करछु तबल, उजरी धबल, ई क्रिया फबल, मन नहि भबल, पानि सरबल*। आब अबन्त-धातु प्रकरणमे *सरब* धातुक उपादानक काज नहि, तथा 'अकर्मक लबकेँ' एहि सूत्रहुक प्रयोजन नहि ॥१४॥

परिशिष्टप्रकरण समाप्त

मैथिल-श्रोत्रिय-माण्डरवंशोद्भव *धर्मनाथ* प्रसिद्ध-*फेकूशर्म*तनूज

पण्डित श्रीदीनबन्धु झा

विरचित

मिथिलाभाषाविद्योतन (प्रथम खण्ड) समाप्त

मिथिलाभाषाविद्योतन

द्वितीय खण्ड

धातुपाठ

प्रकाशकीय वक्तव्य

मैथिली भाषाक पाणिनि महावैयाकरण पण्डितप्रवर श्री दीनबन्धु झा द्वारा लिखित *मिथिला-भाषा-विद्योतनक* दोसर भाग *(धातुपाठ)*कैँ प्रकाशित करैत हम असीम हर्षक अनुभव कय रहल छी। मैथिली भाषाक जीवनक लेल एहि ग्रन्थक कते महत्त्व छैक, पण्डितजी एहि ग्रन्थकैँ लिखि मैथिलीक कतेक सेवा कयलन्हि अछि, तकर विवेचना मैथिली भाषाक समुन्नतिक अभिलाषी विद्वत्समाज स्वयं कय लेताह। हम केवल पण्डितजीक प्रति एक मैथिलक सम्बन्धेँ ओ मैथिली-साहित्य-परिषदक मन्त्रीक सम्बन्धेँ कृतज्ञता व्यक्त करैत छी।

पोथीक प्रसंगमे एक कथा कहब आवश्यक। मैथिलीभाषा मध्य स्वरक अभिव्यञ्जक संकेतमे–जकरा बहुतो व्यक्ति शैली कहय लागल छथि–*मिथिलाभाषा-विद्योतनक* दूनू भागमे भिन्नता भेटत। तकर कारण जे प्रथम भगमे प्रकाशन-मन्त्री अपने जाहि संकेतमे लिखैत छथि ताही संकेतमे पोथीकैँ ढारि कय प्रकाशित कराओल। पण्डितजीक लेख अंपन रूपमे नहि रहल। किन्तु हम से नहि कयल। संकेत यथावत् रहय देल दू कारणेँ। एक तँ हमर विचारेँ एखन आवश्यकता अछि सभ प्रतिष्ठित विद्वानक अभिमत समाजक समक्ष उपस्थित करबाक, जकर आधार पर मैथिलीक लेखक संकेत स्थिर करबाक विचार स्वयं कय सकथि। दोसर, जनिका मैथिलीक पाणिनि मानैत छी, परिषद जनिका 'महावैयाकरण' पदसँ सम्मानित करैत अछि, तनिक लिखल संकेतकैँ बदलब हम उचित नहि बुझल! अपन मतक अनुसार हुनक लेखकैँ बना देलासँ की लोक ओकरा पण्डितजीक मत नहिं मानि लेत? की से वञ्चना नहि होयत? तँ हम हुनक संकेतकैँ अविकल रहय देबे उचित बुझल। आशा अछि, मैथिली-लेखक-समाज एहू प्रसंगक किछु लाभ उठा सकताह।

मुद्रणक अशुद्धि किछु रहि गेलैक विशेषतः ड ओ इक स्थानमे। तदर्थ अपराधी हमहि छी। एकर प्रकाशन कागजक दुर्लभताक समय आरम्भ भेल छल। किछु तकरहु रंग-रूपमे व्यतिक्रम अछि। किन्तु एहि ग्रन्थक महत्त्वकैँ देखैत, समस्त भारतीय लोकभाषामे धातुपाठपर प्रथम-प्रथम विचारक मर्यादा मैथिलीमे एहि ग्रन्थक द्वारा होइत देखि पूर्ण विश्वास करैत छी जे एहि ग्रन्थरत्नक आदर मैथिलीभाषी समाज द्वारा पूर्ण रूपेँ होयत।

मैथिली-साहित्य-परिषद कार्यालय
दरभङ्गा
जानकीनवमी, १३५७ साल

श्रीकाञ्चीनाथ झा 'किरण'

अथ धातुपाठ- क्रमनिर्देशः

छकआदिमे अन्त्य अकार उच्चारणार्थक ॥१॥ धातु सकर्मक अकर्मक ॥२॥

छक, ठक प्रभृति धातु कहल जाएत; ताहिमे अन्तिम अकार उच्चारणार्थक थीक। अर्थात् उच्चारणमे सौकर्य हो एतदर्थ थीक, ग्रहणार्थ नहि। तस्मात् अकाररहित *छक् ठक्* इत्यादिए धातु जानब ॥१॥

धातु सकर्मक अकर्मक भेदसँ दू प्रकारक होइत अछि। से भेद जानब दू कारणेँ आवश्यक। एक तँ भूतकालमे कतोक तिङ्प्रत्यय सकर्मकसँ आन स्वरूपक ओ अकर्मकसँ आन स्वरूपक अबैत अछि। यथा आदरणीय कर्ता रहने भूतमे सकर्मकसँ *अलैन्हि* अबैत अछि; अकर्मकसँ *अलाह*। *बाबूजी जगह देखलैन्हि, ओहि ठाम बसलाह। देख* धातु सकर्मक थीक, अतः ओकरासँ *अलैन्हि* आएल, *अलाह* नहि, अन्यथा *बसलाह* एहि जेकाँ *देखलाह* इहो प्रयोग भए जाइत। एवम् कृत्संज्ञक अल प्रत्यय सकर्मकसँ कर्ममे, अकर्मकसँ कर्तामे अबैत अछि––*ई पुस्तक हमर देखल अछि; एहिठाम लोक बैसल छल*। एवम् सकर्मक धातुक योगमे द्वितीया अबैछ। एहि हेतु अमुक धातु सकर्मक थीक, अमुक अकर्मक ई परिचय आवश्यक ॥२॥

★ पुष्पाकारचिह्नयुक्त सकर्मक, तद्रहित अकर्मक ॥३॥ अब-प्रत्ययान्त सकर्मक, इब-प्रत्ययान्त अकर्मक ॥४॥

धातुपाठमे जाहि धातुक आगाँ ★ एतादृश पुष्पचिह्न देखी तकरा सकर्मक बुझब, ओ तादृशचिह्नशून्यकेँ अकर्मक जानब। एहि हेतु सकर्मक सकल धातुमे चिह्न देल गेल अछि ॥३॥

अब् प्रत्ययान्त धातु सकर्मक होइत अछि। अबन्त(ण्यन्त)प्रक्रियामे *अब्* प्रत्यय कहल अछि, तदन्त *छकब्* इत्यादि *अब्* प्रत्ययान्त भेल। उदाहरण––*देवदत्तकेँ छकबैत अछि, छकओलक*। एवम् नामधातुप्रक्रियहुमे अब्प्रत्यय कहल गेल अछि, तदन्त *मुकिअब्, लठिअब्* इत्यादिओ *अब्*प्रत्ययान्त धातु भेल, ओहो सकर्मक थीक–*देवदत्तकेँ मुकिअबैत अछि, मुकिअओलक, मुकिआओत।* धातुपाठपठित *तब* आदि अबन्त भेल किन्तु *अब्*-प्रत्ययान्त नहि, अतः ओ एहि ठाम गृहीत नहि भेल।

नामधातुप्रक्रियामे इव् प्रत्यय कहल अछि, तदन्त *घटि, बढ़ि, हदि* इत्यादि धातु अकर्मक थीक ओ सब तत्स्थानापन्नन्यायसँ इबन्त कहओलक। ओकर रूप *बिकृ*धातुवत् *घटिआइत अछि* इत्यादि। यद्यपि ई सूत्र धातुपाठक उपयोगी नहि तथापि प्रसङ्गात् कहल गेल अछि॥४॥

भागत्रयमे समाविष्ट सकलधातुसंख्या ११३५ ॥५॥ प्रथम भागमे ८३४, द्वितीय भागमे ९३, तृतीय भागमे २०८ ॥६॥ छक आदि शब्दसँ तीनू भाग, तक आदिसँ मध्यम भाग, बिकादिसँ अन्तिम भाग ॥७॥ धातुनिर्देश कान्त-खान्त क्रमेँ ॥८॥ ताहूमे कादिसँ पूर्व अकारादिक्रम ॥९॥

धातुपाठमध्य जे धातु कहल अछि ताहि सबहिक संख्या ११३५ एगारह सए पैँतीस जानब ॥५॥

प्रथम भागमे धातुक संख्या ८३४ आठ सए चँओर्तीस, द्वितीय भागमे धातुसंख्या ९३ तिरान्नब्बे, ओ तृतीय भागमे धातुसंख्या २०८ दू सए आठ बुझब ॥६॥

छक आदि कहलासँ तीनू भागक धातुसभ बुझल जाए, *तक आदि* कहलासँ केवल *मध्यम भागक* धातु बुझी, ओ *बिकादि* कहलासँ केवल अन्तिम भागक धातु बुझब ॥७॥

धातुक पाठ कान्त-खान्तक क्रमेँ कएल अछि, जकर अन्त ककार से कान्त भेल, यथा *छक, ठक* इत्यादि। एवम् *ख, खख* इत्यादि खान्त भेल। एही प्रकारेँ गान्त, घान्त इत्यादि ॥८॥

ताहूमे अर्थात् कान्तादिक्रमेँ पठितहुमे अन्तिम वर्णसँ पूर्व अकारादिक क्रम अछि, यथा पहिने *छक*, ततः पर *छिक*, तदन्तर *चुक*। एवं खान्तादिअहुमे यथासंभव ई रीति। ओहि अकारादिअहुसँ पूर्व ककारादिक क्रम देल अछि जाहिसँ कोनो धातु भेटबामे विलम्ब नहि हो, तथा इहो शीघ्रे बुझि पड़ए जे अमुक धातु धातुपाठमे नहि अछि। परन्तु एहि हेतु तीनू भाग देखबाक होएत। कारण जे प्रत्येक भागमे कान्तादिक्रम अछि। तत्रापि *ताकू* ई प्रयोग देखि यदि *ताक धातु* ताकब तँ नहि भेटत किन्तु *तक* धातु भेटत, जकर *ताकू* ई रूप भेल अछि। तस्मात् ह्रस्वदीर्घ उभय सहित धातु अन्वेषणीय होएत ॥९॥

स्वरान्तधातु प्रथम द्वितीय भागक अन्तमे ॥१०॥ ङान्तक सङ्ग तदर्थक गान्तो ॥११॥ तीनू भाग आकृतिगण ॥१२॥ वाच्यार्थमात्रक निर्देश ॥१३॥

स्वरान्त (जकर अन्त स्वर हो से) धातु प्रथम भागक ओ द्वितीय भागक अन्तमे अछि, तृतीय भागमे नहि अछि ॥१०॥

ङान्त धातुक सङ्ग समानार्थक गान्तो धातु पढ़ल गेल अछि ॥११॥

तीनू भाग आकृतिगण थीक, तँ जाहि धातुक उपादान नहि हो ओ निश्चित हो जे शुद्ध मिथिलाभाषा थीक ताहू सभक ग्रहण करब। यथा प्रथम भागमे *उचँग* इत्यादि। द्वितीय

भागमे *बँच* इत्यादि, तृतीय भागमे *तिरमिर* आदि। *भेजब, चुनब*, इत्यादि शुद्ध भाषा नहि थीक किन्तु प्रकृतिभाग हिन्दी, प्रत्ययभाग मैथिली, तेँ *भेज, चुन, खोज* इत्यादि धातुक ग्रहण नहि करी ॥१२॥

धातुपाठमे जे अर्थ कहल अछि से वाच्यमात्र, लक्ष्य अर्थ नहि। यथा *आखर उड़ल अछि, केश उड़ि गेल*, एहिठाम उड़ धातुक विलय तथा उपड़ब अर्थ लक्ष्य थीक अतः ओकर उपादान नहि कएल गेल अछि ॥१३॥

धातुपाठ-क्रमनिर्देश समाप्त

मिथिलाभाषाविद्योतन

अथ धातुपाठः

प्रथम भाग

(१) छक — अविरोधपूर्वक अन्यक्रियासँ दबब अर्थमे।

(१) छक धातु अविरोधपूर्वक कएल आनक क्रियासँ दबब, अर्थात् पराजित होएब अर्थमे बाजल जाइत अछि। जकर क्रियासँ पराजय से *छक* धातुक योगमे अपादान; ओकरासँ पञ्चमी। उदाहरण–रूपलाल फुल तोड़बामे सोनेलालसँ *छकलाह*-जीतल गेलाह। रूपलाल प्रतिदिन अन्हरोखहिँ फुल तोड़ि लए जाइत छलाह, आइ पहल राति बाँकी छल तहिखन सोनेलाल सभ फुल तोड़ि लेलकैन्हि, अपना समयपर फुलबाड़ीसँ आबि रूपलाल बजलाह जे सोनेलाल हमरा *छकओलक। छक* धातुसँ *अब्* प्रत्यय कएलासँ *छकब्* धातु सकर्मक भेल, ओकर रूप *छकबैत अछि, छकओलक, छकाओत* इत्यादि अब्- प्रत्ययान्त *छकब* देखि अनुसन्धान कए लेब। ओहि अब्प्रत्ययान्त छकब् धातुसँ पुनि प्रेरणामे अब्प्रत्यय करी तँ *छकबब्* धातु होएत, ओकरो रूप *छकबबैत अछि, छकबओलक, छकबाओत* इत्यादि पूर्ववते। उदाहरण–मालिक सोनेलालसँ रूपलालकेँ *छकबओलैन्हि*। एवम् *छकनिहार, छकओनिहार, छकबओनिहार; छकने, छकओने छकबओने, छकल* छथि, *छकाओल* छथि, *छकबाओल* छथि, इत्यादि कृदन्तरूप सभक अनुसन्धान करब। एही रीति आनहु धातुसभमे अनुसन्धान कए लेब। विरोधपूर्वक अन्यक्रियासँ पराजयमे *छक* धातुक प्रयोग नहि, किन्तु *दब, हार* इत्यादिक, यथा कुस्तीमे जयलालसँ भवदेव *दबलाह* वा *हारलैन्हि*।एही हेतु 'अविरोधपूर्वक' कहल अछि। ''अर्थमे'' एकर सम्बन्ध धातुपाठक अन्त तक आनब।

(२) ठक ★ — परतारब, वञ्चना।

(३) डक — अपन उत्कट गन्धक प्रसारण।

(४) ढक ★ — मिथ्या अपन अतिप्रशंसा करब।

(५) बक — अश्रव्य बहुत बाजब।

(६) मक — हर्षसँ मालक धावनक्रीड़ा।

(७) सक — क्षम होएब।

(८) छिक — छिक्का, अकृत्रिम नासिकाशब्द।

(९) ठिक ★ — जोड़ब, संकलन ।

(१०) डिक — अधिकक अँटकब।

(११) ढुक — हठात् प्रवेश।

(१२) फुक ★ — फूत्करण, मुखोत्पादित वायुसँ संयोजन।

(१३) बुक ★ — मेही घूर्ण करब।

(२) *ठक* धातु परतारब अर्थमे बाजल जाइत अछि जे संस्कृतमे वञ्चना कहबैत अछि। ठक बुड़िबककेँ *ठकैत अछि*–ओकर वस्तु लए लेबाक हेतु भ्रम उत्पन्न करबैत अछि। (३) हीँगु *डकैत अछि*–अपन तीव्र गन्धक प्रसार करैत अछि। (४) जयलाल *ढकैत छथि*–अपन मिथ्या अति प्रशंसा बजैत छथि। (५) जयलाल *बकैत छथि*–नहि सुनबाक योग्य कथा बहुत बजैत छथि। (६) बाछा मकैत अछि, लीलासँ एमहर ओमहर दौड़ि रहल अछि। (७) भोलबा भारमे *सकैत अछि*–शक्त –क्षम होइत अछि। (८) यात्राकाल केओ *छीकए* नहि, छिक्का नहि करए–अर्थात् अकृत्रिम नासिका शब्द नहि करए। (९) खर्च *ठीकल*–जोड़ल। (१०) ई जगह गहीँड़ अछि तँ एहिठाम पानि *डिकल अछि*–अधिक अँटकल अछि। (११) सावधान रहू जे केओ मन्दिर नहि *ढूकए*– बलात् पैसए नहि। ठोकलासँ काठमे काँटी *ढुकैत अछि।* (१२) आगिकेँ *फूकू*–मुखसँ उत्पादित वायुसँ संयुक्त करू तखन पजरत, प्रज्वलित होएत। (१३) मरीच *बूकि*–मेहीँ चूर्ण कए तीमनमे दिऔक। हरदिक *बुकनी* दालिमे दिऔक।

(१४) भुक — कुकुर-गिदड़क बाजब।

(१५) रुक — निवृत्ति।

(१६) छेक ★ — अवरोधन, स्वतन्त्र गमन प्रतिबन्धक रोक।

(१७) छेँक ★ — ,, ,, ,,

(१८) टेक ★ — खसबासँ तात्कालिक रोकब।

(१९) ठेक संयुक्त होएब।

(२०) फेक ★ प्रक्षेप।

(२१) फेँक ★ ,,

(२२) रेक मनुष्यक लीलाधावन।

(२३) हेक गदहाक बाजब।

(२४) हेँक ,, ,, ,,

(२५) घोक ★ अतिसञ्चालनसँ मलिन करब।

(२६) घोँक ★ ,, ,, ,,

(१४) कुकुर रातिकेँ चोरकेँ देखि *भुकैत अछि*–शब्द करैत अछि। गीदड़ रातिकेँ पहर २ पर *भुकैत अछि।* (१५) लिखबाक काल स्मिरणप्रयुक्त कलम *रुकल*–लेखव्यापारसँ निवृत्त भेल। (१६-१७) खेतक पानि बहैत अछि, ओकरा छेकू वा छेँकू गए, जे बहए नहि। गाए दुहबाक काल बाछाकेँ *छेकैत अछि*– बन्हैत अछि जाहिसँ गाएक लग नहि आबए। (१८) टाट *टेकि दिओक*–कोनहुना खुट्टामे बान्हि दिऔक जे खसए नहि, पश्चात् यथोचित बान्ह दैबैक। (१९) छोट चौकठि माथमे *ठेकैत अछि*–लगैत अछि। अन्हारमे चलबाक काल पाएरमे पजेबा *ठेकल*–संयुक्त भेल। (२०-२१) कस्तर बढ़ारिकेँ *फेकल* वा *फेँकल*–प्रक्षिप्त कएल। (२२) नेनासभ *रेकैत अछि*–खेलाएबमे एमहर-ओमहर दौड़ैत अछि। (२३-२४) गदहा *हेकैत अछि* वा *हेँकैत अछि*–शब्द करैत अछि। (२५-२६) नेनासभ पोखरिक पानि *घोकैत अछि*–अतिसञ्चालनसँ मलिन करैत अछि। भदबारिमे नदीसभक पानि *घोँकल रहैत अछि*–वेगेँ अतिसंचालनसँ माटि उखड़बाक कारणेँ माटिसँ मिलल रहैत अछि।

(२७) छोँक ★ ऊपरसँ फोड़न मिलाएब।

(२८) झोँक ★ अतिप्रयोग।

(२९) झोक ★ ,, ,,

(३०) टोक ★ १. [illegible]म्बोधनपूर्वक प्रश्न। २. पक्वतादिज्ञानार्थ आघात।

(३१) ठोक ★ ऊपरसँ आघात।

(३२) भोक वेधन।

(३३) भोँक ★ वेधन

(३४) रोक ★ अवरोधन।

(३५) लोक ★ आकाशसँ खसैतकेँ उपरहि पकड़ि लेब।

(३६) होँक ★ उद्वीजन, व्यजनादि द्वारा वायु लगाएब।

(३७) चौँक भयसँ डोलि जाएब।

(३८) छौँक ★ ऊपरसँ फोड़न मिलाएब।

(३९) कचक शिराक वेदना।

(४०) पचक अवयव नीचता प्राप्ति।

(४१) लचक मध्यमे वा अन्त भागमे डोलब।

(२७) दालिक झोर *छौँकल*–ऊपरसँ घृतादिपक्व जीर, हीँगु प्रभृति फोड़नसँ युक्त कएल। (२८-२९) हमरा *टोकू* जनु–कतए जाइत छी इत्यादि जनु पूछू। (३०) कटहर *टोकैत छी*–आहत करैत छी जे पाकल अछि की नहि। (३१) खुट्टा *ठोकैत अछि।* चानी *ठोकने*–ऊपरसँ आघातयुक्त कएने पसरैत अछि। (३२-३३) चोरकेँ भालासँ *भोकल* वा *भोँकल*–विद्ध कएल। सुइआ हाथमे *भोँकल* गेल। (३४) पञ्च भगड़ा *रोकलैन्हि*–निरुद्ध कएलैन्हि, होअए नहि देलैन्हि। ढाठमे मालसब *रोकल* अछि–अवरुद्ध अछि, तेँ बहराए नहि सकैत अछि। (३५) हम गेन फेँकैत छी, अहाँ *लोकू*–उपरहि पकड़ू। (३६) भगवानकेँ चामरसँ होँकी–बसात लगाबी। (३७) नेना बालग्रहमे *चौँकैत अछि*–काँपि उठैत अछि। (३८) तीमन *छौँकू*–फोड़नसँ युक्त करू। (३९) शिरा *कचकैत अछि*–दुखाइत अछि। पीठ कचकल–शिरामे दुखाएल। (४०) हाथसँ पाथरपर खसने लोटा *पचकत*–यत्किञ्चिद्भागमे नम्रता पाओत। (४१) चौपालाक बाँस *लचकैत अछि*–डोलैत अछि। भार *लचकैत*–डौलैत जाइत अछि।

(४२) हिचक अप्रवृत्ति।

(४३) उझक ऊपरसँ झुकब।

(४४) अँटक स्थिर होएब।

(४५) खटक अनिष्टसंभावनाविषयीभवन।

(४६) घटक घटओदार लेब।

(४७) झटक १. सवात वर्षा। २. फटकबामे हाथसँ सूपक तरमे चोट देब।

(४८) पटक बजारब।

(४९) फटक ★ सूप आदिसँ साफ करब।

(५०) भटक विमुख होएब।

(५१) सटक संकुचित होएब।

(५२) छिटक फूटिकेँ जाएब।

(४२) मतिवीर पाएरेँ जएबामे *हिचकैत* छथि-प्रवृत्त नहि होइत छथि। (४३) भातक बरतन *उझकि गेल*—उपर भागसँ झुकि गेल, तेँ भात हेराए गेल। (४४) गहीँइमे पानि *अँटकल अछि*—जमा अछि। यात्रीसभ एहिठाम रातिकेँ *अँटकैत अछि*—चलबसँ निवृत्त भए रहैत अछि। (४५) हमरा मनमे राति खटकल—बुझना गेल जे चोरक आगमन भेल अछि। (४६) अधिक ताओ देबैक तेँ कोहा *चटकत*—चटओदार लेत। (४७) मेघ *झटकैत अछि*—बसातक सङ्ग बरिसैत अछि। (४८) बाह, तोँ पहलमानकेँ *पटकलेँ*—बजारलेँ, जोरसँ माटिपर खसओलेँ। (४९) चाउर फटकैत *अछि*—सूपसँ साफ करैत अछि। (५०) ओ जएबामे भटकलाह—विमुख भेलाह। हमर मन *भटकल*—अप्रवृत्त भेल। (५१) काछुक मुह-पाएर *सटकल रहैत अंछि*—संकुचित रहैत छैक। ओ नेना डरेँ *सटकल*—संकुचित भेल। (५२) धोती खिचबाक काल पानि *छिटकैत अछि*। बिजली *छिटकैत अछि*। लोकसभ छिटकल —फूट२ भए चल गेल।

(५३) घुटक परबाक शब्द।

(५४) भुटक रोमाञ्चयुक्त होएब।

(५५) सुटक घोसिआएकेँ नुकाएब।

(५६) कड़क क्रोधसँ उत्कटक्रियेच्छा।

(५७) खड़क किञ्चत् गड़कब।

(५८) गड़क गोल वस्तुक घुमैत जाएब।

(५९) घड़क किञ्चित् हटब।

(६०) फड़क अङ्गस्फुरण।

(६१) भड़क भयसँ मालक पड़ाएब।

(६२) मड़क असंपत्ति।

(६३) खदक ताओसँ खलबलाएब।

(६४) धधक प्रज्वलन।

(६५) उधक किञ्चत् ऊर्ध्वगति।

(६६) लुधक एकमे बहुतक लागब।

(६७) चनक आगिमे फाटब।

(५३) परबा *घुटकैत अछि*— बजैत अछि। (५४) देह *भुटकैत अछि*—रोमाञ्चसँ युक्त होइत अछि। (५५) गिदड़ दिनकेँ सोन्हिमे *सुटकल* रहैत अछि—घोँसिआए प्रच्छन्न रहैत अछि। (५६) डङ्का बजलासँ वीरक मन *कड़कैत छैक*—उत्तेजित होइत छैक। (५७) ई सील एक गोटासँ नहि *खड़कल*—कनिओ नहि घुसकत। (५८) पहिआबाला सन्दुक *गड़कत*—गोल गड़कैत आगाँ जाएत। गेन *गड़कैत* अछि—घूमैत जाइत अछि। (५९) सन्दुक अपना जगहसँ *घड़कि गेल* अछि—किञ्चित् घुसुकि गेल अछि। (६०) वामा आँखिक फड़कब—संचलन अधलाह थीक। (६१) घोड़ा देखि हाथी *भड़कैत अछि*। ऊँट आएल तेँ माल सभ *भड़कल*—भयसँ पड़ाएल। (६२) अन्तमे वर्षाक अभावसँ धान मड़कल—संपन्न नहि भेल। (६३) अदहन *खदकैत अछि*—खलबल करैत अछि, चाउर लगाउ। (६४) *आगि धधकल*—पजरल ज्वालासँ युक्त भेल। (६५) दालिक कोहाक ढकना *उधकैत अछि*—दालिक उधिअएबाक कारण कनिएँ २ ऊपर उठैत अछि। (६६) चीनीमे चुट्टी *लुधकल अछि*—बहुत चुट्टी लागल अछि। (६७) ई घैल *चनकल अछि*—आबाक ताओसँ फुटल अछि। आँच कम दिऔक जे कोहा *चनकए* नहि।

(६८) छनक ★ सूपसँ विभक्त करब।

(६९) झनक रोगेँ पाएर घँसैत चलब।

(७०) टनक माथ कान आँखिक वेदना।

(७१) ठनक गरजब।

(७२) फनक मनसुबा करब।

(७३) भनक १. मनक विकृत होएब। २. कानाकानी खुलब।

(७४) तनक बतहपनी।

(७५) भिनक खाद्यपर माछीक सञ्चार, माछीसँ युक्त होएब।

(७६) ठुनक सशब्द क्रन्दनविशेष।

(७७) छपक नुकाएब।

(७८) टपक पाकिकेँ गाछसँ खसब।

(७९) लपक ★ शीघ्रतया लए लेब।

(६८) *छनकलासँ* चाउरक खुद्दी बहराइत अछि। सूपसँ एकभगाह लोकि विभाग करब *छनकब* थीक। (६९) ई बड़द *झनकैत अछि*–पाएर भूमिमे घसैत चलैत अछि। एकरा *झनक* रोग छैक। (७०) माथ टनकैत अछि–दुखाइत अछि। एवं कान वा आँखि टनकैत अछि। *टनक* रोग थीक। (७१) मेघ *ठनकैत अछि*–गर्ज्जैत अछि। (७२) अहाँ की फनकैत *छी*–मनसुबा (अपन शक्तिक प्रकाश) की करैत छी, अहाँक बुतेँ किछु नहि हेएत। लफन्दरक प्रति निन्दोक्ति। (७३) भातपर बड़ माछी तेँ हमर मन *भनकैत अछि*–अश्रद्धायुक्त होइत अछि। (७४) ई *सनकल छथि*–उन्मादयुक्त छथि। (७५) भात *भिनकैत अछि*–माछीसँ संबद्ध होइत अछि।(७६) नेना *ठुनकैत अछि*–हुँ हुँ शब्द करैत कनैत अछि। (७७) ओ डरेँ कतहु छपकल अछि–प्रच्छन्न अछि। (७८) आब आम *टपकैत अछि*–पाकिकेँ सशब्द खसैत अछि। (७९) चिलहोड़ि हाथसँ सोहारी *लपकलक*–झट दए लए लेलक।

(८०) डबक जलतैलादिक अधिक अँटकब।

(८१) ढबक पत्रपर मसीक अधिक स्थिति।

(८२) दबक नुकाएब, प्रच्छन्न होएब।

(८३) हबक ★ दाँतसँ धरब।

(८४) टभक पाकिकेँ सशब्द खसब।

(८५) भभक दुर्गन्ध प्रकाश करब।

(८६) गमक सुगन्ध प्रकाश करब।

(८७) चमक १. चकचकाएब। २. अस्थैर्य।

(८८) जमक पूर्ण होएब।

(८९) झमक झमझम करब।

(९०) ठमक रुकब।

(९१) दमक पृथ्वीक किञ्चित् डोलब।

(८०) तेल जे हेराएल से गहींड़मे *डबकल अछि*–अँटकल अछि। (८१) कलमसँ अधिक मसि खसि पड़ल तेँ कागज पर मसि *ढबकल*–अधिक अँटकल। (८२) नेना डरेँ कतहु *दबकल अछि*–प्रच्छन्न भेल अछि। (८३) कुकुर जाँघमे हमरा *हबकलक*–दाँतेँ कटलक। (८४) पाकल आम टभकैत अछि–गाछसँ सशब्द खसैत अछि। (८५) सड़ल

मुर्दा *भभकैत अछि*–दुर्गन्धकेँ प्रकाशित करैत अछि। (८६) बेली-चमेली इत्यादि फूल *गमकैत अछि*–आमोद करैत अछि, उत्तम गन्ध प्रकाशित करैत अछि।(८७) हीरा *चमकैत अछि*–चकंचम कर्‌ैत अछि। (८८) भोजमे मधुर जमकल–परिपूर्ण भेल। (८९) ई स्त्री गहना पहिरि *झमकैत*–झमझम शब्द करैत, चलैत अछि। (९०) आब वर्षा *ठमकल*–रुकल। (९१) रेलगाड़ी चलबाक काल लगक धरती *दमकए लगैत अछि*–डोलए लगैत अछि।

(९२) धमक धमधम करब।

(९३) बमक गूढ़ वस्तुक हठात् प्रकाश।

(९४) रमक अतिमन्द बहब।

(९५) उमक औद्धत्य-चेष्टा।

(९६) झरक आगिमे किञ्चित् जरब।

(९७) ढरक टघड़ब।

(९८) दरक फाटब।

(९९) बरक ताओसँ खलबल करब।

(१००) लरक १. ऊँचसँ नीचाँ नमरब। २. तिरने पैघ होएब।

(१०१) सरक पीबाक काल कुमार्गमे जलक प्रवेश।

(९२) रेलगाड़ीक *धमकब*–धमधम शब्द बहुत दूरसँ सुनल जाइत अछि। लोकक चललासँ कोठाक छत *धमकैत अछि*–धमधम शब्द करैत अछि। (९३) कन्तोड़मे हीगुँ राखल छल, कन्तोड़ खोलला पर ओकर गन्ध बमकल–हठात् प्रकाश भेल। जयलाल बमकलाह–असल गूढ़ बात हठात् बजलाह। (९४) बसात *रमकैत अछि*–अतिमन्द बहैत अछि। (९५) नेना सभ *उमकैत अछि*–औद्धत्य-पूर्वक दौड़धूप करैत अछि। ओकरा एखन समर्थाइक *उमकी* छैक–औद्धत्यचेष्टा छैक। (९६) आगिमे *झरकि*–किञ्चित् जरिकेँ मुइल। (९७) हेराएल तेल *ढरकि*–टघड़ि नीचमे जमा भेल। (९८) कोहा दरकल *अछि*–चिरक्कासँ युक्त अछि। (९९) पानि *बरकैत अछि*–ताओसँ खलबलाइत अछि। (१००) धोती *लरकल अछि*–नमरल अछि, सम्भारि लिअ। रबड़ *लरकैत अछि*–तिरने नमरैत अछि–पैघ होइत अछि। (१०१) पानि *सरकल*–कण्ठक विवरसँ आन दिश चल गेल तेँ उकासी उठल।

(१०२) हरक छिटकल पशुसंघक एकदिश जाएब।

(१०३) सुरक ★ वायुद्वारा ग्रहण।

(१०४) झलक चकचकाएब।

(१०५) दलक पृथिवीक कनिएँ डोलब।
(१०६) फलक विकसित होएब।
(१०७) ललक क्रोधपूर्वक जोरसँ बाजब।
(१०८) हुलक १. कुकुरक घरमे प्रवेश। २. ककरहुपर लागब।
(१०९) घसक घल जाएब (निन्दा)।
(११०) चसक अकर्तव्यमे पुनःपुनः प्रवृत्ति।
(१११) मसक तानी-भरनीक विचलनयोग।
(११२) उसक टेमीआदिक आँगा घुसकब।

(१०२) हम मालसभकेँ *हरकबैत छी*। मालसभ *हरकैत अछि*–एक दिश जाइत अछि। (१०३) तेल *सुरकू*–नाक देने श्वाससँ उपर लए जाउ, तखन कफ छुटत। नोसि *सुरकैत छथि*। अतितप्त चाह *सुरकैत छथि*। (१०४) नव काशीबाल बरतन *झलकैत अछि*–चकचकाइत अछि। (१०५) भीत खसलासँ धरती *दलकैत अछि*–कम्पित होइत अछि। (१०६) फूल फलकल–विकसित भेल। तूर धुनने *फलकैतअछि*। (१०७) भीमसेन *ललकैत छथि*–क्रोधपूर्वक जोरसँ बजैतछथि। गुरुजनपर नहि *ललकी*–जोरसँ नहि बाजी। (१०८) सावधान रहू जे कुकुर हुलकए नहि–हठात् घर ने पैसए। कुकुरकेँ हम *हुलकबैत छी*–ओहे ओहे शब्दसँ प्रेरित करैतछी, तखन *हुलकत*–शिकारपर लागत। (१०९) अहाँ एहि ठामसँ *घसकू*–चल जाउ। ई निन्दाशब्द थीक। (११०) नेनाकेँ सम्हारू नहि तँ *चसकि जाएत*–अकर्तव्यमे लागि जाएत। (१११) पुरान भेल तँ धोती *मसकल*–सूतक विचलन पओलक। (११२) दीपक टेमी *उसकत*–किछु आगाँ घुसकत, तखन प्रकाश होएत, तँ ओकरा *उसकाउ*।

(११३) घुसक किञ्चित् हटब।
(११४) ठहक रक्षकक स्वसूचक शब्द।
(११५) बहक छिद्रमे पैसब।
(११६) महक गन्धक प्रकाश करब।
(११७) लहक ज्वालासँ युक्त होएब।
(११८) सिहक १. अतिमन्द बहब। २. किञ्चित् जाड्य-प्राप्ति। ३. फाटब।

(११९) कुहक कोकिलक शब्द।
(१२०) परिक प्रवृत्ति-साफल्यसँ तादृश प्रवृत्तिमे फलक विश्वास।

(११३) ई सील बड़ भारी अछि, एक गोटाक बुतेँ नहि *घुसकत*–कनिओ नहि ससरत। (११४) रातिकेँ चोरसँ रक्षार्थ कोतबाल *ठहकैत अछि*–शब्दविशेषसँ अपन सूचना करैत अछि। (११५) अहाँ बुतेँ सुइआमे ताग नहि *बहकत*–नहि पैसत। हाथ *बहकाए*–पैसाए कोठीसँ अन्न बहार करू। (११६) मटिआ तेल *महकैत अछि*–अपन गन्ध प्रकाशित करैत अछि। (११७) आब जारन *लहकल*–ज्वालासँ युक्त भेल। आगि *लहकैत अछि*–ज्वाला-युक्त होइछ। भात *लहकल*–ज्वालासँ युक्त भेल अर्थात् जरि गेल। (११८) एखन बसात *सिहकैत अछि*–मन्दमन्द बहैत अछि। ज्वरमे देह *सिहकैत अछि*–किंचित् जाड़सँ युक्त होइत अछि। कोहा सिहकल–किञ्चित् चिरक्कासँ युक्त भेल। (११९) कोकिल वसन्तमे *कुहकैत अछि*–कुहूकुहू शब्द करैत अछि। वनमे पक्षीसभ *कुहकैत* अछि–शब्द करैत अछि। (१२०) ई नेना मधुरमे अहाँक ओहिठाम परिकल अछि–गेने मधुर होएत से मानने अछि कारण जे अहाँ अएबाक उत्तर मधुर सभ दिन दैत छिऐक।

(१२१) बिजुक ठोरमुहक चेष्टा, शोकादि सूचक व्यापार।
(१२२) सुरुक★ वायु द्वारा ग्रहण।
(१२३) कुहुक कोकिलादिक कुहूकुहू शब्द करब।

इति प्रथमभागे कान्ताः

(१२४) झख दीनता बाजब।
(१२५) झँख ,, ,,
(१२६) चिख ★ जाचक हेतु खाएब।
(१२७) लिख ★ अक्षरादिविन्यास।
(१२८) सिख ★ शिक्षा।
(१२९) देख ★ दर्शन।

(१२१) एहि नेनाकेँ अनभिप्रेत किछु कहिऔक तँ एकर ठोर *बिजुकैत छैक*–दुःखक सूचक चेष्टा-विशेषसँ युक्त होइत छैक। अहाँक खिसिअएने नेनाक मुह *बिजुकैत छैक*–दुःखव्यञ्जक चेष्टासँ युक्त होइत छैक। अहाँ कनिए मधुर देलैक तँ ओ नेना मुह *बिजुकओलक*–असन्तोष-सूचक मुह बनओलक। (१२२) नाक देने तेल *सुरुकू*–श्वाससँ

ग्रहण करू । नोसि सुरुकू, तखन कफ खसत । (१२३) वसन्तमे कोकिल *कुहुकैत अछि*–कुहूकुहू शब्द करैत अछि ।

प्रथम भागमे कान्त धातु समाप्त भेल

(४-२५) जयलाल *झखैत छथि* वा *झँखैत छथि*–अपन दीनताक कथा बजैत छथि। (१२६) तीमन *चीखू*–जाचक हेतु कनिएँ खाउ जे केहन भेल। (१२७) महादेवक मूर्त्ति *लिखलैन्हि*, आओर चित्र *लिखताह* । भागवत *लिखैत छथि* । लिख धातुक अर्थ अभिव्यक्तिजनक मसीसंयोजन थीक, जकर अभिव्यक्ति से कर्म । वर्णमाला *लिखैत छथि*–वर्णमालाक अभिव्यक्तिजनक मसीसंयोग करैतछथि। (१२८) नेना लिखब *सिखैत अछि*–लिखबाक अवगति उत्पन्न करैत अछि। (१२९) देवदत्त पुस्तक *देखैत छथि*। कार्य *देखलन्हि* ।

(१३०) खोख	**उकासी करब ।**
(१३१) खोँख	,, ,,
(१३२) घोख ★	**शब्दक स्मरणार्थक अभ्यास ।**
(१३३) घोँख	,, ,, ,,
(१३४) जोख ★	**तौलब ।**
(१३५) सोख ★	**पघिलल (द्रव) वस्तुक अभ्यन्तरीकरण ।**
(१३६) बिसख	**पन्हाएबसँ निवृत्ति ।**

इति प्रथमभागे खान्ताः

(१३७) खग	**अपेक्षित वस्तुक असत्ता (अभाव) ।**
(१३८) टग	**झुकब ।**
(१३९) रँग★	**रञ्जन ।**
(१४०) रङ★	,,

(१३०-३१) कफ भेलासँ *खोखैत छथि* वा *खोँखैत छथि*। (१३२-३३) जय–लाल श्लोक *घोखैत छथि* वा *घोँखैत* छथि–अभ्यस्त करैत छथि, स्मरण रहबाक हेतु वारंवार पढ़ैत छथि । (१३४) चाउर तराजूसँ *जोखैत छथि*–तौलैत छथि । (१३५) नव माटिक बासन तेल *सोखैत अछि*–अभ्यन्तरमे लए लैत अछि। चाम तेल *सोखैत अछि*। भिजाए गारल नुआ पानि *सोखैत अछि*। (१३६) हमर गाए *बिसखल*–पन्हाएब बन्द कएलक। ककरहु मतेँ बिसुख धातु–गाए *बिसुखल*।

प्रथम भागमे खान्त धातु समाप्त भेल

(१३७) हमारा किछु रुपैआ *खगैत अछि*–अपेक्षित अछि, किन्तु हाथमे नहि अछि। घर बन्हैत छी ताहिमे खाम्हक *खगता* अछि–अपेक्षित खाम्हक अभाव अछि । (१३८) जयलाल भूकम्पमे *टगलाह*–झुकि गेलाह । (१३९-१४०) हम नूआ *रँगैत छी* वा रङैत *छी*–रङ्गसँ युक्त करैत छी ।

(१४१) त्याग★	**छोड़ब।**
(१४२) उग	**उदय । १. प्रथमदर्शनयोग्य स्थानपर सूर्यादिक आगमन। २. भीतरसँ जलक उपर आगमन ।**
(१४३) रेँग	**एक पाएरेँ कूदि कूदि चलब।**
(१४४) रेङ	,, ,,
(१४५) टोँग ★	**शाखाछेदन।**
(१४६) टोङ ★	,,
(१४७) ओठँग ★	**अवलम्बनार्थ पीठ लगाएब।**
(१४८) ओठङ	,, ,,
(१४९) सुनग	**पजरब।**
(१५०) तरँग	**हालरहित होएब।**
(१५१) तरङ	,,
(१५२) अलग	**१. भीतर नहि रहब। २. अन्नविकल ठाढ़ सीससँ युक्त होएब। ३. उपर उठब ।**

(१४१) हम मधुर खाएब *त्यागल*–छोड़ल। (१४२) सूर्य उगलाह–उदित भेलाह । ओ जलमे डूबि बड़ी काल पर उगलाह–जलक उपर अएलाह। (१४३-४४) नेनासभ खेड़िमे रेँगैत अछि वा रेङैतअछि–एक पाएर उठाए दोसरा पाएरेँ कूदि कूदि चलैत अछि। (१४५-१४६) सुखाएल ठारिकेँ टोँगैत अछि वा टोङैत अछि–कटैत अछि। (१४७-१४८) अहाँ मसलँदमे ओठँगिकेँ वा ओठङिकेँ बैसू–पीठ लगाए बैसू। (१४९) आगि *सुनगल*–पजरल। (१५०–५१) खेत *तरँगल* वा *तरङ्ल*–हालहीन भेल, आब जोतल नहि होएत । (१५२) पानिमे कुम्भी *अलगल रहैत अछि*–भीतर नहि रहैत अछि अर्थात् पानिक उपर रहैत अछि। फुलक समयमे रातिकेँ पानि होएबाक कारण धान *अलगल*–अन्नरहित ठाढ़ सीससँ युक्त रहल । बड़ेरीसँ चार *अलगल अछि*–उपर उठल अछि, ओकरा सटाउ ।

(१५३) पनुग — पल्लवाङ्कुरसँ युक्त होएब।

इति प्रथमभागे गान्ता ङान्ताश्च

(१५४) उघ★ — १. उठाएकें लए जायब। २. लए आनब।

(१५५) सुँघ★ — आघ्राण। नासिका समीप नयनपूर्वक गन्धग्रहण,

(१५६) अर्घ — ठोँठक नीचाँ अटकब।

(१५७) अरघ — ,,

इति प्रथमभागे घान्ताः

(१५८) कच★ — लगलग छओसँ युक्त करब।

(१५९) खच — जटित होएब।

(१६०) जच — निश्चित होएब।

प्रथम भागमे गान्त ओ ङान्त धातु समाप्त भेल

(१५३) फुलक गाछ पनुगल–अङ्कुरसँ युक्त भेल। (१५४) धानक बोझ उघैत अछि–उठाए कँ लए जाइत अछि वा अनैत अछि। गदहा ऊस उघैत अछि। (१५५) फुल सुँघैत छथि–नाकक लग आनि गन्धग्रहण करैत छथि। (१५६-५७) ई औषध नहि अर्घलैन्हि वा नहि अरघलैन्हि–ठोँठक नीचा नहि अँटकलैन्हि अर्थात् वमन भए गेलैन्हि।

प्रथम भागमे घान्त धातु समाप्त भेल

(१५८) खेत कोदारिसँ कचि–लग लग छओसँ युक्त कए, धान रोपल। चोरकँ गणाससँ कचल–लगलग अनेक छओसँ युक्त कएल। (१५९) सोनाक औँठीमे हीरा खचल अछि–जड़ल अछि। (१६०) ई बात हमरा मनमे जचल अछि–जटित अछि अर्थात् निश्चित अछि।

(१६१) पच ★ — १. अन्तर्गतक दोषाजनक परिणाम। २. तैलादिक भीतर प्रवेश।

(१६२) बच — अनिष्टसँ निवृत्ति।

(१६३) बँच — ,, ,,

(१६४) मच — प्रवृत्ति।

(१६५) रच ★ — बनाएब।

(१६६) खिच ★ — १. वस्त्रप्रक्षालन, सार्द्र वस्त्रक वारंवार आघात। २. असकृत् संपर्क।

(१६७) खिँच ★ — आकर्षण, झीकब।

(१६८) घिच ★ — ,,

(१६९) घिँच ★ — ,,

(१७०) छिच ★ — सेचन।

(१७१) पिच ★ — दाबब (जाहिसँ अवयवमे अन्यथाभाव हो)

(१६१) हमरा भातक पथ्य पचल–दोषाजनक रूपेँ परिणत भेल। आब ज्वर पचल–दोषाजनक परिणत भेल। अधिक मर्दनसँ माथमे तेल पचत–भीतर पैसत। (१६२-६३) साप चारसँ देह पर खसलैन्ह परन्तु बचलाह वा बँचलाह–संर्पदंशनरूप अनिष्ट नहि पओलैन्हि। (१६४) धूम मचल–धूमधाम प्रवृत्त भेल। मच धातुक क्वचित् प्रयोग होइत अछि से लोक-व्यवहारसँ जानब। (१६५) फुलबाड़ी रचल जाइत अछि–बनाओल जाइत अछि। इहो धातु असार्वत्रिक। (१६६) धोती खिचैत छथि–जलसँ आघात-पूर्वक साफ करैत छथि। (१६७) हमरा उपरसँ हाथ पकड़ि खीँचू–खैँचि लिअ। (१६८-६९) डोल भरि घीचू वा घीँचू–आकर्षण करू। (१७०) एहिठाम बढ़ारिकेँ छीचि दिऔक–पानिक छिटकासँ युक्त करू जे गरदा नहि उड़ए। पानिक छिच्चा पड़ल। (१७१) जयदेव गाड़ीक तर पीचल गेलाह–दाबल गेलाह।

(१७२) सिच ★ — सेचन।

(१७३) कुच ★ — थकुचब।

(१७४) घुच — पाछाँ रहि जाएब।

(१७५) रुच — खायक नीक लागब।

(१७६) बेच ★ — विक्रय।

(१७७) मेच ★ — मोचरब।

(१७८) ऍंच ★ — टेढ़ होएब।

(१७९) खैँच ★ — आकर्षण।

(१८०) गैँच — टेढ़ होएब।

(१८१) घैँच ★ — आकर्षण।

(१८२) पैंच ★ सूपमे तण्डुलादि-मिश्रित धान्यादिकेँ नीचा आनब।

(१७२) एहि धातुक काव्यहिमे प्रयोग होइत अछि। (१७३) दाँतत़र जीह कुचल गेल–किञ्चित् पीचल गेल। (१७४) ओ घुचि रहलाह–पाछाँ रहि गेलाह। (१७५) हमरा ज्वरसँ अन्न नहि रुचैत अछि–नीक नहि लगैत अछि। (१७६) बनिआ वस्तुसभ बेचैत अछि–विक्रय करैत अछि। (१७७) हम घाड़ पकड़ि मेचि दैत छी–ऐँठि दैत छी तखन सिरसंकोच छूटि जाएत। (१७८) गैँची माछ ऐँचैत अछि–वक्र भए जाइत अछि। सनकेँ ऐँचि रस्सा बनबैत अछि। (१७९) इनारसँ पानि भरि डोल खैँचैतछी–उपरकेँ आकृष्ट करैत छी। जयदेवकेँ हाथ पकड़ि खैँचने आउ। (१८०) गैँची माछ जेँ गैँचैत–टेढ़ होइत रहैत, अछि तेँ गैँची कहबैत अछि। (१८१) गोहि पाएर धए घैँचिकेँ– आकृष्ट कए, लए जाइत अछि। (१८२) स्त्रीगण पैँचब–तण्डुलादि मिश्रित धान्यादिकेँ सूपसँ घुमाए उपर लाएब, जनैत अछि।

(१८३) कोँच ★ ठुसब।

(१८४) छेँच ★ गुद-शौचक्रिया।

(१८५) नोच ★ एकदेशक आकर्षण।

(१८६) सोच ★ १. विचार। २. शोक।

(१८७) दकच ★ यत्रकुत्र अनेकधा काटब।

(१८८) भकच ★ पत्रकेँ यत्रकुत्र चिचाँढ़िसँ युक्त करब।

(१८९) घोँकच संकुचित होएब।

(१९०) दङच ★ दकचब।

(१९१) अणाच ★ अणाचसँ गछारब, ठाठकेँ बरीमे बान्हब।

(१९२) पणाच ★ आद्योपान्त सविस्तर कहबे।

(१९३) थकुच ★ आघात।

(१८३) डाकू यात्रीकेँ पकड़ि मुहमे नूआ कोँचि दैत छैक जे बाजि नहि सकए। (१८४) सर्वप्रथम नेनाकेँ अपना हाथेँ, छेँचबाक–शौच-क्रिया करबाक शिक्षा देबाक चाही। (१८५) काँट नूआकेँ नोचलक–वक्रताक कारणेँ नूआमे लागि नूआकेँ खैँचलक, तेँ नूआ फाटल। (१८६) एहि विषयकेँ सोचू–बिचारू। सुरथ महाराज वन जाए शत्रुसँ आक्रान्त अपन राज्यक सोच–शोक करए लगलाह। (१८७) नेना कागतकेँ कैँचीसँ दकचि

देलक तेँ कागत दूरि गेल। (१८८) नेना कागत भकचि देलक–चिचाँढ़ि (वृथा रेखा) सँ संयुक्त कए देलक। (१८९) धोती कोँचिआएकेँ रखने घोँकचि जाएत तेँ चौपेतिकेँ राखू जे घेँकचए नहि–संकुचित नहि हो। (१९०) कागज दङचलक–दकचलक। (१९१) ठाठ अणाचैत अछि–अणाच (बन्ध-विशेष)सँ ठाठकेँ बरीमे बन्हैत अछि। (१९२) ओ पणाचि गेलाह–सविस्तर कहि गेलाह। (१९३) दन्तशून्य व्यक्ति थकुचल– चोटसँ आहत, पान खाइत छथि।

(१९४) सकुच सङ्कुचित होएब।

(१९५) पहुँच प्राप्त होएब।

इति प्रथमभागे चान्ताः

(१९६) छ सत्ता, रहब।

(१९७) कछ ★ अयथार्थावस्थाक स्थिति देखाएब।

(१९८) गछ ★ स्वीकार।

(१९९) काछ ★ हाथमे लगबाक योग्य वस्तुक उद्धार।

(२००) बिछ ★ पसरल लघु वस्तुक हाथसँ एकाएकी ग्रहण।

(२०१) पुछ ★ प्रश्न।

(२०२) पोछ ★ १. लिप्त वस्तुक अपाकरण। २. तद्द्वारा साफ करब।

(१९४) बूढ़क देह सकुचि जाइत अछि–घोँकचि जाइत अछि। (१९५) चीठी पहुँचल–प्राप्त भेल। ओ गाम पहुँचलाह–प्राप्त भेलाह।

प्रथम भागमे चान्त धातु समाप्त भेल

(१९६) छ धातुक केवल वर्तमान ओ भूतमे प्रयोग होइत अछि। संप्रति अधलाह समय अछि। पूर्व नीक छल। त्रेतामे राम छलाह। ई पुस्तक थीक। (१९७) जयलाल निन्द नहि छथि किन्तु निन्द कछने छथि–निद्रावस्था, आँखि मुनब आदि, कृत्रिम कएने छथि। (१९८) अहाँकेँ पुस्तक देब से ओ गछलैन्हि–स्वीकार कएलैन्हि। (१९९) बासनमे घृत जमल अछि, ओकरा हाथसँ काछू–उद्धृत करू। (२००) भालसरीक फूल गाछतर बहुत खसल अछि ओकरा बीछि लाउ–एकाएकी हाथसँ उठाए लाउ। (२०१) हमरा भवदेव पुछलैन्हि–प्रश्न कएलैन्हि जे अहाँ कतए रहैत छी। (२०२) नेनाकेँ देहमे गर्दा लागल छैक, पोछि दिऔक–संमार्जित कए दिऔक। शास्त्रक आज्ञा जे स्नान कए देह नहि पोछी–संमार्जित नहि करी।

(२०३) गौँछ ★ पृथक्-पृथक् बान्हलकेँ एकट्ठा कए बान्हब ।

(२०४) मुरछ ★ धार(अस्त्राग्रभाग)क कुण्ठित होएब ।

(२०५) लोहछ क्रोधादिवश उल्वण पित्तसँ युक्त होएब ।

(२०६) परिछ प्रमाणतः योग्य होएब ।

(२०७) निहुछ ★ देवताकेँ चढ़एबाक उद्देशेँ राखब ।

इति प्रथमभागे छान्ताः

(२०८) गज आनन्दसँ मनमे अभिमान मानब ।

(२०९) छज योग्य होएब (नीक लागब) ।

(२१०) भज खुदरासँ बदलल जाएब।

(२११) भँज ,,

(२०३) दुहू धानक बोझकेँ गौँछि– एकट्ठा बान्हि, लए जो । (२०४) बसिलाक धार कौँटीमे लागल तेँ मुरछल–कुण्ठित भेल, टुटि गेल वा लबि गेल। (२०५) हरबाह हर जोतिकेँ अएला पर रौदेँ लोहछल रहैत अछि–उल्वण-पित्तक रहैत अछि, तेँ ओकरा तामस अधिक होइत छैक । (२०६) हमरा ई अङ्गा नहि परिछैत अछि–देहप्रमाणानुरूप नहि होइत अछि, तेँ नहि पहिरैत छी । (२०७) ई छागर निहुछल अछि–देवताकेँ बलिप्रदानक उद्देशेँ राखल अछि ।

प्रथम भागमे छान्त धातु समाप्त भेल

(२०८) अहाँ गजैत छी–मनमे अभिमान करैत छी जे धनजनसँ संपन्न छी । हमरा कोन चिन्ता ? (२०९) हुनका अभिमान करब छजैत छैन्हि–योग्य होइत छैन्हि। जकरा पाग पहिरबाक अभ्यास नहि तकरा पाग नहि छजैत छैक–नीक नहि लगैत छैक। (२१०-११) रुपैआ भजल वा भँजल–खुदरासँ बदलल गेल ।

(२१२) सज ★ दुरुस्त करब ।

(२१३) खिज धान्यादि झरब ।

(२१४) गिज ★ पुनःपुनः स्पर्श ।

(२१५) छिज धान्यादिक पाकिकेँ झरब ।

(२१६) भिज सार्द्र होएब, जलादियुक्त होएब ।

(२१७) पुज ★ पूजन, देवताक आराधन ।

(२१८) भुज ★ पात्रमे राखि बिनु जलादिक पाक ।

(२१९) तेज ★ त्यागब ।

(२२०) गोज ★ डंटाकेँ जलक तरमे वारंवार भँसब ।

(२२१) गर्ज जोरसँ ध्वनि करब ।

(२२२) बर्ज ★ त्यागब ।

(२२३) उपज उत्पत्ति (निर्जीव धान्यादिक) ।

(२१२) ठँगा सजैत छी–छीलिकेँ दुरुस्त करैत छी । बरिआत सजल अछि–यथावत् सन्निवेशित अछि। (२१३) खेतमे धान खिजैत अछि–झरैत अछि, तेँ शीघ्र काटू। (२१४) नेना थाल गिजैत अछि– वारंवार छुबैत अछि। पानि गिजैत अछि। (२१५) धान खेतमे आब छिजत–पाकिकेँ झरत, तेँ शीघ्र काटू। (२१६) वर्षामे नूआ भिजल–तितल, सार्द्र भेल। (२१७) भगवान पूजल गेलाह–अर्चित भेलाह । (२१८) पनिपिआइक हेतु बदाम भुजल–भृष्ट भेल । (२१९) हम चिन्ता तेजल–छाड़ल । (२२०) इनारमे लग्गी लएकेँ गोजू–जलक तर थालमे भँसू, तखन खसल डोल ओहिमे अभरत । (२२१) मेघ गर्जैत अछि–ध्वनि करैत अछि। वनमे सिंह गर्जैत अछि–नाद करैत अछि। (२२२) हम कुपथ्य बर्जल–त्यागल (२२३) विना वर्षेँ धान नहि उपजत–उत्पन्न नहि होएत। हमरा उपजा कम भेल ।

(२२४) गरज सिंहादिक शब्द।

(२२५) बरज ★ त्याग।

(२२६) सिरज ★ सृष्टि।

(२२७) खराज ★ यन्त्र घुमाए छीलब।

(२२८) अँगेज ★ सह्य करब।

(२२९) अङेज ★ ,,

इति प्रथमभागे जान्ताः

(२३०) बुझ ★ जानब।

(२३१) रुझ रुष्ट होएब।

(२३२) लुझ काककर्तृक हठात् ग्रहण।

(२३३) सुझ १. दृष्टिगोचर होएब । २. जानब ।

(२३४) बिरुझ **विरुद्ध होएब**

इति प्रथमभागे ज्ञान्ताः

(२२४) मेघ वा सिंह गरजैत अछि – जोरसँ शब्द करैत अछि। (२२५) अहाँ कुसंयम नहि बरजैत छी – नहि छोड़ैत छी, तखन दुःख कोना छुटत ? (२२६) विधाता संसारकेँ सिरजैत छथि। हमरा जे विधाता सिरजलैन्हि – उत्पन्न कएलैन्हि से किंनिमित्त ? एकर प्रयोग प्रायः विधिकृत निर्माणहिमे होइत अछि। (२२७) ई पौआ कारीगरक खराजल अछि – खराज नामक यन्त्रद्वारा छीलि बनाओल अछि। (२२८-२९) हम आब एहि दुःखकेँ अँगेजल वा अङेजल – सह्य कएल।

प्रथम भागमे जान्त धातु समाप्त भेल

(२३०) अहाँक अभिप्राय हम बुझल – ज्ञात कएल। (२३१) देवदत्तकेँ भानसमे विलम्ब भेलैन्हि तँ रुझलाह – रुष्ट भेलाह। (२३२) कौआ भात लुझलक – लए लेलक। (२३३) गिद्धकेँ सए कोस सुझैत छैक – दृष्टि-गोचर होइत छैक। एहि धातुक ज्ञानसामान्यो अर्थ थीक, अहाकेँ व्योरा नहि सुझैत अछि–नहि जानि पड़ैत अछि जे आगाँ की भावी छैक। (२३४) जयलाल भवदेवसँ बिरुझल छथि – विरोध कएने छथि।

प्रथम भागमे झान्तधातु समाप्त भेल

(२३५) अँट	**मध्यमे समाविष्ट होएब।**
(२३६) कट	**१. कालादिक यापित (व्यतीत) होएब। २. छिन्न होएब।**
(२३७) खट	**कार्यमे अनवरत लागब।**
(२३८) घट	**कम होएब।**
(२३९) डट	**संनद्ध होएब।**
(२४०) पट	**१. मेल खाएब। २. व्याप्त होएब।**
(२४१) लट	**बल-मांस-हीन होएब।**
(२४२) सट	**संयुक्त होएब।**
(२४३) हट	**पृथक् होएब।**
(२४४) हँट ★	**दबाड़ब।**
(२४५) छिट ★	**विकिरण।**
(२४६) पिट ★	**ताड़न।**

(२४७) सिट ★ **विन्यस्त करब।**

(२३५) एहि लोटाक मुह सिकस्त छैक, तँ एहिमे हाथ नहि अँटत– नहि पैसत। एहि बोरामे दू मन धान नहि अँटत–समाविष्ट नहि होएत। (२३६) हमरा कोनहुना दिन कटैत अछि ओ कटल–बितल। धान कटल–छिन्न भेल। (२३७) हम खटैत छी–अनवरत कार्यमे प्रवृत्त रहैत छी। (२३८) एक मन धान छल, सुखएलासँ एक पसेरी घटल–कम भेल। (२३९) मारि करबालए जयलाल डटल छथि–संनद्ध छथि। (२४०) हमरा यदुवीरसँ नहि पटैत अछि–मिलान नहि होइत अछि अर्थात् झगड़ा भए जाइत अछि। (२४१) देवनाथ दुःखसँ लटि गेल छथि– बलमांसहीन भए गेल छथि। (२४२) अहाँ देहमे सटू जनु–संयुक्त जनु होउ। (२४३) एहि ठामसँ ताँ हट–फराक हो। हमरा घरसँ भवनाथक घर हटल छैन्हि–असंयुक्त छैन्हि। (२४४) अहाँ नेनाकेँ हँटू–दबाडू जे उपद्रव नहि करए। (२४५) चाउर छिटैत अछि–विकीर्ण करैत अछि। (२४६) स्त्रीगण शोकेँ माथ छाती पिटैत अछि–आहत करैत अछि। हम चोरकेँ पकड़ि पिटलहुँ–आहत कएलहुँ। (२४७) इसखी देहकेँ सिटने रहैत अछि–विन्यासयुक्त कएने रहैत अछि।

(२४८) कुट ★	**कुट्टन, ऊपरसँ आघात।**
(२४९) खुट ★	**खुट्टा गाड़ि नापब।**
(२५०) छुट	**त्यक्त होएब।**
(२५१) जुट	**एकट्ठा होएब।**
(२५२) झुट	**चारू दिशसँ लागब।**
(२५३) टुट	**भग्न होएब।**
(२५४) फुट	**१. एकदेशमे भग्न होएब। २. पृथक् होएब।**
(२५५) लुट ★	**लुण्ठन।**
(२५६) गेँट ★	**तराउपरी कए एकट्ठा करब।**
(२५७) भेट ★	**पाएब।**
(२५८) खोँट ★	**नहसँ काटब।**

(२४८) उखरिमे धान कुटैत अछि–मुसरसँ वारंवार आहत करैत अछि। (२४९) हमर घर भवदेव खुटि देलैन्हि–नापिकेँ खुट्टा गड़बाए देलैन्हि। (२५०) हमर नोसिदानी बाटहि छुटल–त्यक्त भए रहि गेल। हमरा दुःख छुटल–त्यक्त भेल। (२५१) सभामे लोकसभ जुटल अछि–एकट्ठा अछि। (२५२) लोकसभ चोरपर झुटल–चारू दिशसँ लागल।

(२५३) रामहिँक बुतेँ महादेवक धनुष टुटल–भग्न भेल। ई डोरी नहि टुटत–भग्न नहि होएत। एहि धातुसँ प्रेरणामे अब् नहि अबैत अछि, तेँ टुटबैत छी इत्यादि प्रयोग नहि; ओहि अर्थमे तोड़ धातुक प्रयोग होइत अछि, यथा धनुष टुटल, ओकरा रामचन्द्र तोड़ल। (२५४) फुटल–भग्न थारीमे नहि खाइ। एहूसँ अब् नहि अबैत अछि। ओहि अर्थमे फोड़ धातु बाजल जाइछ। यथा, थारी फुटल, तकरा हम फोड़ल। गोनू भाएसँ फुटलाह–पृथक् भेलाह। (२५५) हुनक सर्वस्व डाकूसभ लूटि लेलकैन्हि–बलात् लए लेलकैन्हि। महाराज पुत्रजन्मोत्सवमे रुपैआ लुटओलैन्हि। (२५६) लकड़ीसभ गैँटल अछि–तराउपरी एकट्ठा कएल अछि। (२५७) हेराएल वस्तु भेटल। दोशाला इनाम महाराजसँ भेटल–पाओल। (२५८) खड़िका खोँटिकेँ– नहसँ काटिकेँ दिअ।

(२५९) घोट ★	आमर्दन करब।
(२६०) घोँट ★	सार्द्रवस्तु कण्ठसँ नीचाँ लए जाएब।
(२६१) सोट ★	१. आघर्षणसँ चिक्कन करब। २. शीघ्र शोषण।
(२६२) औँट ★	१. जलक ओ दूधक बरकब। २. यन्त्र द्वारा बड़ौरसँ बाङक पृथक्कार।
(२६३) उकट ★	१. उद्घाटन। २. पुरुषाक कलङ्क कहब।
(२६४) चोकट	रसशुष्कता हेतुक सकुचब।
(२६५) निघट	निःशेष होएब।
(२६६) झपट ★	पक्षीक जोरसँ आक्रमण।
(२६७) दपट	क्रोधेँ जोरसँ फजहति करब।
(२६८) लपट	१. कुस्ती सिखब। २. ज्वालाक दूरतः आक्रमण।
(२६९) उपट	१. स्थानान्तरमे बसबाक हेतु आवास-भूमिक त्याग। २. त्यक्तमूल होएब।
(२७०) समट ★	विकीर्ण बस्तुक एकट्ठा करब।

(२५९) बसहा कगज मँड़िआए गेलहीसँ घोटैत छथि–घृष्ट करैत छथि। कुण्डीमे नोसि घोँटैत अछि–आमर्दन करैत अछि। (२६०) पानि घोँटबामे, कण्ठसँ नीचा लए जएबामे, कण्ठ दुखाइत अछि। (२६१) डोरी सोटैत अछि–घर्षणसँ चिक्कन बनबैत अछि। (२६२) दूध वा पानि औँटैत अछि–बरकबैत अछि। (२६३) नेनासभ माटि उकटलक–उखाड़लक। जयलालक पुरुषाकेँ भवदेव उकटलैन्हि–कलङ्क कहलथीन्ह। (२६४) कँाच आम गोरल

से चोकटि गेल–सकुचि गेल। (२६५) जारन जे छल से निघटल–खर्च होइत निश्शेष भेल, अवशिष्ट नहि रहल, तेँ भानस नहि भए सकल। (२६६) चिलहोरि सोहारीपर झपटल–आक्रमण कएलक। कौआ झपटि, जोरसँ आबि आक्रमण कए, नेनाक हाथसँ रोटी लए गेलैक। (२६७) देवदत्त भवदत्तपर दपटलाह–जोरसँ भवदत्तक गञ्जन कएलैन्हि। (२६८) १. जयवीर खलीफासँ लपटैत छथि–मल्लयुद्ध सिखैत छथि। २. एक घरमे लागल आगि लपटिकेँ, दूर ज्वालासँ आक्रमण कए, दोसरहु घरमे लागल। (२६९) १. देवदत्त विष्णुपुरसँ उपटलाह–अन्यत्र वासेच्छासँ घर हटओलैन्हि। २. हमरा फुलबाड़ीसँ बेली फूल उपटि गेल–त्यक्तमूल भेल। (२७०) चाउर छिरिआएल अछि, ओकरा समटू–एकट्ठा करू।

(२७१) पलट	पूर्वावस्थाक प्राप्ति।
(२७२) बिलट	अरक्षाप्रयुक्त नष्ट होएब।
(२७३) उलट	परिवर्तन।
(२७४) पहट ★	कुड़हरिक द्वारा त्याज्य भागक वियोजन।
(२७५) सहट	१. मन्द मन्द हटब। २. मन्द मन्द घुसकब।
(२७६) बकुट ★	बाकुटसँ धरब।
(२७७) समेट ★	विकीर्ण बस्तुक एकट्ठा करब।
(२७८) खरकट	दृढ़ मैलसँ युक्त होएब।
(२७९) हुरपेट ★	बजारिकेँ सिंहक बीचसँ दाबब, मारब।

इति प्रथमभागे टान्ताः

(२८०) नठ ★	अपलाप, कएल क्रियाक निषेध कहब।
(२८१) सठ	सधब, निःशेष होएब।

(२७१) ज्वर पलटि गेल– फेर पूर्ववत् स्थित भए गेल। (२७२) बूड़िक धन बिलटैत अछि–अरक्षासँ नष्ट होइत अछि। (२७३) समय उलटि गेल–बदलि गेल। ई लकड़ी हमरा बुतेँ उलटत–परिवृत्त होएत। उलटल पटिआपर नहि बैसी। (२७४) सोझ-साझ करबाक हेतु लकड़ी पहटू–त्याज्यभागकेँ कुड़हरिसँ हटाउ। (२७५) एहि ठामसँ ओ सहटलाह–मन्दमन्द हटलाह। नाचक लग लोक सहटल जाइत अछि–कनिएँ २ आगाँ घुसकल जाइत अछि। (२७६) अहाँ एहि नेनाकेँ किएक बकुटलैक–बाकुटसँ धएलैक, तहिँ कनैत अछि। वायु पेट बकुटने अछि इत्यादि प्रयोग लाक्षणिक जानब। (२७७) चाउर छिरिआएल, अहाँ ओकरा समेटू–एकट्ठा करू। (२७८) एहि लोटामे मैल खरकटल अछि–जामिकेँ बैसल अछि। लोटा खरकटल अछि इत्यादि प्रयोग लाक्षणिक। (२७९) मरखाहि गाए जयलालकेँ

हुरपेटलक–बजारिकेँ सिंहक बीचसँ दबओलक ।

प्रथम भागमे टान्त धातु समाप्त भेल

(२८०) हमरासँ जयलाल एक रुपैआ लेलैन्हि, आब ओकरा नठैत छथि–हम नहि लेल एहि शब्देँ अस्वीकार करैत छथि । (२८१) जारन जे छल से सठल–निःशेष भेल ।

(२८२) उठ	१. उत्थान । २. प्रवृत्ति । ३. व्यय । ४. आँखिक रोग ।
(२८३) ऐँठ ★	घुमाएब ।
(२८४) सपठ	बराबरि सङ्ग बहबाक हेतु आनक बड़दसँ जोड़ा लागब ।
(२८५) उमठ	अतिभोगजन्य तृप्ति ।
(२८६) खुरेठ ★	खुरसँ दाबब ।
(२८७) कन्हेठ ★	कान्ह पर लेब ।

इति प्रथमभागे ठान्ताः

(२८८) अड़	रुकब ।
(२८९) गड़	निखात होएब ।
(२९०) पड़	१. प्रवृत्ति । २. प्राप्ति । ३. मनसँ पर स्मरण । ४. बुद्धिविषयीभवन । ५. पतन ।

(२८२) जयलाल उठलाह–ठाढ़ भेलाह आदि । (२८३) ई नेना उकठ करैत अछि, एकर कान ऐँठह–हाथसँ पकड़ि घुमाबह । (२८४) हमरा एकेटा बड़द अछि, से नहि सपठैत अछि–नियमपूर्वक बराबरि सङ्ग बहबाक हेतु आनक बड़दसँ जोड़ा नहि लगैत अछि । (२८५) जयलाल मधुरसँ उमठलाह–अधिक मधुर खएलासँ आब मधुर खएबाक इच्छा नहि होइत छैन्हि । (२८६) हमर पाएर गाए खुरेठलक–खुरसँ दबओलक । (२८७) लकड़ी कन्हेठिकेँ, कान्हपर लएकेँ, अनलक ।

प्रथमभागमे ठान्त धातु समाप्त भेल

(२८८) बहुत घोड़ा चलबाक काल अड़ैत अछि–रुकैत अछि, चालि छोड़ि ठाढ़ भए जाइत अछि । पानि बिना धानक रोपनि अड़ल अछि । कार्य अड़ल अछि । (२८९) पाएरमे काँट गड़ल–भितर पैसल । (२९०) अहाँ एहिमे जनु पड़ू–प्रवृत्त जनु होउ । अकाल पड़ल–प्रवृत्त भेल । रुपैआ हाथमे पड़ल–प्राप्त भेल । अहाँकेँ जाए पड़त–जाएब प्राप्त होएत ।

नुआमे दाग पड़ल, देहपर पानि पड़ल–प्राप्त भेल । मन शब्दसँपर प्रयुक्त पड़ धातु स्मरण अर्थमे जानब । मन पड़ल–स्मरण भेल । जानि पड़ल–ज्ञानविषय भेल । देखि पड़ल, सुनि पड़ल, बुझि पड़ल–तत्तज्ज्ञानगोचर भेल । पानि पड़ि रहल अछि–खसि रहल अछि ।

(२९१) लड़	युद्ध करब ।
(२९२) सड़	निःसार होएब ।
(२९३) गाड़ ★	निखनन ।
(२९४) छाड़ ★	छोड़ब (त्याग) ।
(२९५) डाँड़ ★	दण्डन ।
(२९६) पाड़ ★	१. पातित करब । २. मनसँ पर स्मरण करब ।
(२९७) साड़ ★	निस्सार करब ।
(२९८) गिड़ ★	निगलन ।
(२९९) मिड़ ★	मर्दन ।
(३००) उड़	१. उड्डयन, आकाशमार्गेँ जाएब । २. मेटाएब । विलुप्त होएब ।
(३०१) गुड़ ★	आमर्दन, जाहिसँ पिण्डीभूत विशकलीभूत हो ।
(३०२) जुड़	उपायसँ लभ्य होएब ।

(२९१) रावण रामसँ लड़ल–युद्ध कएलक । (२९२) खढ़ भिजलासँ सड़ि गेल–निस्सार भए गेल; सड़ल आमकेँ फेकू । (२९३)) ई खाम्ह चारि हाथ गाड़ल अछि–माटिमे प्रवेशित अछि । (२९४) धोती छाड़ैत छथि–देहसँ हटबैत छथि । ओ पढ़ब छाड़लक–छोड़लक । (२९५) जयलाल दस रुपैआ डाँड़ल गेलाह–हुनकासँ दस टाका दण्ड लेल गेल । (२९६) हम अहाँकेँ खाटपर पाड़ि दैत छी–पातित कए दैत छी, सुताए दैत छी । अहाँ मन पाड़ू जे कुञ्जी कतए राखल । (२९७) पाकल आमकेँ अहाँ साड़ल–निःसार कएल किन्तु खाएल नहि । (२९८) साप बेङ्केँ गिड़ैत अछि–बिना चिबओने खाइत अछि । एहि औषधकेँ चिबाएकेँ जनु खाउ किन्तु गिड़ि जाउ । (२९९) धान पाएरसँ मिड़ैत अछि–आमर्दित करैत अछि जे सीससँ झड़ि जाए । आँखि मिड़ैत अछि–हाथसँ मलैत अछि । (३००) पक्षी उड़ैत अछि–आकाशमे चलैत अछि । अत्यधिक दिनक लिखल पोथीक अक्षर उड़ि जाइत छैक–विलुप्त भए जाइत छैक । हरदिक रङ्ग रौदमे उड़ि जाइत अछि–नष्ट भए जाइत अछि । (३०१) गुड़ ओ उत्तम थीक जे गुड़ने, आमर्दन कएने, बुकनी भए जाए ।

(३०२) हमरा जे जुड़ल, उपायलभ्य भेल, से अहाँकेँ देल।

(३०३) बुड़	नष्ट होएब।
(३०४) मुड़ ★	१. ठकब। २. माथक केश अस्तुरासँ काटब।
(३०५) रेड़ ★	जोरसँ टारब।
(३०६) कोड़ ★	खनन।
(३०७) छोड़ ★	त्याग।
(३०८) जोड़ ★	१. संकलन। २. युक्त करब।
(३०९) तोड़ ★	भञ्जन।
(३१०) फोड़ ★	धक्कासँ वा खसलासँ भग्न होएबाक योग्य वस्तुक भञ्जन।
(३११) मोड़ ★	वक्र करब (लाम वस्तुक संकोचन)।
(३१२) दौड़	धावन (अति वेगसँ गमन)।
(३१३) जकड़	१. सञ्चारशून्य होएब। २. दृढ़तया पकड़ब।
(३१४) भकड़	तण्डुलादिक विकारसँ युक्त होएब।
(३१५) अखड़	सन्दिग्ध होएब।

(३०३) जयलालक धन बुड़लैन्हि–विनष्ट भेलैन्हि। (३०४) देवदत्त बजारमे बनिआसँ मुड़ल गेलाह–ठकल गेलाह। माथ मुड़ल गेल–छिन्नकेश भेल। (३०५) मेलामे लोक रेड़ल जाइत अछि–जोरसँ ठेलल जाइत अछि। (३०६) पोखरि कोड़ैत अछि–खुनैत अछि। (३०७) अधलाह वृत्ति छोड़बाक चाही–तेजबाक चाही। (३०८) रुपैआक खर्च जोड़ैत अछि–ठीकैत अछि। चूल्हिमे जारन जोड़ैत अछि। हथ्थूरमे टोटी जोड़ल–युक्त रहैत छैक। (३०९) रामचन्द्र महादेवक धनुष तोड़लैन्हि–भग्न कएलैन्हि। (३१०) अहाँ जल भरबाक काल घैल फोड़ल–भग्न कएल। (३११) जगह कम अछि तेँ पाएर मोड़िकेँ–संकुचित कए सुतबाक होएत। (३१२) कुकुर दौड़िकेँ–अतिबेगसँ जाए सिकारकेँ धरैत अछि। भोजनोत्तर दौड़ब–धावन दुःखप्रद थीक। (३१३) बातरससँ पाएर जकड़ि गेल अछि–संचाररहित भए गेल अछि। ज्वर हमरा जकड़ने अछि–दृढ़ भए धएने अछि। (३१४) ई चाउर भकड़ि गेल–विकारसँ युक्त भेल। (३१५) हुनक एक बात हमरा अखड़ल–तर्क-वितर्क उत्पन्न कएलक।

(३१६) निखड़	स्पष्ट अङ्कित होएब।
(३१७) उखड़	१. उपड़ब, मूलसंयोग छोड़ब। २. निखड़ब।
(३१८) खोखड़ ★	अस्त्राग्रकर्षणसँ वियोजन।
(३१९) झोखड़	बलीपलितक प्राप्ति।
(३२०) झगड़	कलह करब।
(३२१) रगड़ ★	घर्षण।
(३२२) बिगड़	विकारक प्राप्ति।
(३२३) टघड़	स्वतः नीच गमन।
(३२४) दुघड़	घुसुकि-घुसुकि आगाँ जाएब।
(३२५) पछड़	बजारल जाएब।

(३१६) अहाँ पोथी जे लिखल ताहिमे तकोक ठाम अक्षर निखड़ल नहि अछि–स्पष्ट अङ्कित नहि अछि। थालमे पाएर निखड़ैत अछि। (३१७) बिना कोड़ने खुट्टा नहि उखड़त–उत्खात नहि होएत। अक्षर नहि उखड़ल–नहि निखड़ल। ओहि दरबारसँ जयलाल उखड़लाह इत्यादि प्रयोग लाक्षणिक जानब। (३१८) सुखदेबा माटि खोखड़ैत अछि–अस्त्राग्र लगाए घैँचि घैँचि हटबैत अछि। दाउन करबाक काल माटिमे सटल धान खोखड़िकेँ जमा करैत अछि। (३१९) देवदत्त झोखड़लाह–चमड़ा संकुचित भेलैन्हि। (३२०) झगड़ैत छथि–कलह करैत छथि। (३२१) देवदत्त चानन रगड़ैत छथि–घँसैत छथि। (३२२) काष्ठौषधि छओ मासक बाद बिगड़ि जाइत अछि–विकारयुक्त भए जाइत अछि। घोड़ा बिगड़ल–विकारसँ बदमासी कएलक। देवदत्त बिगड़लाह–विकार पओलैन्हि, अर्थात् क्रुद्ध भेलाह। (३२३) बट्टुक टघड़िकेँ पानिमे चल गेल। (३२४) ई नेना दुघड़ैत अछि–घुसुकि-घुसुकि आगाँ जाइत अछि। (३२५) देवदत्त पछड़लाह–बजारल गेलाह।

(३२६) पिछड़	स्खलन, विचलन।
(३२७) नोछड़	नखाघात।
(३२८) उपड़	उखड़ब, मूलवियोग।
(३२९) धफड़	धालिमे शीघ्रता करब।
(३३०) फुफड़	उपर विकारसँ युक्त होएब।
(३३१) उमड़	परिपूर्ति।

(३३२) हुमड़ शब्द करब।

(३३३) सुरड़ ★ एकमे संबद्ध अनेक वस्तुक हाथसँ आकर्षण।

(३३४) उखाड़ ★ मूलरहित निखात वस्तुक उपर करब।

(३३५) टघाड़ ★ रेखाकारेँ जलादिक बहाएब।

(३२६) देवदत्त पिछड़लाह–स्खलित भेलाह, पाएर छछलि गेलैन्हि। (३२७) एकरा अहाँ किएक नोछड़लिऐक–नहसँ कटलैक ? (३२८) रोप होएबाक हेतु धानक बीआ उपड़ैत अछि–माटिसँ समूल उद्धृत होइत अछि। (३२९) अहाँ धफड़िकेँ चलू–शीघ्रतासँ चलू। (३३०) दही फुफड़ल–उपर विकारसँ युक्त भेल। फुफड़ी लागल। (३३१) पथिआ धानसँ उमड़ल अछि–परिपूर्ण अछि। (३३२) बाघ हुमड़ैत अछि–गम्भीर शब्द करैत अछि। (३३३) खेतमे पाकल धान नेना सभ सुरड़ैत अछि–हाथसँ आकृष्ट करैत अछि। (३३४) खाम्ह जे गाड़ल अछि तकरा उखाड़ैत अछि– तरसँ उपर लबैत अछि। (३३५) पानि हेराएकेँ जनु टघाडू–बहाबी जनु; पटिआ भीजि जाएत।

(३३६) पछाड़ ★ पटकब।

(३३७) उजाड़ ★ सर्वावयव-वियोजन।

(३३८) उपाड़ ★ उत्पाटन, समूल वस्तुक धैचिकेँ वा कोड़िकेँ मूल वियोजन।

(३३९) दबाड़ ★ डाँटब।

(३४०) नछोड़ ★ नखसँ आघात।

(३४१) निपोड़ ★ दैन्यसूचक दाँतक प्रकाशन।

(३४२) मसोड़ ★ मचोड़ब।

(३४३) गुमसड़ गूमिकेँ सड़ब।

(३४४) घसमोड़ ★ बैसिकेँ घाड़ मोड़ि दुहू हाथपर माथ राखब।

इति प्रथमभागे डान्ताः।

(३३६) कुस्तीमे जयसिंह भवदेवकेँ पछाड़लक–बजारलक। (३३७) एहि घरकेँ उजाड़ि–वियोजित कए फेरिकेँ बान्हब। (३३८) दूबि उपाड़ैत अछि–समूल वियुक्त करैत अछि। (३३९) मालिक नोकरकेँ दबाड़ैत छथि–डँटैत छथि। (३४०) अहाँ एकरा किएक नछोड़लिऐक–नहसँ किएक आहत कएलिऐक ? (३४१) जयलाल दाँत निपोड़लैन्हि–दीनतासँ

दाँत देखओलैन्हि तँ ओ दण्डित नहि भेलाह। (३४२) घाड़ मसोड़ैत छथि–मचोड़ैत छथि जे सिरसंकोच छूटए। (३४३) ई धान विना सुखओने राखल तँ गुमसड़ल–गूमिकेँ विकृत भेल। (३४४) देवदत्त घसमोड़ने छथि–बैसल घाड़ मोड़ि दुहू हाथ माथपर रखने छथि।

प्रथमभागमे डान्त समाप्त भेल

(३४५) गढ़ ★ रचना (आभूणक निर्माण)।

(३४६) चढ़ ★ आरोहण (उच्चपर जाएब)।

(३४७) पढ़ ★ १. पठन, पारायण। २. अध्ययन, गुरुसँ सार्थ अवगम।

(३४८) बढ़ वृद्धि।

(३४९) मढ़ ★ संयोजन।

(३५०) काढ़ ★ १. पात्रसँ उद्धरण। २. नाओ चलबाक हेतु पानिक आघात।

(३५१) बाढ़ ★ संमार्जन (भूमिक गर्दाप्रभृतिक अपाकरणसँ शोधन)।

(३५२) बेढ़ ★ वेष्टन।

(३५३) लेढ़ कर्दमसँ समन्तात् युक्त होएब।

(३५४) ऐँढ़ ★ ऐँठब।

(३५५) ओढ़ ★ देहपर वस्त्रक पसारिकेँ समान्तात् लगाएब।

(३५६) लोढ़ ★ सीस बीछब खेतमे।

(३४५) सोनार गहना गढ़ैत अछि–निर्मित करैत अछि। औँठी गढ़लक–बनओलक (३४६) कोठापर चढ़ैत अछि–आरोहण करैत अछि। गाछपर बानर चढ़ल अछि–आरूढ़ अछि। (३४७) पुराण पढ़ैत छथि–पारायण करैत छथि। चीठी पढ़ैत छथि–बचैत छथि। व्याकरण पढ़ैत छथि–गुरुसँ अर्थसहित बुझैत छथि। (३४८) वर्षा-समय धारमे पानि बढ़ैत अछि–उपचीयमान होइत अछि। (३४९) लाठी तारसँ मढ़ैत अछि–युक्त करैत अछि। झुट्टी मढ़ल–युक्त कएल (३५०) पाकपात्रसँ भात काढ़ैत छथि–उद्धृत करैत छथि। (३५१) घर बाढ़निसँ बाढ़ैत अछि–संमार्जित करैत अछि। (३५२) माल नहि जाए एहि हेतु बाड़ीकेँ बेढ़ैत छथि–वेष्टित करैत छथि। (३५३) सूगर खत्तामे लेढ़ैत अछि–थाल लगबैत अछि। (३५४) सुतरीकेँ ऐँढ़ैत अछि–ऐँठैत अछि। एकर रस्सा बनाओत। (३५५) जाड़-समय

लोक तुराइ ओढ़ैत अछि–पसारिकैं लगबैत अछि। (३५६) धान कटलापर सीस लोढ़ैत अछि–बीछैत अछि।

(३५७) औंढ़ ★ आभ्यन्तर ममोर।

(३५८) ड्यौढ़ ★ ड्योढ़ कए लगाएब।

(३५९) अमेढ़ ★ ऐंठब।

(३६०) चकोढ़ ★ सञ्चारशून्य करब।

(३६१) ढकढोढ़ ★ वस्तु हड़बड़बैत ताकब।

इति प्रथमभागे ढान्ताः

(३६२) खत ★ छेदनजात चिह्नसँ युक्त करब।

(३६३) मत ★ मदसँ युक्त होएब (हाथीक)।

(३६४) जित ★ १. जय (उत्कर्षलाभ)। २. अभिभव। ३. काँति लेब।

(३६५) तित ★ आर्द्रीभाव (पानि सँ भिजब)।

(३६६) बित ★ व्यतीत होएब।

(३५७) बुझि पड़ैत अछि पेटकैं औंढ़ैत अछि–चालित करैत अछि। (३५८) टाटकैं ड्यौढ़ि देलासँ–ड्योढ़ कए लगओलासँ परदा होएत। (३५९) खाम्हकैं अमेढ़ि–ऐंठिकैं गर घुमाउ (३६०) बातरस देहकैं चकोढ़ि लेलक अछि–सञ्चारशून्य कए देलक अछि। (३६१) अहाँ वस्तुसभकैं किएक ढकढोढ़ैत छी–हड़बड़बैत तकैत छी।

प्रथम भागमे ढान्तधातु समाप्त

(३६२) ई बेलही नोसिदानी खतल अछि–किञ्चित् २ काटि चिन्हसँ युक्त कएल अछि। केबाड़मे खतिकैं–छेदनसँ युक्त कए नखासी कएल अछि। (३६३) हाथी मतल–मदसँ युक्त भेल। (३६४) ई नेना खेड़िमे सभसँ जितैत अछि–सभसँ उत्कृष्ट होइत अछि। शत्रु जीतल गेल–अभिभूत भेल अर्थात् हारल। हम जूआमे हजार रुपैआ जीतल–प्राप्त कएल। (३६५) जयलाल वर्षामे तितलाह–भिजलाह। नुआ तितल अछि–पानिसँ भिजल अछि। (३६६) अवसर बितल–व्यतीत भेल।

(३६७) रित अधिक सङ्गें मन मिलब।

(३६८) कुत ★ कन करब।

(३६९) छुत संपर्कदुष्ट होएब।

(३७०) मुत ★ मूत्रत्याग।

(३७१) सैंत ★ ओरिआएकैं राखब।

(३७२) गौंत ★ पशुक मूत्रत्याग।

(३७३) जोत ★ १. हरसँ विदारण। २. शकटमे वाहनक योजना।

(३७४) न्यौंत ★ निमन्त्रण।

(३७५) ब्यौंत ★ बिलोबन्द करब।

(३७६) चिन्त ★ गुरुसँ अधीतक अनकासँ बुझब।

(३७७) बकत ★ भूतक व्यक्त वचन।

(३७८) चौपेत १. तराउपर करब। २. मोड़िमाड़ि चौखूट करब।

(३६७) ई नेना हमरामे रितल अछि–मनसँ मिलल अछि, कारण जे हम अधिक काल कोरकैं लैत छिऐक। (३६८) खेतक धान कुतल–कन कएल, अन्दाजसँ इयत्ता कएल। (३६९) भात छुतल–संपर्कदुष्ट भेल, हेतु जे कुकुर छूबि देलक। (३७०) नेना बिछाओनपर मुतलक–मूत्रत्याग कएलक, तैं बिछाओन धोएल गेल अछि। (३७१) नोकर वस्तुसभ सैंतैत अछि–ओरिआए रखैत अछि। (३७२) माल प्रातःकाल गौंतैत अछि–गौंत करैत अछि। जे मनुष्यक मूत्र से मालक गौंत कहबैत अछि। (३७३) हरबाह खेत जोतैत अछि–हरसँ विदारित करैत अछि। गाड़ीमे बड़दकैं बहल-मान जोतैत अछि–युक्त करैत अछि। (३७४) हम ब्राह्मणकैं न्योतल–निमन्त्रित कएल। (३७५) हम कार्यसभ ब्यौंतल–बिलोबन्द कएल। (३७६) अहाँ हमरासँ पढ़ि कोनो विद्यार्थीसँ चिन्तल करू–बूझल करू। (३७७) झौंका देने भूत बकतल–व्यक्त कथा बाजल। (३७८) कपड़ासभ अहाँ चौपेतिकैं–मोड़ि चौखूट कए राखू। लकड़ीसभ चौपेतल अछि–तराउपरी कए राखल अछि।

(३७९) अरिआत ★ अनुव्रजन।

इति तान्ताः

(३८०) भथ ★ भसाठसँ उद्ध होएब।

(३८१) मथ ★ मन्थन, दूध(जलादि)क घुमाए २ आघात।

(३८२) कुथ ★ गुदमार्गद्वारा निस्सारणक्लेश।

(३८३) गुथ ★ सूत्रमे दृढ़ संबन्ध।

(३८४) हुथ ★ अनुचित गञ्जन।

(३८४क) हँसोथ — शीघ्रतया हाथसँ एकत्रित करब ।

इति थान्ताः

(३८५) द ★ — १ दान । २. अनिरोध । ३. लगाएब । ४. पढ़ब । ५. करब ।

(३८६) बद ★ — वरण, स्वीकार ।

(३७९) पाहुनकेँ अरिआतैत छथि–अनुव्रजन करैत छथि । सभापतिकेँ अरिआति सभामे अनिऔन्हि ।

प्रथम भागमे तकारान्त समाप्त

(३८०) बाढ़िमे पाँक खसलासँ पोखरि भथल–उच्च भेल । (३८१) दूध मथैत अछि–मन्थन करैत अछि । (३८२) नेना कुथैत अछि–अमांसएसँ गुदामार्गद्वारा जोर पड़लासँ क्लेश पबैत अछि । (३८३) फूलक मालाकेँ गुथैत अछि–दृढ़ सम्बद्ध करैत अछि। गथला पर फूल आदिमे परस्पर किछु अन्तर रहि जाइत छैक वा जोरसँ मिलल नहि रहैत अछि, तकरा ससारि २ जोरसँ संबद्ध करब गुथब भेल । (३८४) देवदत्त नोकरकेँ हुथैत रहैत छथि–गञ्जन करैत रहैत छथि, जे गञ्जन उचित नहि ।

प्रथमभागमे थान्त धातु समाप्त

(३८५) १. महाराज पण्डितकेँ हाथी देल । २. हमरा जाए दिअ–जएबाक निरोध जनु करी । ३. मन दए सुनू । देहपर हाथ दिअ अर्थात् लगाउ । ४. गारि दैत अछि–गारि पढ़ैत अछि । ५. मना देलैन्हि–निषेध कएलैन्हि। आज्ञा देलैन्हि–आज्ञा कएलैन्हि । (३८६) जयलाल हमरादिश बदल छथि– स्वीकृत छथि ।

(३८७) मद ★ — वरण, स्वीकार ।

(३८८) कुद — उल्लङ्घन, कूर्दन, फानब ।

(३८९) छेद ★ — भूर करब ।

(३९०) भेद ★ — ''

(३९१) सेद ★ — तप्त करब ।

(३९२) गोद ★ — बारंवार किंचित् भोँकब ।

(३९३) बगद — विरुद्ध होएब ।

(३९४) सोआद ★ — आस्वादन, रसग्रहण ।

इति दान्ताः

(१९५) सध — निश्शेष होएब, निघटब ।

(३९६) साध ★ — १. सिद्ध करब । २. सोझ करबाक हेतु भार देब ।

(३९७) खोध ★ — उद्घाटन ।

(३९८) सोध ★ — शुद्ध करब ।

(३८७) एकर मद्दी नहि–स्वीकार नहि । (३८८) हनुमान समुद्र कूदि गेलाह । (३८९) नेनाक कान छेदल गेलैक । (३९०) सुइआसँ हाथ भेदल गेल । (३९१) हाथ सेदैत अछि–तप्त करैत अछि । (३९२) स्त्रीगण खोदहाक हेतु देह गोदबैत अछि, खोदपारिनी गोदैत छैक । (३९३) हमरासँ ओ बगदल छथि–विरुद्ध भेल छथि । (३९४) मधुरकेँ सोआदैत अछि–भक्षणसँ रसग्रहण करैत अछि ।

प्रथम भागमे दान्त धातु समाप्त

(३९५) चाउर सधल–अवशिष्ट नहि रहल, अर्थात् सभटा खर्च भए गेल । (३९६) १. कठिन कार्य हम साधल–सिद्ध कएल । २. चौपालाक बाँसकेँ साधू–भारसँ आक्रान्त करू जे सोझ होएत । (३९७) कान काठीसँ खोधैत अछि । कठखोधी पक्षी खोधिकेँ काठमे भूर करैत अछि । (३९८) पुस्तक सोधल–शुद्ध कएल ।

(३९९) लुबुध — एकमे अनेक गुच्छरूपेँ रहब ।

(४००) अरबध — ज्ञान ।

इति धान्ताः

(४०१) गन ★ — गणन ।

(४०२) बन — १. सिद्धि । २. मिलान होएब ।

(४०३) मान ★ — १. स्वीकार । २. संमान करब ३. बुझब ।

(४०४) किन ★ — क्रयण ।

(४०५) छिन ★ — बलात् ग्रहण, अनका हाथसँ ।

(४०६) बिन ★ — वस्त्राद्यर्थ तन्तु प्रभृतिक योजना (वस्त्रादिनिर्माण) ।

(४०७) खुन ★ — १. कोड़ब । २. पादसँ आक्रमण ।

(४०८) गुन — १. गुणन । २. गुणपरीक्षण ।

(४०९) तुन ★ — तूरक घुटकीसँ विश्लेषण ।

(४१०) बुन ★ — बाओग करब ।

(३९९) चीनीमे चुट्टी लुबधल अछि। (४००) ई कार्य ओ अरबधिकेँ करताह, जानिकेँ करताह।

प्रथम भागमे धान्त धातु समाप्त

(४०१) रुपैआ गनैत अछि। मोटा दशटा गनल अछि। (४०२) घर बनल–निर्मित भेल। हमरा हुनकासँ नहि बनैत अछि–मिलान नहि होइत अछि, अर्थात् नहि पटैत अछि। (४०३) १. हमर कथा अहाँ मानू–स्वीकार करू। २. अहाँकेँ गुरूजी मानैत छथि–संमान करैत छथि। ३. हम मानने छलहुँ जे अहाँ नहि आएब। (४०४) चारि टाकामे भगवानक मुकुट कीनल। (४०५) हम चोरक हाथसँ मोटा छीनल। (४०६) हम नुआ बिनैत छी, पटिआ बीनि चुकलहुँ। (४०७) १. जन सभ इनार खुनैत अछि–कोड़ैत अछि। २. वस्तुसभ पसरल अछि, तकरा माल खुनए नहि। (४०८) १. खेत गुनल, एक बिगहा भेल। २. वासडीह गुनैतछथि–गुणक परीक्षा करैत छथि। (४०९) तूर तुनैत अछि– चुटकीसँ विश्लेषण करैत अछि। (४१०) खेतमे तीसी बुनल–बाओग कएल।

(४११) मुन ★ छिद्र बन्द करब।
(४१२) सुन ★ श्रवण।
(४१३) टोन ★ काष्ठ टूखण्ड कए काटब।
(४१४) अकान ★ कान पाथि सुनब।
(४१५) गतान ★ घोर सक्त करबसँ तानब।
(४१६) गुदान ★ अपेक्षा (कथा मानब)।
(४१७) पलान ★ अतियत्न।
(४१८) उसिन ★ धान्यादिकेँ केवल पानिमे आगिसँ सिद्ध करब।
(४१९) बिधुन ★ उनटाए पनटाए देखब।

इति नान्ताः

(४२०) कप कम्पन।
(४२१) खप न्यून होएब।
(४२२) छप १. तिरोधान। २. मुद्रण।

(४११) तूरसँ कान मुनि लिअ जे बसात नहि लागए। (४१२) हम सुनैत छी–श्रवण करैत छी। (४१३) डारि सभ टोनू–खण्ड २ कए काटू। (४१४) दूरसँ कोनो शब्द अबैत अछि तकरा हम अकानैत छी–कान पाथि सुनैत छी। (४१५) खाट गतानल जाइत

अछि–घोर सक्कत कएलासँ तानल जाइछ। (४१६) ओ हमरा गुदानैत छथि–अपेक्षित करैत छथि। (४१७) ओ एहि कार्यमे पलानिकेँ लगलाह, अतियत्नपूर्वक प्रवृत्त भेलाह। (४१८) धान वा आलू उसिनैत छथि– पानिमे आगिक ताबेँ सिद्ध करैत छथि। (४१९) नेना वस्तुजात बिधुनैत अछि–उनटबैत-पनटबैत अछि।

प्रथमभागमे नान्त धातु समाप्त

(४२०) जाड़ेँ देह कपैत अछि। अतिवार्धक्यसँ हाथ कपैत छैक। (४२१) ग्रहणमे सूर्य्य-चन्द्रमा खपैत छथि। (४२२) भीतक आड़मे छपि गेलाह।

(४२३) जप ★ परश्रवणागोचर मन्त्रजप।
(४२४) टप ★ उल्लंघन।
(४२५) छिप ★ १. प्रच्छन्न होएब। २. प्रच्छन्न करब। ३. जोरसँ खैंचब।
(४२६) टिप ★ क्रीड़ामे प्रधानकेँ घालि कहब।
(४२७) धिप तबब (अग्नितापसँ युक्त होएब)।
(४२८) निप ★ भूमिलिम्पन।
(४२९) धुप ★ धुआँसँ पकाएब।
(४३०) खेप ★ कालातिवाहन।
(४३१) लेप ★ लिप्त करब।
(४३२) छोप ★ उपरसँ काटब।
(४३३) तोप ★ आच्छादित करब।
(४३४) थोप ★ ,,

(४२३) गायत्री जपैत छथि। (४२४) भीत टपि गेलाह। (४२५) १. ओ छिपल छथि–प्रच्छन्न छथि। २. किछु मधुर छिपलक–प्रच्छन्न कएलक। प्रथम अर्थमे अकर्मक, द्वितीयमे सकर्मक। ३. बनसी छिपलक–जोरसँ खैंचलक। (४२६) सतरञ्जमे टिपनिहार चाही। (४२७) जल धिपल– उष्ण भेल। (४२८) आँगन निपैत अछि–पानिगोबरसँ उपलिप्त करैत अछि। (४२९) केरा धुपैत अछि–धूआँसँ पकबैत अछि। (४३०) ओ खेपैत अछि–कालक्षेपण करैत अछि। (४३१) गोबरमाटि लेपैत अछि–लिप्त करैत अछि। (४३२) अधिक बढ़ल धानकेँ खसि पड़बाक डरसँ गृहस्थ छोपैत अछि–उपरसँ काटि दैत अछि। (४३३) घरमे लागल आगि छाउर-धूरासँ तोपलक–जँतलक। (४३४) आगि थोपलक–आच्छादित कएलक।

(४३५) धोप ★ आच्छादन ।

(४३६) रोप ★ रोपण ।

(४३७) छरप लाँघब ।

(४३८) तरप ,,

(४३९) अड़ोप ★ आरोप ।

इति पान्ताः

(४४०) हँफ मालक मारबाक चेष्टा ।

इति फान्ताः

(४४१) अब १. आगमन । २. ज्ञानविषय होएब ।

(४४२) गब ★ गान ।

(४४३) तब तापसँ युक्त होएब ।

(४४४) दब १. नीच होएब । २. नीच करब ।

(४४५) धब किञ्चित्प्रकाश ।

(४३५) आगिकेँ धोपलक–आच्छादित कएलक । (४३६) खेतमे धान रोपैत अछि। (४३७-४३८) खेड़िमे नेनासभ छरपैत अछि वा तरपैत अछि । (४३९) पएर अड़ोपलक–आरोपित कएलक।

प्रथम भागमे पान्तधातु समाप्त

(४४०) ई बड़द हँफैत अछि–मारबाक चेष्टामात्र करैत अछि ।

प्रथम भागमे फान्त धातु समाप्त

(४४१) १. देवदत्त काशीसँ गाम अबैत छथि–आगमन करैत छथि । २. हमरा शास्त्र अबैत अछि–ज्ञानविषय होइत अछि । (४४२) गबैआलोकनि गीत गबैत छथि–गीतगान करैत छथि । (४४३) लोहिआ तबल–तप्त भेल । (४४४) १. मल्लयुद्धमे देवदत्तसँ जयलाल दबलाह । २. जयलालकेँ देवदत्त दबलैन्हि । प्रथममे अकर्मक, द्वितीय अर्थमे सकर्मक । (४४५) चन्द्रमाक किरण धबल–किञ्चित्प्रकाश भेल । रोगसँ हिनका देह पर उजरी धबैत छनि ।

(४४६) पब ★ प्राप्ति ।

(४४७) फब लहब ।

(४४८) बब ★ व्यादान ।

(४४९) भब प्रिय लागब ।

(४५०) लब ★ १. नम्र होएब । २. आनब ।

(४५१) जिब प्राणधारण ।

(४५२) पिब ★ पान ।

(४५३) सिब ★ सूचीद्वारा तागसँ दूक संयोगब ।

(४५४) चुब छिद्रद्वारा जलादिक निष्काशन ।

(४५५) छुब ★ स्पर्श ।

(४५६) डुब निमज्जन ।

(४५७) खेब ★ नावक चलाएब ।

(४५८) छेब ★ उपयुक्त करबाक हेतु छीलब ।

(४४६) जयलाल रुपैआ पओलैन्हि–प्राप्त कएलैन्हि । (४४७) ई क्रिया हुनका फबैत छैन्हि–लहैत छैन्हि। (४४८) पक्षी ताओसँ मुह बबैत अछि। (४४९) हुनका भकुओ चाउरक भात भबैत छैन्हि–मनःपूत होइत छैन्हि, अर्थात् प्रिय लगैतछैन्हि। (४५०) १. ठारि फलक भारसँ लबल अछि–नम्र अछि। २. पानि लबैत छथि–अनैत छथि। (४५१) जयलाल जिबैत छथि। (४५२) पानि पिबैत छथि। (४५३) दरजी अङ्गा सिबैत अछि–सूचीसँ दुरुस्त करैत अछि। सीलक, सीअत। (४५४) घैल चुबैत अछि–छिद्र देने पानि खसबैत अछि। घर नहि चुबत–छिद्र देने जल नहि खसाओत। (४५५) नेना आगि छुबि लेत–स्पर्श कए लेत, हटाउ। (४५६) माछ पानिमे डुबल रहैत अछि–निमग्न रहैत अछि। डेँगी नाओ उनटलहुपर नहि डुबैत अछि। (४५७) मल्लाह नाओ खेबैत अछि–लए जाइत अछि। (४५८) धरनि छेबैत अछि–उपयुक्त बनएबाक हेतु छीलैत अछि।

(४५९) टेब ★ उपयोगार्हत्वेन निश्चय ।

(४६०) लेब ★ सार्द्र मृत्तिकासँ संयोजन ।

(४६१) सेब ★ उपचार (सेवा करब) ।

(४६२) गोब ★ क्वचित्क्वचित् मुइल धानक जगहपर पुनः धान रोपब ।

(४६३) झकब ★ फलक खसबाक हेतु गाछकेँ डोलाएब ।

(४६४) निकब ★ माछप्रभृतिकें रन्हबाक योग्य बनाएब ।

(४६५) जोगब ★ कालान्तरमे उपयोगार्थ जुगुताएकें राखब ।

(४६६) अँचब १. मुखप्रक्षालनगण्डूषादि करब । २. ओ कराएब ।

(४६७) निछब ★ तृणपुञ्जक छोट तृणकें हटाए संशोधन ।

(४६८) बिछब ★ आस्तरण ।

(४६९) ओछब ★ ,,

(४७०) बजब ★ आह्वान ।

(४७१) पिजब ★ तीक्ष्णीकरण ।

(४५९) धरनि योग गाछ टेबू–पसिन्द करू । (४६०) टाट लेबैत अछि । (४६१) भगवानूकें सेबू जे दुःखजालसँ मुक्त होएब । (४६२) खेतमे धान गोबैत अछि–कतहु-कतहु विरल भागमात्रमे धान रोपैत अछि । (४६३) आमक गाछ झकबैत अछि– आम खसबाक हेतु डोलबैत अछि । (४६४) माछ निकबैत अछि–रन्हबाक योग्य बनबैत अछि। (४६५) घरमे वस्तुसभ जोगबैत अछि–उपयोगार्थ जुगुताए कें रखैत अछि । (४६६) देवदत्त भोजन कए अँचबैत छथि–हाथ-मुह धोइत छथि । नोकर पाहुनकें अचबैत छैन्हि। (४६७) खड़ही वा खढ़ निछबैत अछि–संशोधन करैत अछि । (४६८) पटिआ बिछबैत अछि–आस्तृत करैत अछि । (४६९) पटिआ ओछबैत अछि–आस्तृत करैत अछि । (४७०) सभामे पण्डितलोकनिकें बजाउ–आहूत करू । (४७१) बसिला पाथरपर पिजबैत अछि–तीक्ष्ण करैत अछि ।

(४७२) सुज्झब ★ प्रत्यर्पण ।

(४७३) अण्ठब ★ अन्यथा करब ।

(४७४) नड़ब ★ १. हाथसँ भूमिपर राखब । २. अस्थानपर छोड़ब।

(४७५) अढ़ब ★ कार्यमे प्रवृत्त कराएब ।

(४७६) सतब ★ दुःख देब ।

(४७७) छिपब ★ लए लेबाक हेतु प्रच्छन्न करब ।

(४७८) धबब ★ प्रच्छन्न भए आनक प्रतीक्षा करब ।

(४७९) चिबब ★ घर्षण ।

(४८०) गमब ★ बिताएब ।

(४८१) जमब अपन प्राशस्त्यसूचक क्रिया करब ।

(४८२) सरब ★ अनवरत किंचित् चुबब।

(४८३) बेरब ★ १. मालक निरोध । २. पृथक्करण ।

(४८४) उलब ★ पानिसँ अमिश्रित काँच धानक भुजब ।

(४७२) मंगनी जे वस्तु आनल से सुज्झाए दिऔक–आपस कए दिऔक । (४७३) ओ कहलैन्हि जे पुस्तक देब तकरा अण्ठओलैन्हि–अन्यथा कएलैन्हि, अर्थात् नहि देलैन्हि। (४७४) ओ नोसिदानी एहि ठाम नड़ाए चल गेलाह । (४७५) जनकें अढ़बैत अछि–प्रवृत्त करबैत अछि । (४७६) ओ हमरा सतबैत छथि–दुःख दैत छथि। (४७७) किछु मधुर छिपओलक–प्रच्छन्न कएलक । (४७८) चोरकें धबबैत छी–प्रच्छन्न रहि प्रतीक्षा करैत छी। (४७९) फुटहा चिबबितहुँ जँ दाँत सक्कत रहैत । (४८०) हम समय गमबैत छी–बितबैत छी । (४८१) ओ बड़े जमबैत अछि–अपन प्राशस्त्यबोधक क्रिया करैत अछि । (४८२) घैल सरबैत अछि–अनवरत चुबैत अछि । (४८३) १. माल बेरबैत अछि–निरोध करैत अछि । २. गहूमसँ जओ बेरबैत छी–पृथक् करैत छी । (४८४) धान उलबैत अछि–बिना भीजल अशुष्क धान भुजैत अछि ।

(४८५) बैलब ★ निकालब ।

(४८६) पसब ★ १. माँड़क अन्नसँ पृथक्कार । २. माँड़सँ वियोजन ।

(४८७) ओसब ★ सूर्पादिसँ वायुद्वारा अन्नक साफ करब ।

(४८८) कोंचिअब ★वस्त्रादिकें सङ्कुचित करब ।

(४८९) गेंठिअब ★ ग्रन्थिसँ युक्त करब ।

(४९०) झिलिअब ★ काटल माटिकें कोदारिसँ सरि करब ।

(४९१) घिसिअब ★ माटिपर घर्षणपूर्वक लए जाएब ।

(४९२) टरकब ★ अण्ठाएब ।

(४९३) बेकछब ★ वचनसँ अति व्यक्त करब ।

(४९४) नँगड़ब ★ खेहारब।

(४९५) नङ्ड़ब ★ ,,

(४९६) पछतब ★ पश्चात्ताप करब ।

(४८५) हम ओकरा बैलबितहुँ, जँ नीक दोसर नोकर भेटैत तँ निकालितहुँ। (४८६) १. माँड़ पसबैत छी–भातसँ हटबैत छी। २. भात पसबैत छी–माँड़सँ वियुक्त करैत छी। (४८७) धान ओसबैत अछि–वायु द्वारा साफ करैत अछि। (४८८) धोती कोँचिअबैत अछि–संकुचित करैत अछि। (४८९) माला गेँठिअबैत छथि–गेँठसँ युक्त करैत छथि। (४९०) माटि झिलिअबैत अछि–सरि करैत अछि। (४९१) काँट घिसिआएकेँ आन–माटिमे घर्षणपूर्वक आन। (४९२) काज टरकबैत अछि–अण्ठबैत अछि। (४९३) अहाँ बातकेँ बेकछबैत छी–अति व्यक्त करैत छी। (४९४-९५) चोरकेँ पाँछसँ नँगड़बैत वा नङ्ड़बैत अछि–खेहारैत अछि। (४९६) हम आब पछतबैत छी–पश्चात्ताप करैत छी।

(४९७) परतब ★ ज्ञातक जाँच।

(४९८) जुगुतब ★ सुरक्षित करब।

(४९९) अकनब ★ कान पाथिकेँ सुनब।

(५००) अजमब ★ साध्यताक जाँच।

(५०१) अकरब ★ अयशक प्राप्ति।

(५०२) तेहरब ★ तृतीयावृत्त करब।

(५०३) दोहरब ★ द्वितीय आवृत्त करब।

(५०४) कुम्हरब ★ थनकेँ बढ़ाएब।

(५०५) दोहसब ★ दोहराएकेँ टोकब।

(५०६) घोँकड़िअब ★ दुहू ठेँगहुनकेँ मोड़ि दाढ़ी लग राखब।

(५०७) महलिअब ★ महाल-महाल फुटाएब।

इति बान्ताः

(४९७) परताओल परताबी बुद्धिक विनाश। (४९८) आश्रममे वस्तुजात जुगुताबी–सुरक्षित करी। (४९९) हम हुनक बाजब अकनबैत छी–कान पाथि सुनैत छी। (५००) ई सील हमरा बुतेँ उठत वा नहि से अजमबैत छी–जाँच करैत छी। (५०१) ओ अकरओलैन्हि–अयश प्राप्त कएलैन्हि। (५०२) धान तेहरबैत छी–तेसर बेर तौलैत छी। (५०३) बात दोहरबैत छी–दोसर बेर कहैत छी। (५०४) महीसि कुम्हरबैत अछि–थनकेँ बढ़बैत अछि। (५०५) अहाँ दोहसबैत छी–दोहराए केँ टोकैत छी।

(५०६) जाड़ेँ घोकड़िअबैत छथि–ठेँगहुन मोड़ि दाढ़ीमे लगबैत छथि। (५०७) कागज महलिअबैत छथि–महाल-महाल फूट करैत छथि।

प्रथम भागमे बान्त धातु समाप्त

(५०८) खोभ ★ आबाद खेतक विपन्न स्थानमे धान रोपब।

(५०९) चोभ ★ रसयुक्तक मुहमे लगाए रसक ग्रहण।

(५१०) टोभ ★ बाओग करबाक योग्य बीआकेँ एकाँएकी हाथसँ बैसाएब।

(५११) सोभ सौन्दर्यक प्रकाश करब।

इति भान्ताः

(५१२) कम घटब।

(५१३) गम ★ जाँच करब।

(५१४) जम १. उत्कृष्ट होएब। २. जमा होएब।

(५१५) नम १. नम्र होएब। २. मालक जलाशयमे पानि पीअब।

(५१६) गुम तापसँ शिथिल होएब।

(५१७) घुम भ्रमण।

(५०८) धान खोभैत अछि–विपन्न स्थानमे रोपैत अछि। (५०९) आम चोभैत अछि–मुहमे लगाए रस खाइत अछि। (५१०) धानमे बदाम टोभैत अछि–एकाएकी हाथसँ बैसबैत अछि। (५११) पूर्ण चन्द्रमा सोभैत छथि–शोभायुक्त होइत छथि।

प्रथम भागमे भान्त धातु समाप्त

(५१२) दश सेर मधुर पठाओल ताहिमे आध सेर कमल–घट्टी भेल। (५१३) हमर गमल अछि–जाँच कएल अछि जे हम एक मन उठाए सकब। (५१४) १. नाच खूब जमल–उत्कृष्ट भेल। (एवम् भोज जमल)। २. सभामे लोक जमल अछि– जमा अछि। घाटपर कजरी जमैत अछि–जमा होइत अछि। (५१५) १. आब ओ नमलाह–वार्धक्यसँ लबि गेलाह। २. बड़द नमल–पानि पीलक। (५१६) मडुआ गुमल–ढेरीक तापसँ शिथिल भेल, आब मिड़ल जाएत। (५१७) पण्डितजी घुमैत रहैत छथि।

(५१८) जुम प्राप्त होएब।

(५१९) डुम निमज्जन।

(५२०) दोम ★ झमारब।

(५२१) रोम ★ पशुपक्षीक निवारण।

(५२२) जनम उत्पत्ति।

(५२३) बिलम विलम्ब करब।

इति मान्ताः

(५२४) कर ★ करण (साधन)।

(५२५) गर द्रववस्तुक वस्त्रादिसँ विच्युति।

(५२६) घर बूलि-बूलि तृणादि-भक्षण।

(५२७) जर दग्ध होएब।

(५२८) झर पत्रफलादिक बहुत खसब।

(५१८) अन्न जुमैत अछि-प्राप्त होइत अछि। देव झा काशी जुमलाह-प्राप्त भेलाह। (५१९) नाओ पानिमे डुमल अछि-डुबल अछि। डुम धातुक प्रयोग उत्तम व्यक्तिक व्यवहारमे नहि। (५२०) एक्का सवारकेँ बड़े दोमैत अछि-झमारैत अछि। (५२१) गुलेतीसँ कौआ-बानर रोमैत छी-निवारित करैत छी। (५२२) कोठापर पीपरक गाछ जनमल अछि- उत्पन्न भेल अछि। (५२३) अहाँ अएबामे बिलमू जनु-विलम्ब जनु करी।

प्रथम भागमे मान्त धातु समाप्त

(५२४) कार्य करैत अछि, कार्य कएलक। (५२५) खीचल नुआसँ पानि गरैत अछि-च्युत होइछ। (५२६) माल चरैत अछि-लागल तृण दाँतसँ काटि २ खाइत अछि। (५२७) नूआ जरल-दग्ध भेल। (२२८) आम झरत-अधिक खसत।

(५२९) टर सोझाँसँ अण्ठाएकेँ चल जाएब।

(५३०) ठर शीत होएब।

(५३१) ढर पात्रसँ पतन।

(५३२) तर १. तेल आदिमे व्यञ्जनादिक पाक। २. पार होएब।

(५३३) दर कोन्हुमे गणित होएब।

(५३४) धर ★ स्थापन।

(५३५) बर ★ मृत्तिकाशिवलिङ्ग निर्माण।

(५३६) भर ★ १. पूरण। २. दण्ड देब।

(५३७) मर प्राणवियोजन।

(४३८) लर अति शिशुक चलब।

(५३९) हर ★ अपहरण।

(५४०) गार ★ निगालन।

(५४१) छार ★ छादन (शीतातपनिवारणार्थ तृणादिक प्रसारण)।

(५२९) ओ एहिठामसँ टरल-लाथ लगाए चल गेल। (५३०) हाथ-पाएर ठरल अछि-शीत अछि। जाड़मे परसल भात ठरैत अछि, खाए लिअ। (५३१) धैलमे पानि कम्म अछि, बिना धैल उठओने लोटामे नहि ढरत-खसत नहि। (५३२) १. तिलकोड़ाक पात तरैत छथि-तेलमे वा घृतमे सिद्ध करैत छथि। २. जे भगवानकेँ सेबलक से तरि गेल-संसारसमुद्रसँ पार भए गेल। (५३३) विष्णुकान्त झा पढ़ने कम्मे छथि किन्तु पण्डितमे दरल छथि-परिगणित छथि। (५३४) अलमारीमे पुस्तक धरू-राखू। (५३५) महादेव बरैत छी-माटिक शिवलिङ्ग बनबैत छी। (५३६) १. जलसँ पोखरि भरल-पूर्ण भेल। २. हम दश रुपैआ भरल, हमरा दुष्ट भरओलक। (५३७) विष खएने मनुष्य, कोचिला खएने कुकुर मरैत अछि-प्राणसँ वियुक्त होइत अछि। (५३८) आब जयलालक नेना लरैत अछि-किछु-किछु चलैत अछि। (५३९) हमरा भगवान् सब धन हरि लेलैन्हि-अपहृत कएलैन्हि। (५४०) आमक रस गारैत छी-आँठीसँ वियोजित करैत छी। (५४१) जनसब घर छारैत अछि-खढ़सँ आच्छादित करैत अछि।

(५४२) जार ★ डाहब।

(५४३) झार ★ विधूनन।

(५४४) टार ★ हटाएब।

(५४५) ठार ★ ठंढा करब।

(५४६) ढार ★ द्रववस्तुक पात्रसँ खसाएब।

(५४७) तार ★ तप्त पानिसँ नीचामे धानकेँ संयुक्त करब।

(५४८) धार ★ १. गृहीत ऋणक अपरिशोधन। २. शुभप्रद होएब।

(५४९) पार ★ १. पातन। २. करब।

(५५०) फार ★ विदारण ।

(५५१) बार ★ त्यागब ।

(५५२) भार ★ भिजाओल धानकेँ अग्निद्वारा पात्रमे शुष्क करब ।

(५४२) ई नेना नूआ जारलक–डाहलक । (५४३) धोतीमे माटि लागल अछि, तैँ धोती झारैत छी–विधूनित करैत छी । (५४४) एहि ठामसँ सबकेँ टारल–पृथक् कएल, हटाओल, आब एकान्त भेल । अहाँक बात हम टारल–हटाओल, अर्थात् नहि मानल । (५४५) जाड़ मास परसल अन्न किएक ठारैत छी, खाउ गए । (५४६) सोनार सोन गलाए ढारैत अछि–भूमिपर खसबैत अछि । हम लोटामे थैलासँ पानि ढारल । (५४७) धान तारैत अछि–नीचाँमे तप्त पानिसँ युक्त करैत अछि । (५४८) १. हम भवदेव झाक एक सए रुपैआ धारैत छिऐन्हि–हम भवदेवसँ गृहीत एक सए रुपैआ ऋण परिशोधित नहि कएल अछि, अर्थात् आदाय नहि कएल अछि । २. हमरा महीसि नहि धारैत अछि–शुभप्रद नहि होइत अछि । हम अनेक महीसि किनल किन्तु मरि-मरि गेल । (५४९) १. जनसभ खेतमे कोदारि पारैत अछि–पातित करैत अछि । २. अहाँकेँ सोर पारैत अछि–सोर करैत अछि । (५५०) बाँस फारैत अछि–विदलित करैत अछि । (५५१) १. हम माछ बारने छी–त्यक्त कएने छी अर्थात् नहि खाइत छी । २. भवदत्त बारल गेलाह–समाजसँ त्यक्त भेलाह अर्थात् समाज हुनकासँ भोजनादि व्यवहार त्यक्त कएलक । (५५२) धान भारैत अछि–भिजाओल धान अग्निद्वारा पात्रमे शुष्क करैत अछि ।

(५५३) मार ★ १. ताड़न । २. प्राणवियोजन ।

(५५४) न्यार ★ इच्छा ।

(५५५) लार ★ दाबिसँ सञ्चालन ।

(५५६) हार ★ १. कौँतिमे अपन स्वत्वक निवर्तनपूर्वक परस्वत्वक उत्पादन । २. युद्धमे अभिभूत होएब ।

(५५७) चिर विदारण ।

(५५८) तिर ★ खैँचब ।

(५५९) भिर संयुक्त होएब ।

(५६०) घुर फिरब ।

(५६१) चुर ★ चूर्ण करब ।

(५६२) थुर ★ थकुचब ।

(५६३) फुर ★ स्फूर्ति होएब ।

(५६४) हुर ★ हूरसँ युक्त करब (दरीमे माटि दए मुसरसँ मारब) ।

(५६५) घेर ★ वेष्टन ।

(५६६) छेर ★ पातर पुरीषक त्याग ।

(५५३) १. हमरा एक थापड़ मारलैन्हि । २. माछ मारलैन्हि । (५५४) हम न्यारैत छी–इच्छा करैत छी जे काशी जाइ । (५५५) भात लारू–दाबिसँ वा करछुसँ भातक संचालन करू । (५५६) १. युधिष्ठिर जूआमे राज्य हारलैन्हि । २. भवदेव जयसिंह दुहू गोटे कुस्ती लड़लाह, ताहिमे भवदेव हारलैन्हि–पराजित भेलाह । (५५७) बाँसक खड़िका चिरैत अछि–विदीर्ण करैत अछि । (५५८) चाम तिरलासँ–थै चलासँ नमरैत अछि । एहि नेनाक ठोर तिरलकैक–पकड़ि खैचलकैक । (५५९) हमरामे अहाँ भिरलहु–संयुक्त भेलहुँ । (५६०) देवदत्त जाएकेँ घुरलाह–फेर आबि गेलाह । (५६१) लवंग चूरल–चूर्णित कएल । (५६२) दाँतमनिक मुह थुरि दिऔक–थकुचि दिऔक । (५६३) हमरा किछु ने फुरैत अछि–किछु स्फूर्ति नहि होइत अछि । (५६४) खाम मुसरसँ हूरि दिऔक जे डोलमाल नहि करए । (५६५) बाड़ी टाटसँ घेरू–वेष्टित करू । (५६६) ई नेना बड़े छैरैत अछि–पातर पुरीषक त्याग करैत अछि ।

(५६७) टेर ★ १. गुदानब । २. बंसी बजाएब ।

(५६८) पेर ★ घुमैत यन्त्रसँ निष्पीड़न ।

(५६९) फेर ★ १. उलटाएब । २. आपस करब । ३. घोड़ाकेँ अभ्यासार्थ चलाएब ।

(५७०) हेर ★ ताकब (देखब) ।

(५७१) गोर ★ पकबाक हेतु निमुन्न करब ।

(५७२) घोर ★ १. जलादिमे मिलाएब । २. खाट आदिकेँ नेवार-सुतरीसँ आच्छन्न करब ।

(५७३) छोर ★ लागल तृणक काटब ।

(५७४) झोर ★ जंगलक सञ्चालन ।

(५७५) धोर ★ रजक द्रवमे बस्त्रादिक डुमाएब ।

(५७६) मोर ★ संकुचित करब ।

(५७७) ढौर ★ चून आदिसँ छछारब ।

(५७८) पौर ★ परिणामार्थ दुग्धक पात्रमे पातन ।

(५६७) १. अहाँकेँ अपन नेना नहि टैरैत अछि–नहि गुदानैत अछि, अर्थात् अहाँक बात नहि मानैत अछि । २. कृष्ण भगवान् वृन्दावनमे वंशी टैरैत छलाह–मग्न भए बजबैत छलाह । (५६८) तेलक हेतु तेलि सरिसब पेरैत अछि- निष्पीड़ित करैत अछि । (५६९) १. सड़ए नहि तेँ पानकेँ फेरैत छथि–उनटबैत छथि । २. फुटल रुपैआ फेरि देलक–आपस कएलक । ३. घोड़ाकेँ सबार फेरैत अछि–चलबैत अछि । (५७०) हे भगवान्, दीन जनकेँ हेरू–ताकू । (५७१) केरा ओ आम गोरैत अछि–निमुन्न करैत अछि जे पाकए । (५७२) १. चीनी पानिमे घोरैत अछि–मिलबैत अछि । २. खाट घोरैत अछि–नेबार वा सुतरी वा जौरसँ आच्छन्न करैत अछि । (५७३) जनसब खढ़ छोरैत अछि–कटैत अछि । (५७४) जंगलकेँ शिकारक हेतु झोरैत अछि–सञ्चालित करैत अछि । (५७५) नुआ रंगमे बोरलहुँ–डुबओलहुँ । (५७६) बिछाओन छोट अछि, पाएर मोरिकेँ–संकुचित कएकेँ सुतब । (५७७) कोठा चूनसँ ढौरल अछि–लिप्त अछि । (५७८) दूध पौरैत अछि–दहीक हेतु पात्रमे दैत अछि । दही पौरैत छी एहिठाम भाविनी संज्ञाक आश्रयण जानब ।

(५७९) थकर ★ ककबाप्रभृतिसँ केशक विभाग ।

(५८०) दकर ★ दकचिकेँ खाएब, यत्किञ्चिद्भागक त्यागपूर्वक पैघ वस्तु(आम्रादि)क भक्षण ।

(५८१) चिकर जोरसँ बाजब ।

(५८२) थुकर ★ थूशब्दपूर्वक उगिलब ।

(५८३) सुकर ★ नाकसँ कफादि विकारक वायुरेचनद्वारा त्याग ।

(५८४) हुकर अचैतन्यावस्थामे आन्तर आर्तिसूचक मन्दमन्द शब्द करब ।

(५८५) ढेकर उद्गार करब ।

(५८६) बोकर ★ वान्ति (वमन) ।

(५८७) झखर १. वार्द्धक्यजन्य विकारक प्राप्ति । २. सकल फलसँ वियुक्त होएब ।

(५८८) धोखर जलसंयोगसँ अपगम ।

(५८९) उगर उर्वरित होएब (शेष रहब) ।

(५९०) ओगर ★ समीपस्थितिपूर्वक रक्षण ।

(५९१) खँघर जलप्रवाहसँ कटब ।

(५७९) केश थकरैत छथि–ककबासँ केशक विभाग करैत छथि । (५८०) आम दकरैत छथि–किछु खाइत छथि किछु फेकैत छथि । (५८१) जयलाल चिकरैत छथि–जोरसँ बजैत छथि । (५८२) पान थुकरैत छथि–थू शब्दपूर्वक उगिलैत छथि । (५८३) कफ सुकरू–वायुरेचनद्वारा त्यागू । (५८४) पासी तारक गाछसँ खसल, चोट अधिक छैक, हुकरैत अछि– आन्तर वेदनासँ तत्सूचक मन्द-मन्द शब्द करैत अछि । (५८५) भोजनोत्तर लोक ढेकरैत अछि–ढेकार करैत अछि । (५८६) देवदत्त ज्वरमे बोकरैत छथि–वमन करैत छथि । (५८७) देव झा आब झखरलाह–वार्धक्यजन्य शरीरक ह्रास प्राप्त कएलैन्हि । (५८८) पोथी भिजल, आखर धोखरि गेलैक–अपगत भए गेलैक । (५८९) मधुर दश सेर उगरल–खर्च कए शेष रहल । (५९०) हम नेनाकेँ ओगरैत छी–लगमे बेसि रक्षा करैत छी । (५९१) उपर देने पानि खसलैक, तेँ पोखरि खँघरल–कटल ।

(५९२) उघर उद्घटित होएब ।

(५९३) मोचर ★ ऐँठब ।

(५९४) पछर १. पराजित होएब । २. श्रमसँ अक्षम होएब ।

(५९५) पजर प्रज्वलन ।

(५९६) बजर प्रवृत्ति ।

(५९७) मजर जर्ज्झरित होएब ।

(५९८) उजर बन्धनसँ सिद्ध वस्तुक विघटन ।

(५९९) कड़र मालक दाँत कड़कड़ाएब ।

(६००) खड़र १. हाँइ हाँइ लिखब । २. बाँटब । ३. परिष्कृत करब ।

(६०१) गुड़र ★ क्रोधजन्य आँखिक आस्फालन ।

(६०२) भुड़र ★ शुष्क खाद्य वस्तुक साक्षात् अग्निमे पाक ।

(६०३) उढ़र ★ स्वामिभावापन्न आन पुरुषक सङ्ग चल जाएब ।

(६०४) कतर ★ कैंचीसँ काटब ।

(६०५) धतर वृक्षक पसार ।

(५९२) अधलाह सतरञ्जीक आँचर उघरि जाइत छैक–उद्घटित भए जाइत छैक, अर्थात् बानसँ विमुक्त होइत अछि। ताग उघरल। (५९३) हाथ मोचरलैन्हि–ऐंठलैन्हि। (५९४) देवदत्त पछरलाह–पराजित भेलाह। (५९५) आगि पजरल–प्रज्वलित भेल। (५९६) आइ मधुकान्तक ओहिठाम चोरसब बजरल–प्रवृत्त भेल। (५९७) आम मजरल–मञ्जरित भेल। (५९८) घर उजरल–बन्धविमुक्त भेल। (५९९) ई बड़द कड़रैत अछि–दाँत कड़कड़बैत अछि। (६००) चीठी खड़रैत छथि–हाँइ हाँइ लिखैत छथि। २. जौड़ खड़रैत अछि–हाँइ २ बटैत अछि। ३. दरबाजा खड़रल अछि–खड़रासँ संशोधित कएल अछि। (६०१) आँखि गुड़रैत अछि–आस्फालित करैत अछि। (६०२) बदाम भुड़रैत अछि। लवंग भुड़रलक–अग्निपक्व कएलक। (६०३) रुपनाक स्त्री उढ़रि गेलैक–आन पुरुषक सङ्ग ओकर अधीन भए चलि गेलैक। ई स्त्री उढ़री थिक। (६०४) कागज कतरैत अछि–कैँचीसँ कटैत अछि। (६०५) फुटाह गाछ अधिक चतरैत अछि–अधिक बढ़ि पसरैत अछि। चतरी गेन्हारी चतरिकेँ अर्थात् पसरिकेँ परस्पर संबद्ध भए जाइत अछि।

(६०६) लतर	**लतीक पसार।**
(६०७) सतर	**शीघ्रतया सिद्धि।**
(६०८) सुतर	**सफलता प्राप्ति।**
(६०९) बिथर	**प्रसरण।**
(६१०) थोथर ★	**१. धार मूर्छित होएब। २. बालकक अतिचुम्बन।**
(६११) ओदर	**वियुक्त होएब।**
(६१२) सुधर	**१. यथोचित क्रियामे प्रवृत्ति। २. बाधासँ विनिर्मुक्त होएब।**
(६१३) उनर	**आकर्षणसँ अधिक फानक भए जाएब।**
(६१४) धफर(ड़)	**डेग पैघ करब।**
(६१५) सफर	**मालक सर्पदष्ट होएब।**
(६१६) झबर	**अधिकक नम्र भए रहब।**
(६१७) अभर	**किञ्चित् अङ्गमे संयुक्त होएब।**
(६१८) भभर	**शिथिलावयव भए खसब।**

(६०६) लतीसभ टाटपर वा गाछपर लतरैत अछि–पसरैत अछि। (६०७) अहाँकेँ काज नहि सतरैत अछि–शीघ्रतया कएल नहि होइत अछि। (६०८) हमर उद्योग

सुतरल–सुफल भेल। (६०९) वस्तुजात बिथरल अछि, तकरा ओरिआएकेँ राखू। (६१०) १. बसिलाक धार थोथरि गेल–मुरछि गेल, ओकरा पिजाउ। २. देवदत्त नेनाकेँ थोथरैत छथि–ओकरामे वारंवार मुख संयुक्त करैत छथि। (६११) मुइल चमरा देहसँ ओदरैत अछि–वियुक्त होइत अछि। (६१२) १. ई नेना आब सुधरल–यथोचित क्रियामे प्रवृत्त भेल। २. कार्य सुधरल–बाधासँ रहित भेल। (६१३) माठा उनरत–खैँचलासँ अधिक फानक होएत, तखन हाथमे पहिरल होएत। (६१४) धफरि(ड़ि)केँ चलू–डेग पैघ कए चलू। (६१५) महीसि सफरल अछि–सापसँ दष्ट अछि, मतीकेँ बजाउ। (६१६) वेश्याक देहमे गहना झबरल अछि–नमरल अधिक अछि। (६१७) हमरा पाएरमे साप अभरल–किञ्चित् भीरल, तैँ हम हटलहुँ। (६१८) बलाह माटिक महादेव पूजाक काल भभरि गेलाह–शिथिलावयव भए खसि पड़लाह।

(६१९) लेभर(ड़)	अधिक लागब।
(६२०) नमर	नम्र होएब।
(६२१) पलर	कोमलताप्रयुक्त पसरब।
(६२२) ओलर	आधिक्यप्रयुक्त उपरसँ खसब।
(६२३) पसर	प्रसरण।
(६२४) ससर	किञ्चित् घुसकब।
(६२५) बिसर ★	विस्मरण।
(६२६) उसर	१. क्रियाक शीघ्र संपत्ति। २. प्रवृत्त क्रियाक निवृत्ति।
(६२७) घोँसर ★	विस्मरण (निन्दाशब्द)।
(६२८) कहर	क्लेशसूचक शब्द।
(६२९) झहर	सशब्द पतन।
(६३०) हहर	क्षीण होएब।
(६३१) सिहर	१. विशरण (किञ्चित् फाटब)। २. शीतविकार।
(६३२) कुहर	क्लेशसूचक शब्द करब।

(६१९) वर्षामे अएलहुँ तैँ पाएरमे माटि लेभरल अछि–अधिक लागल अछि। (६२०) आमक गाछ फलक भारसँ नमरल अछि–नम्र भेल अछि। (६२१) केराकेँ पकना बहुत

दिन भेलैक तँ पलरल अछि–पलपल भए पसरल अछि। (६२२) लत्ती ओलरि गेल। (६२३) खरिहानमे धान पसरल अछि–प्रसृत भेल अछि। (६२४) एक्कापर मोटा ससरल जाइत अछि–किञ्चित् घुसकल जाइत अछि, खसए ने। (६२५) हम जे पढ़ल से बिसरलहुँ–विस्मृत कएल। रेलगाड़ीपर छाता बिसरल, उतारल नहि। (६२६) १. अहाँकेँ लिखब उसरैत अछि–शीघ्र होइत अछि। २. नाच-तमासा आइ उसरल–निवृत्त भेल। (६२७) ई पढ़ब-गुनब सभ घोँसरलैन्हि–बिसरलैन्हि, अर्थात् छोड़लैन्हि। (६२८) ई गाछसँ खसल, चोट अधिक छैक, कहरैत अछि–अन्तर्वेदनासूचक शब्द करैत अछि। (६२९) वर्षा झहरैत अछि–सशब्द ऊपरसँ पतित होइत अछि। (६३०) हमर देह दुःखसँ हहरि गेल अछि–क्षीण भए गेल अछि। (६३१) १. कच्चा देबाल सिहरल–किञ्चित् फाटल। २. जाड़सँ देह सिहरैत अछि–शैत्यजन्य विकारविशेष (रोमाञ्चादि) प्राप्त करैतअछि। (६३२) अधिक ज्वरमे लोक कुहरैत अछि–क्लेशसूचक शब्द करैत अछि।

(६३३) सम्हर	**विघटित नहि होएब।**
(६३४) नेआर ★	**इच्छा।**
(६३५) सकार ★	**स्वीकार।**
(६३६) घोँकार ★	**अतिसञ्चालनसँ मलिन करब।**
(६३७) अखार ★	**प्रक्षालन।**
(६३८) खखार ★	**कण्ठक भीतरसँ निःसारण।**
(६३९) पखार ★	**धोएब (प्रक्षालन)।**
(६४०) तेखार ★	**तेसरबेर हरसँ विदारण।**
(६४१) धोखार ★	**जलद्वारा हटाएब (जल टारिकेँ हटाएब)।**
(६४२) उगार ★	**उर्वरित करब (अवशेष राखब)।**
(६४३) खँधार ★	**जलप्रवाहसँ काटब।**
(६४४) उघार ★	**आच्छादनरहित करब।**
(६४५) उङार ★	**उद्वर्त्तन।**

(६३३) आब सब काज सम्हरल–विघटित नहि भेल अर्थात् संपन्न भेल। (६३४) हम नेआरैत छी–इच्छा करैत छी जे काशीवास करी। (६३५) ओ हजार रुपैआ देब सकारलैन्हि–स्वीकृत कएलैन्हि। (६३६) पोखरिक पानि घोकारू जनु–अतिसंचालनसँ तरक मल उखाड़ि मलिन जनु करी। (६३७) थारी अखारैत अछि–पखारैत अछि, अर्थात्

प्रक्षालित करैत अछि। (६३८) अहाँ कफ खखारू–कण्ठक भीतरसँ निस्सारित करू। (६३९) थारी पखारैत अछि–प्रक्षालित करैत अछि। (६४०) हरबाह खेत तेखारैत अछि–तेसरबेर हरसँ विदीर्ण करैत अछि। (६४१) घाटमे माटि लागल अछि तकरा धोखारू–जलसँ साफ करू जे धोती खिचबाक योग्य हो। (६४२) काजक हेतु एक लाख रुपैआ छल ताहिसँ एक हजार हम उगारल–उर्वरित कएल। (६४३) जलक वेग माटिकेँ खँधारलक–कटलक जाहिसँ जगह गहीँड़ भए गेल। (६४४) देह उघारू–आच्छादनरहित करू। हम मुह उघारिकेँ सुतैत छी। (६४५) नेनाकेँ सबदिन उङारबाक चाही–उकटन लगएबाक चाही।

(६४६) कचार ★	**अखारब (प्रक्षालन)।**
(६४७) बिचार ★	**विचारण।**
(६४८) खोँचार ★	**बाँससँ हुरेठब।**
(६४९) अछार ★	**पानिमे बीआ खसाएब।**
(६५०) छछार ★	**गृहावयव-लेपन।**
(६५१) पछार ★	**बजारब।**
(६५२) मछार ★	**मछारिसँ युक्त करब।**
(६५३) गजार ★	**पानिमे तृण सड़बाक हेतु हलकर्षण।**
(६५४) बजार ★	**पटकब।**
(६५५) भजार ★	**बटिखाराक ओ तामाआदिक जाँच।**
(६५६) निड़ार ★	**आँखिक अकृत्रिम आस्फालन।**
(६५७) गुड़ार ★	**आँखिक कृत्रिम आस्फालन।**
(६५८) बढ़ार ★	**संमार्जन।**

(६४६) धोती कचारल–अखारल। (६४७) अहाँ एहि विषयकेँ बिचारू–एहि विषयक विचार करू। (६४८) अछिआमे जरल मुर्दाकेँ खोचारलहुँ–बाँसक अग्रसँ ताड़ित कएलहुँ जे शीघ्र जरए। (६४९) हम धानक बीआ अछारल–पानिमे बाओग कएल। (६५०) घर छछारल–घरक भीत गोबर-माटिसँ उपलिप्त कएल। (३५१) हम चोरकेँ पकड़ि पछारलहुँ–बजारलहुँ। (६५२) खेत मछारैत अछि–मछारि (जलनिरोधमात्रार्थक कल्पित आरि) सँ युक्त करैत अछि। (६५३) धानक खेत गजारल–पानिमे तृण सड़बाक हेतु जोतल। (६५४) जयदेव सत्तू पहलबानकेँ बजारलक–पटकलक। (६५५) ई सेर भजारल अछि–दोसर सेरसँ ओजनमे जाँचल अछि। एहि पथिआक भजार कएल–जाँच कएल, आध

मन अटल। (६५६) कुकुर आँखि निड़ारिकैं–आस्फालित कएकैं मुइल। (६५७) तामसैं आँखि गुड़ारैत अछि–आस्फालित करैत अछि। (६५८) आँगन बढ़ारलक–बाढ़निसैं साफ कएलक।

(६५९) उढ़ार ★ स्वस्त्रीक भावसैं परस्त्रीकैं लए जाएब।

(६६०) ततार ★ लस्सा दए आगिसैं युक्त करब।

(६६१) सतार ★ शीघ्रतासैं संपादन।

(६६२) उतार ★ उत्तारण (उपरसैं हेठ करब)।

(६६३) सुतार ★ युक्त्या संपादन कए लेब।

(६६४) बिथार ★ पसारब।

(६६५) घैंथार ★ धुसबाक हेतु अतिप्रश्न।

(६६६) ओदार ★ त्वचाप्रभृति अत्यन्त संलग्नकैं खैंचि फराक करब।

(६६७) सुधार ★ उचित मार्गपर आरूढ़ कराएब।

(६६८) उनार ★ फान अधिक होएबाक हेतु आकर्षण।

(६६९) झमार ★ जोरसैं कम्पित करब।

(६७०) समार ★ जोतलकैं उनटा पुनः जोतब।

(६७१) पसार ★ प्रसारण (विस्तृत करब)।

(६५९) नट मौगीकैं उढ़ारैत अछि–अपन स्त्रीक भावैं लए जाइत अछि। (६६०) बेमाए ततारैत अछि–लस्सा दए अग्निसंयुक्त करैत अछि। (६६१) हम कार्य सभ सतारल–शीघ्रतया संपन्न कएल। (६६२) सीकसैं दही उतारलक–हेठ कएलक। (६६३) हम अपन काज सुतारलहुँ–युक्त्या संपन्न कए लेल। (६६४) नेना हाथ बिथारने अछि–पसारने अछि, मधुर दिऔक। (६६५) अहाँ बड़े घैंथारैत छिऐक–धुसबाक हेतु बहुत पुछैत छिऐक। (६६६) घाओक खैंठी ओदारिकैं–छोड़ाएकैं–मलहम लगाबी। (६६७) बिगड़ल नेनाकैं सुधारब– उचित क्रियापर आरूढ़ कराएब असंभव। (६६८) माठा उनारल जाएत–खैचिकैं अधिक फानक कएल जाएत, तखन पहिरल जाएत। (६६९) हमरा एक्का बड़े झमारलक–जोरसैं डोलओलक, तैं देह दुखाइत अछि। बोतलमे पानि दए झमारू तखन साफ होएत। (६७०) हरबाह खेत समारैत अछि–जोतल खेतकैं फेर उनटा जोतैत अछि। (६७१) ओछाओन पैघ अछि, पाएर पसारिकैं–प्रसृत कएकैं सुतू।

(६७२) ससार ★ बलात् घुसकाएब।

(६७३) बिसार ★ विस्मरण कराएब।

(६७४) उसार ★ समाप्त करब (उत्सारण)।

(६७५) घोंसार ★ बिसराएब (निन्दाशब्द)।

(६७६) निहार ★ तत्परतापूर्वक देखब।

(६७७) खेहार ★ विद्रावण।

(६७८) सम्हार ★ बाधासैं हटाए संपादन।

(६७९) पहिर ★ परिधान।

(६८०) निघुर ★ धर नम्र करब।

(६८१) ठिठुर शैत्यप्रयुक्त हस्तादिक त्वचासंकोचरूप विकारलाभ।

(६८२) निहुर धर नम्र करब।

(६८३) मचोर ★ जोरसैं ऐंठब।

(६८४) हँथोर ★ हँथोरिआ देब (अन्हारमे हाथसैं ताकब)।

(६७२) वायु उखड़ल अछि, ससारि दिअ–घुसकाए दिअ, अर्थात् अपना जगह पर बैसाए दिअ। पेट ससारू एहिठाम पेट शब्द उदरस्थ वायुमे लाक्षणिक जानब। (६७३) हमरा बुढ़ारी अवस्था बिसारलक–विस्मरण करओलक। (६७४) हम नाच तमासा उसारल–समाप्त कएल। (६७५) हम अहाँकैं सब बात घोंसारि देब–बिसराए देब (कोपोक्ति)। (६७६) विवाहमे सभलोक कन्याकैं निहारैत अछि–तत्परतासैं देखैत अछि। (६७७) कुकुर गीदड़कैं खेहारैत अछि–नैंगारैत अछि। (६७८) हम सभ काज सम्हारल–बाधासैं बचाओल। हम पिच्छड़मे खसए लगलहुँ परन्तु सम्हारलहुँ–खसलहुँ नहि। (६७९) हम धोती पहिरैत छी–परिहित करैत छी। (६८०) देवदत्त निघुरल चलैत छथि–धर नमाए चलैत छथि। (६८१) हाथ ठिठुरि गेल–शीतसैं त्वचा संकोच प्राप्त कएलक। (६८२) देवदत्त निहुरल चलैत छथि–धर नम्र कएने चलैत छथि। (६८३) हमर हाथ मचोरल गेल–ऐंठल गेल, तैं दुखाइत अछि। (६८४) अन्हार घरमे खाटतर हँथोरू–हँथोरिआ दिअ अर्थात् हाथसैं ताकू तखन लोटा भेटत।

(६८५) ममोर ★ ऐंचब।

(६८६) झरखर सकल पत्रक त्याग।

(६८७) सपहर मालक सापसँ दष्ट होएब ।

(६८८) सहिआर १. चेतब । २. ठीक करब ।

(६८९) पचकार अधिक तैलादिलेपन ।

(६९०) झटकार गमनमे शीघ्रता करब (झटझट डेग उठाएब) ।

(६९१) फटकार ★ लम्फलम्फा करब (वाह्याडम्बर करब) । निन्दा शब्द ।

(६९२) धिरकार ★ धिक्कार कहि गञ्जन ।

(६९३) ललकार ★ जोरसँ दबाड़ब ।

(६९४) हलकार ★ बहुत मालकेँ एकदिश लए जाएब ।

(६९५) चुचुकार ★ चुचु शब्दसँ विश्वस्त करब ।

(६९६) होहकार ★ चोरआदिक उद्देशेँ घोल करब ।

(६९७) बिहखार ★ छिद्रसँ युक्त करब ।

(६८५) वायु पेट ममोरैत अछि–ऐँचैत अछि, अर्थात् व्यथा करबैत अछि । (६८६) वसन्त समय गाछ झरखरैत अछि–सब पात छोड़ैत अछि । (६८७) गाए सपहरल अछि–सापक काटल अछि, मतीकेँ अनाउ । (६८८) हम पहिनहि सहिआरल–चेतल वा ठीक कएल । (६८९) हूराहूरीक (गोक्रीड़ाक) दिन चरबाह देहमे तेल पचकारैत अछि–अधिक लगबैत अछि । (६९०) अबेर भेल जाइत अछि, झटकारू–झट-झट डेग उठाउ जे शीघ्र पहुँची । (६९१) हुनका बड़ फटकार–अधिक बाह्याडम्बर । (६९२) ओकरा हम धिरकारलैक–धिक्कारेँ गञ्जित कएलैक । (६९३) शत्रुकेँ ललकारल–जोरसँ दबाइल । (६९४) मालकेँ हलकारैत अछि–एकट्ठा कए एकदिश लए जाइत अछि । (६९५) बड़दकेँ चुचुकारि–चुचु शब्द कहि विश्वस्त कए पकडू । (६९६) लोकसबं ककरा होहकारैत अछि–ककरा उद्देशेँ घोल करैत अछि ? होहकार भए रहल अछि । (६९७) तमासा देखबाक हेतु लोकसभ टाट बिहखारलक–छिद्रसँ युक्त कएलक ।

(६९८) परचार ★ निरोधसूचना ।

(६९९) बहटार ★ आन दिश लए जाएब ।

(७००) परतार ★ प्रतारण ।

(७०१) खटपार ★ दुःखेँ खाटपर शरीरक स्थापन ।

(७०२) हिलकोर ★ तरङ्गसँ टारब ।

(७०३) टकटोर ★ अन्धकारमे पुनःपुनः हाथ रोपब ।

(७०४) ढकढोर ★ अनुचितरूपेँ वस्तुसबक संचालन ।

इति रान्ताः

(७०५) ल ★ ग्रहण ।

(७०६) गल विलय ।

(६९८) हम तोहरा परचारैत छिऔक–निरोध करबाक सूचना दैत छिऔक, आब तोहर माल हमर उपद्रव नहि करए । (६९९) हुनक मोन हम बहटारैत छी–नाना प्रकारक गप्प कहि दोसरा दिश लए जाइत छी । (७००) नेनाकेँ परतारब–प्रतारण करब कोनो कठिन नहि । (७०१) जयवीर शोकसँ खटपारने–खाटपर शरीरक स्थापन कएने छथि । (७०२) समुद्रक तटमे राखल वस्तुजात हिरकोरल गेल–तरङ्गसँ टारल गेल । (७०३) अन्हार घरमे टकटोरैत–वारंवार हाथ रोपैत बहरएलहुँ । (७०४) ओ नेना वस्तुजात ढकढोरैत अछि–अनुचित रूपेँ संचालित करैत अछि, ओकरा मना करू ।

प्रथम भागमे रान्त धातु समाप्त

(७०५) देवनाथ पुस्तक लैत छथि–ग्रहण करैत छथि । ई पुस्तक हम काशीमे मोल लेल–मूल्यसँ गृहीत कएल । हम पुस्तक बेचि लेल एहिठाम ल धातुक ग्रहण अर्थ नहि से अनुप्रयोगप्रकरणमे कहि आएल छी । (७०६) मेघसँ खसल पाथर लगले गलैत अछि–विलीन भए जाइत अछि । जमल घृत रौदमे वा आगिपर गलत–पघिलत ।

(७०७) चल ★ चलन ।

(७०८) मल ★ मर्दन ।

(७०९) घाल ★ शस्त्रसँ आहत करब ।

(७१०) चाल ★ चालन (संशोधन) ।

(७११) पाल ★ पालन ।

(७१२) साल ★ काठक भीतर काठ पैसाएब ।

(७१३) छिल ★ तक्षण (अस्त्र खसाए काटब) ।

(७१४) मिल १. आश्लेष २. सुश्लिष्ट होएब ।

(७१५) हिल डोलब ।

(७१६) खुल — **गुप्त विषयक प्रकाश ।**

(७१७) घुल — **परिणामसँ गुलगुल होएब ।**

(७०७) अहाँ हमरा सङ्ग काशी चलू। चल धातु संस्कृते स्वरूपेँ गृहीत अछि। एकरासँ तिङ् प्रत्यय भूतमे अकर्मक धातुवत् अबैत अछि। ओ चललाह। कर्ममे प्रत्यय होइतहि अछि, अपने गाम चलल जाए। (७०८) साफ करबाक हेतु नोकर वर्तन मलैत अछि–मर्दित करैत अछि। (७०९) मारिमे देवसिंह घालि भेल–हथिआरसँ आहत भेल। (७१०) आँटा चालनिसँ चालैत अछि–संशोधित करैत अछि। (७११) माए नेना कैँ बहुत कष्टेँ पालैत अछि। (७१२) बरही चौकठि सालैत अछि–छेद कए चौकठिक पासि पैसबैत अछि। (७१३) चरबाह खुरपीसँ घास छिलैत अछि। (७१४) भरत रामचन्द्रसँ बनमे मिललाह–आश्लेष कएलैन्हि। "भेटब" अर्थमे मिल धातुक प्रयोग हिन्दीमे होइत अछि, तेँ हमरा रुपैआ मिलओ ई प्रयोग अशुद्ध थीक। कागजसँ रुपैआ नहि मिलैत अछि–एकविध नहि होइत अछि। (७१५) भूकम्पमे सभ हिलए लगैत अछि–डोलए लगैत अछि। बुढ़ारीमे दाँत हिलैत छैक। (७१६) ओ विषय खुलि गेल–गुप्त छल किन्तु आब प्रकाश भए गेल। (७१७) ई आम घुलत–गुलगुल होएत तखन खएबाक योग्य होएत।

(७१८) झुल — **आन्दोलित होएब ।**

(७१९) फुल — **विकारसँ मोट होएब ।**

(७२०) बुल — **टहलब ।**

(७२१) हुल ★ — **हठात् गमन ।**

(७२२) ठेल ★ — **हाथसँ धक्का देब ।**

(७२३) हेल — **अवगाहन ।**

(७२४) ओल ★ — **हाथक सञ्चालनसँ धान्यादिकेँ गर्दाक उपर आनब ।**

(७२५) खोल ★ — **बन्धमुक्त करब (मोचन) ।**

(७२६) छोल ★ — **फलकेँ त्वचासँ वियुक्त करब ।**

(७२७) झोल — **शुष्क चूर्णक वस्त्रसँ संचालन द्वारा संशोधन ।**

(७२८) डोल — **आन्दोलन (हिलब) ।**

(७२९) फोल — **खोलब (बन्धमुक्त करब) ।**

(७१८) गरम समय लोक मचकीपर झुलैतअछि–बसात लगबाक हेतु आन्दोलित होइत अछि। (७१९) हुनक देह फुलि गेलैन्हि। (७२०) जयदेव फुल तोड़बाक हेतु भिनसरुक पहर बुलैत छथि–एमहर-ओमहर चलैत छथि। (७२१) मन्दिरसँ हम बहराए लगलहुँ तावत् दर्शकक झुण्ड हुलि देलक–प्रवेश करए लागल, हमरा बहराएब कठिन भए गेल। (७२२) मेलामे सिड़हीपर यात्रीसभ हमरा ठेललक–हाथसँ धक्का देलक, तेँ खसलहुँ। (७२३) गङ्गामे हेलने–अवगाहन कएने धर्म छैक। जलमे हाथसँ खेबि उपर-उपर चलब अवगाहन कहबैत अछि। (७२४) धानमे गर्दा अधिक अछि तेँ कुट्टी लेनिहारिसभ ओलैत अछि–हाथसँ संचालन कए धान गर्दाक उपर अनैत अछि। (७२५) केबाड़ बन्द अछि, खोलू–उद्घाटन करू। घोड़ाकेँ खोलैत अछि जे चरए। (७२६) सितुआसँ सजमनि छोलैत अछि–खोँइचासँ रहित करैत अछि। बिना छोलने सिद्ध नहि होइतैक। (७२७) वैद्य औषधक चूर्ण झोलैत छथि–वस्त्रसँ संशोधित करैत छथि। (७२८) भूकम्पमे सभ डोलए लगैत अछि–आन्दोलित होअए लगैत अछि। (७२९) घर बन्द अछि, फोलू–खोलू, अर्थात् कबाड़ खोलू।

(७३०) तौल — **तराजूप्रभृतिसँ नाप ।**

(७३१) निकल — **बहिर्भाव ।**

(७३२) बिचल — **शिराक विचलन (अन्यथास्थिति) ।**

(७३३) छछल — **चिक्कनमे स्खलन ।**

(७३४) उछल — **उच्छलन (हठात् किञ्चित् ऊर्ध्वगमन) ।**

(७३५) बदल ★ — **विनिमय (वस्तुक हेरीफेरी करब) ।**

(७३६) छहल — **छछलब ।**

(७३७) टहल — **विहारार्थ मन्द-मन्द चलब ।**

(७३८) दहल — **धैर्यत्याग ।**

(७३९) निकाल ★ — **निष्कासन ।**

(७४०) उगिल ★ — **उद्गिरण (मुहसँ फेँकब) ।**

(७४१) पघिल ★ — **घनीभावक त्याग ।**

(७४२) उझिल ★ — **पात्रस्थित धान्यादिक अधःपातन ।**

(७३०) धान तौलैत अछि। निकतीसँ सोन तौलल, एक भरि भेल। (७३१) बतहा एहि ठामसँ निकलल–बहार गेल अर्थात् चल गेल। (७३२) मोर पड़बाक कारणेँ शिरा बिचलल–जेना रहबाक चाही ताहिसँ अन्यथा भए गेल। (७३३) कजरीबाला सिढ़ीपरसँ

पाएर छछलल–स्खलित भेल। (७३४) वर्षा पड़ैत पोठी माछ पानिमे उछलैत अछि–उपर जाइत अछि। (७३५) धानसँ गम्हरी बदलैत अछि–धान दएकँ गम्हरी लैत अछि। (७३६) कजरीपर पाएर छहलत–छछलत। (७३७) प्रातःकाल हम नित्य टहलैत छी–विहारार्थ मन्द-मन्द चलैत छी। (७३८) संकटमे सबक मन दहलैत अछि–धैर्यक त्याग करैत अछि। भवदत्त कहुखन नहि दहलताह–अधीर नहि होएताह। (७३९) ओहि नोकरकेँ हम निकालल–निष्काशित कएल। (७४०) कुसिआरक रस खाए सिठ्ठी उगिलैत अछि–मुहसँ फेँकैत अछि। (७४१) घीउ जमल अछि, रौदमे पघिलत–द्रवीभूत होएत। (७४२) बोरासँ धान उझिल–नीचाँ खसा। पात्रकेँ उनटाए धान्यादि खसाएब उझिलब थीक।

(७४३) धकेल ★	**धक्का दए ठेलब।**

इति लान्ताः

(७४४) कस ★	**१. कसौटीमे जाचक हेतु घर्षण। २. अश्लथ बन्धन। ३. घोड़ाप्रभृतिक सज्जीकरण।**
(७४५) खस	**स्खलन (पतन)।**
(७४६) गस ★	**सक्त करब।**
(७४७) घँस ★	**घर्षण।**
(७४८) धस	**नीच होएब।**
(७४९) बस	**निवास।**
(७५०) भस	**१. जलमे पतित होएब। २. तृणाधिक्यादिसँ हीन होएब।**
(७५१) हँस	**हास्य।**
(७५२) पिस ★	**पेषण।**
(७५३) झुस ★	**भयोत्पादनपूर्वक द्रव्यग्रहण।**

(७४३) मेलामे लोक धकेलल जाइत अछि–धक्कासँ ठेलल जाइत अछि।

प्रथम भागमे लकारान्त धातु समाप्त

(७३४) १. सोन कसलासँ–कसौटीपर घर्षण कएलासँ जाचल जाएत। २. बोरामे धान कसल अछि–अश्लथ बद्ध अछि। ३. घोड़ा कसल अछि–सुसज्जित अछि। (७४५) घोड़ासँ सवार खसल। बिहारिमे घर खसल–पतित भेल। (७४६) मालामे फूल गसल अछि–निविड़ संबद्ध अछि। (७४७) चानन घँसैत छी–रगड़ैत छी। (७४८) नव भरल

भूमि वर्षा भेलापर धसैत अछि–नीच भए जाइत अछि। (७४९) लोक उच्च भूमिपर बसैत अछि–निवास करैत अछि। (७५०) निर्मल पानिमे भसल, हमहि जाए भसाओल। (७५१) भवदेव हँसैत छथि–हास्ययुक्त होइत छथि। (७५२) सरबतक हेतु धनी पिसैत अछि। (७५३) अधर्मी अधिकृत लोकसँ रुपैआ-पैसा झुसैत अछि–भय उत्पन्न कराए डरेँ देल रुपैआ लैत अछि।

(७५४) ठुस ★	**बलात् प्रवेश कराएब।**
(७५५) दुस ★	**निन्दा।**
(७५६) धुस ★	**गञ्जन।**
(७५७) रुस	**रुष्ट होएब।**
(७५८) हुस	**१. लक्ष्यमे असंबद्ध होएब। २. अवसराभावसँ अलब्ध होएब।**
(७५९) ठेस	**चलबाक काल लोष्ठादिमे पाएर आहत होएब।**
(७६०) ढेँस	**मालक उकासी करब।**
(७६१) नेस ★	**दीपक ज्वालन।**
(७६२) पेस ★	**पैसाएब।**
(७६३) भेँस ★	**देहमे अस्त्रक भोँकब।**
(७६४) रेस ★	**फुटल द्रव्यक मरम्मति करब।**

(७५४) मुसक बिहरिमे गोबरमाटि ठुसैत अछि–बलात् प्रविष्ट करैत अछि। (७५५) ओ हमरा दुसलैन्हि–हमर निन्दा कएलैन्हि। (७५६) अटपटांग बजनिहार सभामे धुसल जाइत छथि–गञ्जित होइत छथि। (७५७) ओ नेना रुसल अछि–रुष्ट भेल अछि, मधुरसँ ओकरा बौँसू। (७५८) १. मधुकरबा पड़ाएल जाइत चोरकेँ झटहा मारलक परन्तु झटहा हूसि गेलैक–चोरपर नहि गेलैक। २. हम पछाति अएलहुँ तेँ भोज हुसल–अवसराभावसँ भोज अलब्ध भेल अर्थात् नहि खाए सकलहुँ। (७५९) १. पाएर पजेबामे ठेसल–आहत भेल। २. हम ठेसलहुँ–हमर पाएर पजेबामे लगलासँ हम आहत भेलहुँ। (७६०) बड़द ढेँसैत अछि–उकासी करैत अछि। यद्यपि उकासी करब मालमे नहि बाजल जाइत अछि तथापि मनुष्यकेँ उकासीमे शब्द होइत छैक जाहि हेतुक ताही हेतुक मालहुँकेँ शब्द होइत छैक से ढेँसब कहबैत अछि। (७६१) दीप नेसैत अछि–प्रज्वलित करैत अछि। (७६२) बाती बतरखमे पेसैत अछि–पैसबैत अछि। (७६३) भाला देहमे भेँसलकैक–भोकलकैक। (७६४) फुटल लोटा रेसलापर निचू होएत।

(७६५) लेस ★ दीपक ज्वालन।

(७६६) पोस ★ पोषण।

(७६७) झौँस ★ झरकाएब।

(७६८) बौँस ★ रुसलक आश्वासन।

(७६९) बकस ★ अभयदान।

(७७०) सकस अवकाशशून्य होएब।

(७७१) उकस हटब।

(७७२) हँपस अनुचित अधिक लेब।

(७७३) दमस ★ मेघादिक ध्वनि।

(७७४) समस किञ्चित् सार्द्र होएब।

(७७५) परस ★ परिवेषण।

(७७६) निरस ★ असाध्यताप्रयुक्त त्याग।

(७७७) जँघास ★ अधिक काल जाएब-आएबसँ परिच्छिन्न करब।

(७७८) अख्यास ★ तर्क—स्मरण।

(७६५) दीप लेसैत अछि—नेसैत अछि। (७६६) गाए पोसबाक चाही, पक्षी नहि पोसी। (७६७) तेलक अभावसँ आइ तरकारी झौँसले अछि—झरकले अछि। (७६८) नेना रुसल अछि, ओकरा मधुरसँ बौँसू—प्रसन्न करू। (७६९) हम विशेष अपराधी छलहुँ परञ्च मालिक बकसि देलैन्हि—अभय देलैन्हि। (७७०) कोनो दिन रेलगाड़ीमे लोक सकसल रहैत अछि—अवकाशशून्य भेल रहैत अछि। (७७१) उकसिकँ बैसू—किंजित् घुसकि बैसू। नेना उकस-पाकस करैत अछि। (७७२) कनिएँ लेअए कहबैन्हि तँ हँप(फ)सताह—अधिक लए लेताह। (७७३) मेघ दमसैत अछि—शब्द करैत अछि। (७७४) नुआ समसल अछि—किञ्चित् आर्द्र अछि। (७७५) न्योतहारीलोकनि बैसलाह, आब परसू—परिवेषण करू। (७७६) ओहि रोगीकैँ वैद्य निरसलैन्हि—असाध्यता बूझि छोड़ि देलैन्हि। (७७७) ई रास्ता हमरा जँघासल अछि—अधिक गतायातसँ सुगम अछि। (७७८) हमरा अख्यास नहि अछि—स्मरण नहि अछि जे हम कतेक रुपैआ लेल।

(७७९) बारेस ★ वर्षण।

(७८०) बिहुँस १. ईषद्धास। २. विदीर्ण होएब।

(७८१) उधेस ★ यथावत् राखलकेँ अयथावत् करब।

(७८२) घटोस ★ घटघट कए अधिक जल पीअब।

(७८३) ढकोस ,, ,, ,, ,,

इति सान्ताः

(७८४) कह कथन।

(७८५) ढह उच्च दृढ़ वस्तु(भित्त्यादि)क पतन।

(७८६) बह १. बसातक चलब। २. प्रवाह। ३. गाड़ीआदिमे वृषभादिक चलब।

(७८७) मह मथन।

(७८८) रह स्थिति।

(७७९) मेघ बरिसैत अछि—वर्षा करैत अछि। (७८०) १. ओ आनन्दसँ बिहुँसैत छथि—मन्द-मन्द हँसैत छथि। २. जगह बिहुँसि गेल अछि—किञ्चित् विदीर्ण भए गेल अछि। (७८१) नारक टाल झुकि गेल अछि, ओकरा उधेसिकेँ—उजारिकेँ ठीक करू। नेना वस्तुजात उधेसलक—एमहर-ओमहर कएलक। (७८२-३) अधिक पिआसल लोक पानि घटोसैत अछि—घट २ कए पीबैत अछि। ई निन्दा शब्द थीक।

प्रथम भागमे सान्त धातु समाप्त

(७८४) अहाँ की कहल ? हम कहलहुँ जे अहाँ जाउ। (७८५) भीत ढहल—खसल। हुनक गौरव ढहलैन्हि इत्यादि प्रयोग नाशादि अर्थमे लाक्षणिक जानब। (७८६) १. बसात बहैत अछि, तेँ ठंढा समय अछि। २. धारमे जल बहैत अछि। घाओ बहल। पीजु बहैत अछि। ३. बड़द बहैत अछि। (७८७) दूध महैत अछि, जे नेनु बहार हो। (७८८) एहिठाम हम रहब—संस्कृत स्थास्यामि।

(७८९) लह १. एक दिस नीच होएब। २. व्यापारक साफल्य।

(७९०) सह १. भोजननिवृत्ति। २. सहन।

(७९१) चाह इच्छा।

(७९२) डाह ★ जारब, भस्मीकरण।

(७९३) ढाह ★ उच्चक क्रमिक भङ्ग करब।

(७९४) थाह ★ तलक स्पर्श करब, अस्पृश्य तलसँ।

(७९५) बाह पशुस्त्रीक पुंपशुसंबन्ध।

(७९६) लाह ★ लाहसँ जोड़ब।

(७९७) साह ★ किञ्चित् घुसकाएब।

(७९८) बिह ★ रोपल धानकेँ बीच-बीचमे फुटाएब।

(७९९) कुह ★ क्लेश देब।

(८००) गुह ★ सटाएब।

(८०१) दुह ★ दोहन, चुटकीसँ खैंचि-खैंचि भीतरक वस्तु बहार करब।

(७८९) १. घर लहल अछि–यत्किञ्चित् भागमे नीच भए गेल अछि। २. ई उद्योग हमरा लहल–सफल भेल। (७९०) १. हम एकादशीकेँ सहैत छी–भोजन नहि करैत छी। २. ई अपराध हम सहलहुँ–सह्य कएलहुँ। (७९१) अहाँ की चाहैत छी–कोन वस्तुक इच्छा करैत छी? (७९२) मन्नूलालक घर चोर डाहलकैन्हि–भस्म कएलकैन्हि (७९३) देबाल ढाहैत छी–तोड़ैत छी। (७९४) पोखरि थाहल, दश हाथ पानि भेल। ई पोखरि अथाह अछि –बिना डुबने अस्पृश्यतल अछि। (७९५) पाड़ी बाहल–पाड़ासँ संगत भेल। (७९६) फुटल लहठी लाहैत अछि–आगि लगाए संयुक्त करैत अछि। (७९७) खाटकेँ उत्तर साहू, तखन दच्छिन दिस जगह फएल होएत। (७९८) गृहस्थ फुटबासँ पूर्वहिँ धान बिहैत अछि–फुटबैत अछि। (७९९) अहाँ लोककेँ बड़े कुहैत छिऐक–क्लेश दैत छिऐक। (८००) मालाक फूल गुहैत छी–चुटकीसँ सटबैत छी। (८०१) गाए दुहैत अछि। पटिआक तानी दुहैत छी।

(८०२) खेह ★ जनौक सोटब।

(८०३) जोह ★ अन्वेषण।

(८०४) सोह ★ फलकेँ त्वचारहित करब।

(८०५) चिन्ह ★ चिन्हसँ जानब।

(८०६) बिन्ह ★ कीटक दंशन।

(८०७) औन्ह ★ अधोमुख करब।

(८०८) उगह ★ उद्वहन।

(८०९) निबह ★ निर्वाह।

(८१०) उड़ाह ★ १. नवीन मृद्भाण्डकेँ कार्यमे लगाएब। २. कूपादिक उद्धार।

(८११) निबाह ★ संपादन।

(८१२) सराह ★ उत्तमतया निश्चित करब।

(८१३) ओराह ★ अशुष्क सत्वच अन्नक साक्षात् आगिमे पाक।

(८१४) उसाह ★ कनेक उपरकेँ साहब।

(८०२) ई जनौ खेहल नहि अछि–सोटल नहि अछि। (८०३) लोक अपन प्रियवस्तु जोहैत अछि–ओंकर अन्वेषण करैत अछि। (८०४) केरा सोहू–खोइचासँ वियुक्त करू। (८०५) हम रत्न चिन्हैत छी। हम गङ्गाधर शास्त्रीकेँ चिन्हैत छलिऐन्हि। (८०६) बिरनी बिन्हलक–दंशन कएलक। (८०७) तसला औन्हिकेँ–अधोमुख कए राखू। (८०८) भरिआ भार उगहैत अछि–कान्हपर राखि अन्यत्र लए जाइत अछि। गदहा ऊस उगहैत अछि। (८०९) ततबा अन्न भेल जे भरिवर्ष निबहब–निर्वाह करब। (८१०) माटिक भाण्ड तौला उड़ाहल–पाकमे लगाओल। (८११) हमर काज भगवान निबाहताह–संपादित करताह। (८१२) हम कार्य करएबामे जयदेवकेँ सराहैत छी–योग्यतया निश्चित करैत छी। ई धातु प्रायः हिन्दीसँ आएल अछि। (८१३) बदाम ओराहू–काँच छिमड़ि लागल आगिमे पकाउ। ओरहा खएबामे नीक होइत अछि। (८१४) चार उसाहू, तखन बरी पर चढ़त।

(८१५) बेसाह ★ नित्य खाए अन्नक क्रयण।

(८१६) परिह ★ पहिरब (परिधान)।

(८१७) सनोह ★ मालकेँ कतबा दूध होइत अछि तकर जाँच।

(८१८) सिसोह ★ सुड़रब।

इति हान्ताः

(८१९) तु १. फलक रोगसँ खसब २. नक्षत्रक प्रवेशदिन बुन्द-मात्रक पातन।

(८२०) टो ★ फलकेँ पक्वतादिक जाँचक हेतु दबाएब।

(८२१) धो ★ प्रक्षालन (जलसँ साफ करब)।

(८२२) बो ★ बाओग करब।

(८२३) फो ★ बन्धमुक्त करब।

(८२४) हो उत्पत्ति ।

इति स्वरान्ताः

इति धातुपाठमे प्रथम भाग समाप्त

(८१५) हमरा बेसाह लागल अछि–नित्य अन्नक कीनब चलैत अछि। हम चाउर बेसाहैत छी। अहाँ रोग बेसाहि आनल इत्यादि लाक्षणिक जानब। (८१६) नव धोती परिहैत अछि–पहिरैत अछि। (८१७) महीसिक दूध सनोहैत छी–कतबा दूध होइत छैक से नपैत छी, महीसि मोल लेबाक अछि। (८१८) नेना धान सिसोहैत अछि–सुड़ैत अछि।

प्रथम भागमे हान्तधातु समाप्त

(८१९) १. विपाकसँ आमक टकोरा तुऔत अछि–खसैत अछि। २. हस्त नक्षत्र तुअल–प्रथम दिन बुन्दपात कएलक। (८२०) कटहर टोऐत छी–हाथसँ दबैत छी जे पाकल अछि की नहि। (८२१) धोती धोऐत अछि–जलसँ निर्मल करैत अछि। (८२२) धान बोअल–बाओग कएल। (८२३) ताला फोअल–बन्धमुक्त कएल। (८२४) १. व्यापारसँ लोक शीघ्र धनी होइत अछि। २. कार्य होइत अछि [कार्य प्रवर्तते]।

प्रथम भागमे स्वरान्त धातु समाप्त

प्रथम भागो समाप्त भेल

द्वितीय भाग

अथ जकादिधातु

(८२५) जक ★ **तराउपरी ढेरी करब ।**

(८२६) तक ★ **१. निरीक्षण । २. अन्वेषण ।**

(८२७) झँक ★ **भात सिद्ध भेलापर तत्काल पात्रसँ नीचामे ढेरी करब ।**

(८२८) टँक ★ **दूर-दूर पर सीअब ।**

(८२९) थक **श्रान्त होएब ।**

(८३०) पक **१. रोटीक सिद्ध होएब । २. फलक साक्षात् अग्निमे पांक । ३. परिणत होएब । ४. शरीरावयक अग्नितापज विकार ।**

(८३१) फँक ★ **१. सूँड़ाक खाएब । २. भूजाप्रभृति मुहमे फेँकि-फेँकि खाएब।**

(८३२) हँक ★ **अश्वादिक प्रेरण ।**

(८३३) चख ★ **चीखब (जाँचक हेतु खाएब) ।**

(८३४) मख ★ **लगबा योग्य वस्तुक संपर्क ।**

आब द्वितीय भाग आरम्भ भेल। एहिमे अब, अल इत्यादि प्रत्ययसँ पूर्व उपधाकेँ दीर्घ कहल अछि। (८२५) अहाँ मडुआ काटि जाकब–ढेरी करब। हम जाकल, जकलासँ गुमैत छैक तखन मिड़बामे सुकरता होइछ। लकड़ी सभ जाकल अछि–तराउपरी कए राखल अछि। (८२६) १. हम अहाँक मुह तकैत छी। २. वस्तु हराएल अछि, ओकरा ताकू–अन्वेषण करू। (८२७) एक खखड़हरक भात झाँकल–पात्रसँ बहार कए नीचामे राखल। दोसराक आब झाँकब। (८२८) दरजी पहिने अंगा टँकैत अछि–दूर २ सीबैत अछि, पश्चात् कलसँ सिबैत अछि। (८२९) चलैत २ हम थकलहुँ– श्रान्त भेलहुँ। अहाँकेँ थाकनि नहि होइत अछि। (८३०) १. सोहारी पकैत अछि–अग्नितापसँ बनैत अछि। २. सानाक हैतु भाँटा पकैत अछि। ३. आम पाकल–परिणत भेल। ४. हमर हाथ

पाकल–अग्निसँ तप्त भेल। (८३१) १. सूड़ा चाउर फँकलक। २. हम लाबा फाँकल। (८३२) बड़द हँकि–प्रेरित कए लए जो। तोँ माल सभ हाँक। (८३३) मधुर चाखू जे केहन अछि। (८३४) ओमहर देने थाल माखब–थालसँ युक्त होएब।

(८३५) रख ★ १. स्थापन। २. रक्षण।

(८३६) जग जागरण।

(८३७) तग ★ तुराइप्रभृतिक तूरक अविघटनार्थ सीअब।

(८३८) धँग ★ पाएरसँ आक्रमण।

(८३९) धङ ★ ,, ,,

(८४०) पग ★ सिरकासँ युक्त करब।

(८४१) पँग ★ सभ ठारि काटब (ठारि काटि ठुट्ठ करब)।

(८४२) पङ ★ ,, ,,

(८४३) लग १. युक्त होएब। २. निसा करब। ३. पन्हाएब। ४. प्रवृत्ति। ५. जरब। ६. व्यय। ७. सुश्लिष्ट होएब। ८. उत्पत्ति। ९. अपेक्षित होएब। १०. इष्ट होएब, इत्यादि अनेक अर्थ।

(८३५) १. अहाँ पुरान धान रखैत छी–स्थापित करैत छी, आब हमहु राखब। २. हमर गाछी देबना रखैत अछि–रक्षा करैत अछि। ओ सदाक हेतु हमर रखबार–रक्षक अछि। (८३६) हम एक बजे रातिमे जगलहुँ, आन केओ जागल नहि छल। (८३७) दरजी तुराइ तगैत अछि–दूर २ कँ सीबैत अछि। (८३८) पसरल नुआकेँ नेना धँगैत अछि–पाएरसँ आक्रान्त करैत अछि, लए आउ। (८३९) नीपल खरिहान मालसभ धङैत अछि। (८४०) मखान पगैत अछि–सिरकासँ युक्त करैत अछि। (८४१-४२) सीसोक ठारि पँगैत अछि वा पङैत अछि–कटैत अछि। सीसोसभ पाँगल वा पाङल गेल–ठारि काटि ठुट्ठु कएल गेल। (८४३) १. पाएरमे थाल लागल–संयुक्त भेल एवं दाग लागल। २. हमरा भाँग लागल अछि–निसा कएने अछि। हफीमक लागि–निसा। ३. गाए लगैत अछि–पन्हाइत अछि। आइ महीँसि नहि लागल। ४. हम काजमे लागल छी–प्रवृत्त छी। ५. पानि कम पड़बाक कारणेँ दालि लागि गेल–जरि गेल। ६. तीर्थयात्रामे हजार रुपैया लागल–खर्च भेल। ७. हमरा श्लोकक अर्थ नहि लगैत अछि–सुश्लिष्ट नहि होइछ। ८. हमरा भूख लागल अछि–उत्पन्न अछि। खएलाक उत्तर पिआस लागत–उत्पन्न होएत। ९. एहिमे बहुत यत्न लागल–अपेक्षित भेल। १०. अहाँक आँखि लाल लगैतअछि–दृष्ट होइछ। ई धातु

पदविशेषसमभिव्याहारवशात् ओ प्रकरणवशात् आनो अनेक अर्थक बोधक होइत अछि–शक्तिसँ वा लक्षणासँ। यथा, आँखि लागल–किञ्चित् निद्रा भए गेल वा असंभाव्य अतिशय बुझल। हमरा किछु खेत हाथ लागल–प्राप्त भेल। हमर हाथ लागल अछि–कार्यमे व्यापृत अछि। चक्कू लागल–कटलक।

(८४४) टँग ★ निराधार राखब।

(८४५) टँङ ★ ,,

(८४६) धँग ★ पाएरसँ आक्रमण।

(८४७) धङ ★ ,,

(८४८) पँग ★ १. शाखाक छेदन। २. छिन्नशाखीकरण।

(८४९) पङ ★ ,, ,,

(८५०) भँग ★ १. खण्ड करब। २. सीकक निर्माण।

(८५१) भङ ★ ,,

(८५२) मँग ★ याचन।

(८५३) मङ ★ ,,

(८५४) लँघ ★ लङ्घन।

(८५५) अँच ★ इन्धनयोग।

(८५६) जच ★ परीक्षण।

(८४४-४५) सुखएबाक हेतु गाछमे धोती टँगैत अछि। करीन टाङिकेँ राखू। (८४६-४७) साग बाओग अछि, धाँगी जनु। नूआ सुखाइत पसरल अछि, ओकरा माल धाङए नहि। (८४८-४९) सीसोक ठारि पाँगल वा पाङल–काटल। सीसोगाछ पाँगल वा पाङल–छिन्नशाख कएल। (८५०-५१) १. सुपारी भँगैत अछि वा भङैत अछि–खण्डित करैत अछि। २. सीक भँगैत अछि वा भङैत अछि–बनबैत अछि। (८५२-५३) प्रजा सम्राटसँ स्वराज्य मँगैतअछि वा मङैतअछि–स्वराज्यक याचना करैतअछि। (८५४) हनुमान् समुद्र लँघलैन्हि–समुद्रक लंघन कएलैन्हि। (८५५) तेहड़ामे जारन आँचू–युक्त करू। (८५६) सोन कसौटीमे जाचल जाइत अछि–परीक्षित होइत अछि।

(८५७) नच ★ नर्तन।

(८५८) पच ★ त्वचाक भीतर सूचीसँ प्रवेशन।

(८५९) कठ ★ हाथक निचला भागसँ घृतादिक लेब।

(८६०) चँछ ★ तीक्ष्ण वस्तुक आघर्षणसँ त्वचाक विघटन।

(८६१) बछ ★ अनेक प्रकारकसँ एक प्रकारक वस्तुक पृथक्करण।

(८६२) बज व्यक्त वा अव्यक्त वचन।

(८६३) भज अनेक न्यूनमूल्य ग्रहणपूर्वक देल जाएब।

(८६४) भँज ,, ,,

(८६५) मज ★ संघर्षणसँ निर्मलीकरण।

(८६६) सज ★ सुसज्जित करब।

(८६७) बझ मध्यमे फँसब।

(८६८) कट ★ १. छेदन। २. यापन।

(८६९) चट ★ अवलेहन।

(८७०) छँट ★ उखरिमे मुसरक चोटसँ साफ करब।

(८५७) उत्सबमे नटुआ नचैत अछि। (८५८) पचनिआ नेनाकेँ पचैत अछि। (८५९) जमल घृत काछैत छथि–हाथक निचला भाग लगाए उद्धृत करैत छथि। (८६०) काँटसँ देह चाँछल गेल, शोणितो बहल। (८६१) बीआक हेतु बोझसँ मालभोग धान बाछू–पृथक् करू। (८६२) मनुष्य अपना भाषामे बजैत अछि–व्यक्तवर्णक उच्चारण करैत अछि। बाजा बजैत अछि–अव्यक्तध्वनि करैत अछि। (८६३-६४) रुपैआ भजल वा भँजल–न्यूनमूल्यक बहुद्रव्यग्रहण-पूर्वक देल गेल। (८६५) लोटा माजू जे साफ हो। (८६६) मन्दिर उत्सवदिनमे सजल रहैत अछि–सुसज्जित रहैत अछि। (८६७) जालमे पक्षी बझल–जालक मध्यमे फँसल। (८६८) जारनक हेतु गाछ कटैत अछि–गाछक छेदन करैत अछि। (८६९) कुकुर माँड़ चटैत अछि। बहार कए जीहसँ ग्रहण चाटब भेल। (८७०) अँकड़ा चाउर साफ करबाक हेतु छँटैत अछि–उखरिमे मुसरसँ आहत करैत अछि। छाँटल चाउर छँट्टा कहाओल जाइत अछि।

(८७१) झँट ★ १. सीसमे लागल अन्नक उच्च वस्तुपर आघातसँ पृथक्करण। २. बाढ़निआदिसँ आघात।

(८७२) डँट क्रोधसँ उच्च स्वरेँ मना करब।

(८७३) ... व्याप्त होएब।

(८७४) फट विदीर्ण होएब।

(८७५) फँट ★ विभाग।

(८७६) बँट ★ १. वितरण। २. विभाग।

(८७७) सट ★ संयुक्त करब।

(८७८) ठठ ★ ठाठक निर्माण।

(८७९) सठ ★ पात्रमे ओरिआएकेँ राखब।

(८८०) सँठ ★ ,, ,, ,,

(८८१) फँड़ ★ नामानामी विभाग।

(८८२) भँड़ ★ रहस्यक प्रकाश कए देब।

(८८३) जँत ★ दाबब।

(८८४) दँत दाँतसँ युक्त होएब।

(८७१) १. धान झँटैत अछि–आघातसँ पृथक् करैत अछि। २. झट्टासँ घर छारल। बाढ़निसँ भेम्हकेँ झाँटू–आहत करू। (८७२) नेनाकेँ डाँटू– उच्च स्वरेँ मना करू जे फेर एहन कार्य नहि करए। (८७३) हमर खेत पटैत अछि–जलसँ व्याप्त होइत अछि, अहाँक पाटल। (८७४) धोती बीचसँ फाड़ू–विदीर्ण करू। हमर अङ्गा फाटल। (८७५) चारि गोटाक बोनि एकट्ठा छैक तकरा फाँटि दिऔक–विभक्त कए दिऔक। (८७६) १. दीन-दुखीकेँ अन्न बटबारा–वितरण करैतछथि। २. हमरा दुहू भाइक वस्तुजात बाँटि दितहुँ–विभक्त कए दितहुँ से नीक होइत। (८७७) स्त्रीगण कपारमे टिकुली सटैत अछि। गोसाउनिक कोठामे आरत साटू। (८७८) हम चार ठाठल–निर्मित कएल। (८७९-८०) सनेस साँठू–ओरिआएकेँ पात्रमे राखू। (८८१) आम फाँड़ल–दू खण्ड बनाओल। एकर फाँडा अँचार बनाएब। (८८२) हुनका कहबैन्हि तँ सभ बात भाँड़ि देताह–प्रकाश कए देताह। (८८३) थाकल छी, पाएर जाँतू–दबाउ। (८८४) ई बाछा दाँतल–दाँतसँ युक्त भेल।

(८८५) गथ ग्रन्थन।

(८८६) गँथ ,,

(८८७) नथ बन्धनार्थ नासिकाकेँ छिद्रयुक्त करब।

(८८८) पथ ★ १. एकाग्र राखब। २. चिपड़ीक निर्माण।

(८८९) पद पर्दन (गुदरव)।

(८९०) लद ★ भरती करब ।

(८९१) लध बिनबाक वस्तुक आरम्भ (तानी दुरुस्त करब) ।

(८९२) सध ★ सोझ होएबाक हेतु दाबिकें राखब ।

(८९३) अन ★ आनयन ।

(८९४) कन क्रन्दन ।

(८९५) छन ★ १. वस्त्रादिसँ परिशोधन। २. दुहू पाएर एकट्ठा कए बान्हब ।

(८९६) जन ★ बुझब ।

(८९७) ठन ★ प्रारम्भ करब ।

(८८५-८६) भगवानक हेतु फुलक माला गथैत छी वा गँथैत छी । स्त्रीगण हारी गाँथि पहिरैत अछि । (८८७) ई बड़द नाथल अछि–नाकमे छिद्रसँ युक्त अछि । (८८८) १. कान पाथि–एकाग्र कए सुनैत छी जे कोन शब्द अबैत अछि । २. चिपड़ी पथैत अछि–बनबैत अछि । (८८९) दुष्ट लोक नहि किछु कए सकए तँ सिरामे पादिओ दिअए। (८९०) गाड़ी लादल अछि–भरती अछि। धान लदैत छी–भरती करैत छी। (८९१) पटिआ लधैत अछि–तानी दुरुस्त करैत अछि, अर्थात् पटिआ आरम्भ करैत अछि । (८९२) टेढ़ बाँस सधैत अछि–दाबिकेँ रखैत अछि जे सोझ हो। ठेँगा साधि कैँ सोझ कएल। (८९३) भानसक हेतु जारन अनैत अछि–लबैत अछि । हम आगि आनल । (८९४) खएबालए नेना कनैत अछि–क्रन्दन करैत अछि। (८९५) गुरु बनाबी जानि पानि पीबी छानि–वस्त्रसँ संशोधित कए । (८९६) हम शास्त्र जनैत छी–हमरा शास्त्रक ज्ञान अछि । (८९७) हम घरहठ ठानल–प्रारम्भ कएल ।

(८९८) तन ★ आस्फालन ।

(८९९) फन ★ लङ्घन ।

(९००) सन ★ मेलन ।

(९०१) कप ★ कम्पन ।

(९०२) छप १. मुद्रित होएब । २. मुद्रित करब ।

(९०३) झँप ★ आवरण ।

(९०४) तप ★ आगिक सेवा ।

(९०५) थप ★ १. स्थासकसँ युक्त करब । २. भार देब ।

(९०६) नप ★ प्रमाण ।

(९०७) हँफ मारबाक चेष्टा करब (मालक) ।

(९०८) दब ★ उपरसँ आक्रमण ।

(९०९) लब ★ आनब ।

(९१०) तम ★ कोदारिसँ उत्खनन ।

(८९८) चनबा नमरल अछि, ओकरा तनैत छी–आस्फालित करैत छी । (८९९) हनुमान् समुद्र फानि गेलाह–लङ्घित कए गेलाह । (९००) भात दालिमे सानिकेँ खाउ–दालिमे मिलाए खाउ। (९०१) अहाँक देह जाड़ेँ कपैत अछि–कम्पित होइत अछि। (९०२) १. छापाखानामे पुस्तक छपैत अछि–मुद्रित होइत अछि। २. यन्त्राधिकृत व्यक्ति पुस्तक छपैत अछि–मुद्रित करैत अछि। (९०३) कुलीना स्त्री देह झँपने रहैत अछि–आवृत कएने रहैत अछि। भदबारि मास सूर्य मेघसँ झँपल जाइत छथि । (९०४) चैतमे आगि तापब गुणद थीक। (९०५) १. नुआ थपैत अछि–स्थासक (थापा)सँ युक्त करैत अछि। २. ई कार्य हम अहाँपर थापल–एहि कार्यक भार अहाँकेँ देल। (९०६) हाथसँ नुआ नापल, दश हाथ भेल। (९०७) ई बड़द हँफैत अछि–मारबाक चेष्टामात्र करैत अछि, किन्तु मारत नहि। (९०८) हमर पाएर हाथसँ दबैत अछि–जँतैत अछि। अतेक दाबत ततेक निक। (९०९) वस्तु लबैत अछि–अनैत अछि। (९१०) खेत तमैत अछि–कोदारिसँ माटि ठीक करैत अछि।

(९११) चँस ★ हरसँ क्षेत्रक प्रथम विदारण ।

(९१२) डँस ★ डाँस प्रभृतिक बीन्हब ।

(९१३) फस पाशमे पड़ब ।

(९१४) फँस ,, ,, ,,

(९१५) बस ★ वासित करब ।

(९१६) बन्ह ★ बन्धन ।

(९१७) रन्ह ★ रन्धन ।

इति धातुपाठे द्वितीयभागः समाप्तः

(९११) खेत चाँसल–प्रथम कठा रोपित कएल। (९१२) डाँस डँसलक–कटलक। (९१३-१४) पक्षी व्याधाक फाँसमे फसैत अछि वा फँसैत अछि–निर्गमनरहित होइत अछि।

(९१५) पान कर्पूरसँ बासल अछि–वासित अछि, अर्थात् कर्पूरक सौरभसँ सुगन्धित अछि। (९१६) खेत पटबालए लोक सभ धार बन्हैत अछि–बद्ध करैत अछि। हम घर बान्हल इत्यादि प्रयोग बनाएब अर्थमे लाक्षणिक जानब। (९१७) भात रन्हैतछी–सिद्ध करैत छी। तीमनो रान्हब।

धातुपाठमे द्वितीय भाग समाप्त

तृतीय भाग

(९१८) बिक — बिक्री होएब।
(९१९) नुक — प्रच्छन्न होएब।
(९२०) ओक — हदमदाएब (वान्तिशङ्काकुल होएब)।
(९२१) चौँक — अकस्माद्भयसँ कम्पित होएब।
(९२२) मुसुक — ईषद्धास।
(९२३) अकचक — विस्मयसँ एमहर-ओमहर ताकब।
(९२४) चकचक — चाकचक्यसँ चमकब।
(९२५) छकछक — देह किञ्चित् उष्ण होएब।
(९२६) झकझक — स्वच्छ देखि पड़ब।

धातुपाठक तृतीय अन्तिम भाग आरम्भ भेल एहि धातुसभक सामान्य धातुसँ आन प्रकारक रूप होइत अछि, जे पूर्व बिकादि प्रकरणमे कहल अछि।

(९१८) बजारमे वस्तु बिकाइत अछि–बिक्री होइत अछि। बिकाएत, बिकाएल। (९१९) देवतालोकनि महिषासुरक भयसँ नुकाएल छलाह–प्रच्छन्न छलाह। (९२०) जी ओकाइत अछि–वमनशङ्कायुक्त अछि। (९२१) नेना बालग्रहमे चौँकैत अछि–अकस्मात् भयसँ कम्पित होइत अछि। (९२२) आनन्दसँ जयलाल मुसुकाइत छथि–अतिमन्द हँसैत छथि। (९२३) चञ्चल लोक अकचकाइत अछि–विस्मयसँ एमहर-ओमहर तकैत अछि। (९२४) हीरकमणि चकचकाइत अछि–चक २ करैत अछि, अर्थात् विकीर्णकिरणक होइतअछि। (९२५) हमरा ज्वरमे देह छकछकाइत अछि–किञ्चित् उष्ण होइत अछि। (९२६) समुद्रक पानि झकझकाइत अछि–स्वच्छ देखि पड़ैत अछि।

(९२७) टकटक — अतिदौर्बल्यप्राप्ति।
(९२८) ठकठक — शीतवेदनासँ दाँतेँ ठकठक शब्द करब।
(९२९) पकपक — क्रोधसँ अस्फुटवचन होएब।
(९३०) फकफक — भूखसँ व्याकुल होएब।
(९३१) भकभक — कटुसंसर्गजन्य पीड़ासँ युक्त होएब।
(९३२) मकमक — निवृत्ति।

(९३३) लकलक	अतिकृश होएब।
(९३४) सकसक	समन्तात् संयोगसँ अनवकाश होएब।
(९३५) हकहक	बुभुक्षाजन्य व्याकुलीभाव।
(९३६) टिकटिक	किञ्चित् पूर्वावस्थाप्राप्ति।
(९३७) लुकझुक	किञ्चित् दृश्य अधिकांश अदृश्य होएब।
(९३८) धुकधुक	१. तेजक न्यूनाधिकभावप्राप्ति। २. वायुसँ सतत शिरामे संचालन।
(९३९) हुकहुक	प्राणवायुक अल्प संबन्ध।

(९२७) ई नेना दुःखसँ टकटकाइत अछि–कार्श्यभाक् अछि। (९२८) माघ मास प्रातःस्नान कएने कतेक लोक ठकठकाइत अछि–दाँतसँ ठकठक शब्द करैत अछि। (९२९) जयदेव क्रोँधेँ पकपकाइत छथि–अस्फुटवचन होइत छथि। (९३०) बटोही भूखेँ फकफकाइत अछि–व्याकुल होइत अछि। (९३१) आँखिमे मेरिचाइ लागल तेँ आँखि भकभकाइत अछि–कटु वस्तु संसर्ग जन्य वेदनाविशेषसँ युक्त होइत अछि। (९३२) आब उत्सव मकमकाएल–किछु कम्म भेल। (९३३) दुःखवशात् अहाँक देह–अतिकृश भए गेल अछि। (९३४) मेलामे लोक सकसकाइत अछि–चारू दिशसँ उत्पीड़नवशात् अनवकाश होइत अछि। (९३५) देवदत्त दिनमे नहि खएलैन्हि तेँ हकहकाइत छथि–भूखेँ व्याकुल होइत छथि। (९३६) ई दुःखसँ अतिकृश भए गेल छलाह, आब टिकटिकएलाह–किञ्चित् पूर्वावस्थापन्न भेलाह। (९३७) आब सूर्य लुकझुकाइत छथि। बाढ़िमे धान डूबि गेल, ओकर पात लुकझुक करैत अछि–यत्किञ्चित् दृश्य होइत अछि। (९३८) शिराक वायुसँ छाती धुकधुकाइत रहैत अछि। आगि धुकधुकाइत अछि। (९३९) आब ओ हुकहुकाइत अछि–प्राणवायुक अल्पसंयोगवान् अछि।

(९४०) ख ★	१. भक्षण। २. भाविसमभिव्याहारमे प्राप्ति।
(९४१) खख	खखड़ीसँ युक्त होएब।
(९४२) धख	सशङ्कित होएब।
(९४३) दुख	व्यथा।
(९४४) सुख	शुष्कीभाव।
(९४५) तरख	किञ्चित् शुष्कीभाव।
(९४६) दगदग	तारतम्यमे पड़ब।

(९४७) बगबग	पीलूक संचलन।
(९४८) डगमग	नावक डोलब।
(९४९) अघ	मुहुर्भोजनजन्य वाञ्छानिवृत्ति।
(९५०) कचकच	कुत्सित क्रोध करब।
(९५१) पचपच	मुहक आभ्यन्तरविकारसम्बन्ध।
(९५२) लचलच	लचकब।

(९४०) फल खाइत अछि। खाएत। खएलक। (९४१) रातिमे वर्षा होएबाक कारण धान खखाएल–खखड़ीसँ युक्त भेल। (९४२) ई अहाँकेँ कहबामे धखाइत छथि–सशङ्कित होइत छथि। (९४३) माथ दुखाइत अछि–व्यथोपेत होइत अछि। देहो दुखाइत अछि। (९४४) रौदमे जारन सुखाइत अछि–शुष्क होइत अछि। (९४५) जारन तरखाएल अछि–किञ्चित् सुखाएल अछि। (९४६) हम दश हाथ फनबामे दगमगाइत छी–तारतम्यमे पड़ैत छी। प्रौढ़ लोककेँ कोनो कार्यमे दगमगी–तारतम्य नहि होइत छैक। (९४७) ई आम सड़ि गेल, एहिमे पीलु बगबगाइत अछि–संचलित होइत अछि। ९४८) एकठा नाओ डगमगाइत अछि–डोलमाल करैत अछि। (९४९) हम अघाएल छी–बहुत भोजन कएलासँ भोजनवाञ्छासँ रहित छी। अघाएल बककेँ पोठी तीत। (९५०) ई नेना टोकने कचकचाइत अछि–तमसाइत अछि। (९५१) हमर मुह पचपचाइत अछि–आभ्यन्तर विकारसँ युक्त होइत अछि। (९५२) बाँसक फट्टाक बान्ह लोक चलबाक काल लचल जाइत अछि–लच २ करैत अछि, अर्थात् डौलैत अछि। भार लचलचाइत जाइतअछि–लचकैत जाइत अछि।

(९५३) किचकिच	कचकचाएब।
(९५४) कुचकुच	कुचकुची–वेदनाविशेषसँ युक्त होएब।
(९५५) पनिछ	खाद्यवस्तुक दर्शनस्मरणसँ जिह्वाक पानिसँ युक्त होएब।
(९५६) कछमछ	वेदनासँ उनटब-पलटब।
(९५७) ज	गमन।
(९५८) लज	लज्जा।
(९५९) निज	व्यथाक परिणाम।
(९६०) खौँज	कुड़िऐनीसँ युक्त होएब।

(९६१) दूरिज — विनष्ट होएब।

(९६२) बजबज — सार्द्रीभाव।

(९६३) उजबिज — उद्वेग।

(९५३) ई नेता किचकिचाएत–तमसाएत, तैँ जनु किछु कहिऔक। (९५४) कबाछु लगलासँ देह कुचकुचाइत अछि–विलक्षण वेदनासँ युक्त होइत अछि। हमरा कुचकुची लागल अछि, भूआ लगबाक कारणेँ वा आने कोनो कारणेँ। (९५५) जीह पनिछाइत अछि–चटनी-अँचारक सुगन्धि लगलासँ जलयुक्त होइत अछि। (८५६) हम ज्वरसँ कछमछाइत छी–उनटैत-पनटैत छी। (९५७) हम गाम जाइत छी। गुरूजी गेलाह। यद्यपि ई धातु सकर्मक थीक तथापि एकरासँ तिङ्प्रत्यय अकर्मकधातुविहिते अबैत अछि। (९५८) मिथिलाक कुलीन स्त्री पुरुषसँ लजाइत अछि–पुरुषकेँ देखि लाजसँ युक्त होइत अछि। (९५९) ई संम्प्रति गाछसँ खसल अछि, एकरा चोट काल्हि निजएतैक–परिणत होएतैक। (९६०) हमर देह खौँजाइत अछि–कुडिऐनीसँ युक्त होइत अछि। (९६१) वस्तुसभ दूरिजाइत अछि–अकर्मक भेल जाइत अछि, ओरिआएकेँ राखू। (९६२) ई घर बजबजाइत अछि–बज-बज करैत अछि, अर्थात् सार्द्रतासँ लसलसाइत अछि। (९६३) मन उजबिजाइत अछि–उग्द्विग्न होइत अछि। जे व्यक्ति सतत लोकसंघर्षमे रहैत अछि ओकरा एकान्तमे राखि देलासँ मन उजबिजाइत छैक।

(९६४) झझ — पसरिकेँ थोड़ पानि घलब।

(९६५) पझ — निर्वाण (तेजक शान्ति)।

(९६६) मिझ — ,,

(९६७) खौँझ — अधिक कुड़िऐनीसँ युक्त होएब।

(९६८) टट — १. कोमल वस्तुक तापसँ सक्कत होएब। २. हाथपाएरक वेदनाविशेष।

(९६९) मेट — विलुप्त होएब।

(९७०) लेट — गर्दमि ओङ्घड़ाएब।

(९७१) लोट — अमनुष्यक लेटाएब।

(९७२) खटखट — खटखट शब्द करब।

(९७३) छटछट — त्वचाक अभ्यन्तरमे ग्रन्थिक स्पर्शतः संचलन।

(९७४) खटपट — ऐकमत्याभाव।

(१७५) लटपट — अयथावद्भाव, यथोचित नहि होएब।

(९६४) बाहामे कतहु-कतहु उच्चता रहि जएबाक कारण तत्तत् स्थलमे पानि झझाइत अछि–थोड़-थोड़ चलैत अछि। (९६५) आगि पझाएल–मिझाएल। (९६६) दीप मिझाएल–बरैत नहि अछि। (९६७) देह खौँझाइत अछि–अधिक कुड़िऐनीसँ आकुल होइत अछि। हमर नीक देखि ओ खौँझाइत छथि इत्यादि लाक्षणिक जानब। (९६८) १. सोहारी टटाएल–सक्कत भेल। २. पाएर टटाइत अछि–दुखाइत अछि। अस्थिगत वेदना टटैनी थीक। (९६९) अति प्राचीनताक कारण एहि पुस्तकमे कतहु २ अक्षर मेटाएल अछि–विलुप्त अछि। (९७०) बटेर गर्दमि लेटाइत अछि–ओङ्घड़ाइत अछि। (९७१) घोड़ा माटिमे लोटाइत अछि–ओङ्घड़ाइत अछि। (९७२) ककरो खड़ाँम खटखटाइत अछि–खट २ शब्द करैत अछि, जेना केओ खडाँम चढ़ल आबि रहल अछि। हुनका टोकबैन्हि तैँ खटखटाए उठताह इत्यादि लाक्षणिक जानब। (९७३) गिलटी छटछटाइत अछि–छुइने सञ्चलित होइत अछि। (७७४) ओहि दुहू गोटामे खटपटाइत छैन्हि–वैमत्य होइत छैन्हि। (९७५) आबल्यसँ चलबाक काल पाएर लटपटाइत अछि–बजबो लटपटाइत अछि–यथोचित नहि होइत अछि।

(९७६) सुटपुट — अपराधसँ सशङ्कित चेष्टा करब।

(९७७) जड़ — जाड़सँ युक्त होएब।

(९७८) पड़ — पलायन।

(९७९) जुड़ — ठंढा होएब।

(९८०) नँगड़ — स्खलित गमन।

(९८१) ओँघड़ — उलटब-पलटब।

(९८२) नङड़ — स्खलित गमन।

(९८३) धड़धड़ — हृदयक कम्पन।

(९८४) गड़बड़ — असंपत्ति।

(९८५) हड़बड़ — १. अगुताएब। २. हड़बड़ शब्द करब।

(९८६) कुड़बुड़ — मनहिमन तमसाएब।

(९८७) लेढ़ — समस्त शरीरमे पङ्कादिसँ योजन।

(९८८) लोढ़ — माटिमे एमहर-ओमहर उनटब-पुनटब।

(९७६) आब ओ सुटपुटाइत छथि–सशङ्कित चेष्टा करैत छथि। (९७७) जाड़मास विना नुएँ जड़ाइत अछि–जाड़सँ (शैत्यसँ) जड़ाइत अछि। (९७८) जाग भेलासँ चोर पड़ाइत अछि–द्रुतगमन करैत अछि। (९७९) गर्मी मास स्नान कएलासँ देह जुड़ाइत अछि–ठण्ढा होइत अछि। (९८०) रुद्रधरक एक पाएर टुटि गेलैन्हि, तैँ नँगड़ाइत छथि–गमनमे स्खलित होइत छथि। विष्णुपति नाँगड़ छथि। (९८१) शोकेँ माटिमे ओँघड़ाइत छथि–उलट-पलट करैत छथि। (९८२) भवदेव नङ्ड़ाइत छथि–एक पाएरक कज्जी रहबाक कारण स्खलित गमन करैत छथि। (९८३) ज्वरमे छाती धड़धड़ाइत छैक–कम्पित होइत छैक। (९८४) कार्य गड़बड़ाएल–संपन्न नहि भेल। (९८५) १. कोनो काजमे हड़बड़ाइ नहि–अगुताइ नहि। २. घरमे वस्तु हड़बड़ाइत अछि–हड़बड़ शब्द करैत अछि। (९८६) ओ हमरा पर कुड़बुड़ाइत छथि–मनहिमन तमसाइत छथि। (९८७) जेठ मास सुगर खत्तामे लेढ़ाइत अछि–समस्त देहकेँ पाँकसँ लेभड़बैत अछि। (९८८) घोड़ा माटिमे लोढ़ाइत अछि–ओढ़नाइत अछि।

(९८९) सुस्त — विश्राम करब।
(९९०) अगुत — शीघ्रता करब।
(९९१) ततमत — तारतम्य करब।
(९९२) सथ — विश्राम करब।
(९९३) बरद — बाधाक प्राप्ति।
(९९४) गदगद — आनन्दसँ गद्गदस्वर होएब।
(९९५) लदबद — पशुक गर्भभाराक्रान्त होएब।
(९९६) हदमद — ओकाएब (वान्तिपूर्वरूपाक्रान्त होएब)।
(९९७) अगध — अतितृप्ति।
(९९८) बन — फलपरिपाकक पूर्वावस्थाप्राप्ति।
(९९९) घिन — घृणाविषय होएब।
(१०००) बोन — फलक परिपाकपूर्वरूप प्राप्ति।
(१००१) औन — अल्प अवकाशप्रयुक्त मनक उद्विग्नताप्राप्ति।

(९८९) चलैत २ थकलहुँ, तैँ सुस्ताइत छी–विश्राम करैत छी। (९९०) ओ अगुताइत अछि–शीघ्रता करैत अछि जे शीघ्र कार्य हो। (९९१) ओ जएबामे ततमताइत अछि–ततमत करैत अछि, अर्थात् जएबामे तारतम्य करैत अछि। (९९२) हम तावत्

सथाइत छी–विश्राम करैत छी। (९९३) जनसब बरदाइत अछि–बाधाप्राप्ति करैत अछि, अर्थात् बेकार बैसल अछि, तैँ काजक आज्ञा देल जाइक। (९९४) आनन्दसँ गदगदाइत छथि–गद्गदस्वरक होइत छथि। (९९५) गाए लदबदाएल अछि–गर्भभाराक्रान्त अछि, आब शीघ्रे बिआएत। (९९६) जी हदमदाइत अछि–वान्तिक पूर्वरूपसँ युक्त होइत अछि। (९९७) ओ भोज खाए अगधाएल छथि–अतितृप्त छथि। (९९८) ई आम बनाएल अछि–परिपाकक पूर्वावस्था पओने अछि। (९९९) वर्षा भेलासँ कार्य घिनाए गेल–घृणास्पद भेल। अओ, अहाँ सभ कार्यमे घिनबैत छी। (१०००) ई आम बोनाएल अछि–पकबाक पूर्वावस्थापन्न अछि। (१००१) केबाड़ बन्द कएने हमर मन औनाइत अछि–व्याकुल होइछ।

(१००२) ओढ़न — ओँघड़ाएब।
(१००३) अफन — व्याकुलीभाव।
(१००४) फफन — बाँतर खएबाक प्रयुक्त व्रणक वृद्धि।
(१००५) बिसन — निद्रावस्थामे बाजब।
(१००६) ढहन — बिना हेतु एमहर-ओमहर जाएब।
(१००७) कनकन — १. मारबाक चेष्टा करब। २. व्रणक दुखाएब।
(१००८) खनखन — अतिबुभुक्षायुक्त होएब।
(१००९) गनगन — गनगन शब्द करब।
(१०१०) छनछन — वेदनाविशेषसँ युक्त होएब।
(१०११) तनतन — घाबक बहबासँ पूर्वकालिक वेदना।
(१०१२) अनमन — अन्यमनस्क होएब (विमन होएब)।
(१०१३) कनमन — क्रोधसँ मारबाक अभिलाषा।
(१०१४) बिनबिन — सहसहाएब।

(१००२) नेनाभूमि पर कनैत ओढ़नाइत अछि, एकरा उठाए लिऔक। (१००३) हमर मन अफनाइत अछि–व्याकुल होइत अछि। (१००४) बाँतर वस्तु खाएब तैँ घाओ फफनाएत–बढ़ि जाएत (१००५) केओ अधिक काल बिसनाइत अछि–निद्रामे बजैत अछि। (१००६) ई नेना ढहनाइत अछि–बिना काजेँ एमहर ओमहर करैत अछि। (१००७) १. बड़द कनकनाइत अछि–मारबाक चेष्टा करैत अछि। २. गूर कनकनाइत अछि–वेदनाविशेषसँ युक्त होइत अछि। (१००८) राति नहि खाएल तैँ हम खनखनाइत छी–अतिबुभुक्षासँ युक्त छी। (१००९) लोकक बजबासँ मन्दिर गनगनाइत अछि–गनगन

एतादृश अव्यक्त शब्द करैत अछि । ई बात गनगनाए गेल इत्यादि लाक्षणिक जानब।(१०१०) नोन पड़लासँ घाओ छनछनाइत अछि–वेदनाविशेषसँ युक्त होइछ । (१०११) गूर पीजुसँ तनतनाइत अछि–वेदना विशेषसँ युक्त होइत अछि (१०१२) अहाँ अनमनाएल छी–विमनस्क छी । (१०१३) ई हमरा पर कनमनाइत अछि–मारबाक चेष्टा करैत अछि। (१०१४) सइल आममे पिलुआ बिनबिनाइत अछि–बिनबिन (एमहर-ओमहर सञ्चाल) करैत अछि ।

(१०१५) झुनझुन	झुनझुनीसँ युक्त होएब ।
(१०१६) बुनबुन	भीतरसँ बुन्नी (बुद्बुद) छोड़ब वा उपरसँ बिन्दुपात।
(१०१७) दप	दर्प करब ।
(१०१८) छपछप	पानिक बराबरि होएब ।
(१०१९) सबसब	त्वचाक भीतरमे कुड़िऐनी होएब ।
(१०२०) भभ	भभ शब्द करैत खसब ।
(१०२१) झम	शोकसँ कारी होएब ।
(१०२२) डर	भययुक्त होएब ।
(१०२३) भर	भारसँ युक्त होएब ।
(१०२४) थिर	पशुक आर्तवधर्मलाभ ।
(१०२५) सिर	दाँत मूलमे मुइल शोणितमय सिरासँ युक्त होएब।
(१०२६) डेर	भययुक्त होएब (डराएब) ।
(१०२७) सेर	निस्तापीभाव ।

(१०१५) पाएरमे एक गरेँ अधिक काल बैसबासँ झुनझुनी भरल अछि (वायुक गतिविशेष) । (१०१६) पोखरिक पानि बुनबुनाइत अछि–बुन्नी छोड़ैत अछि, प्रायः बड़का माछ आएल अछि । मेघ बुनबुनाइत अछि–किञ्चित् २ बुन्नी खसबैत अछि । (१०१७) ई नेना हाथसँ पोथी छिनबालए दपाइत अछि–दर्प करैत अछि । (१०१८) बाढ़िमे धान छपछपाएल अछि–पानिक बराबरि अछि । (१०१९) हाथ सबसबाइत अछि–भीतरमे कुड़िआइत अछि । (१०२०) कोठीक मुह खुजि गेल अछि तेँ कोठी भभाइत अछि–भभ एतादृश अव्यक्त शब्द करैत अछि, चाउर खसि रहल अछि । (१०२१) अहाँ सभ दिन झमाइत छी–झामवत् होइत छी अर्थात् कारी होइत छी । (१०२२) बाघकेँ देखि के नहि डराइत अछि–के नहि भयभीत होइत अछि ? (१०२३) नेना बड़ीकालसँ जाँघपर बैसल

अछि, तेँ जाँघ भराए गेल–भाराक्रान्त भेल । (१०२४) महीसि थिराएल अछि–ऋतुधर्म प्राप्त कएने अछि । (१०२५) हमर दाँत सिराएल अछि–मृतशोणितयुक्त सिरासँ युक्त अछि। (१०२६) रातिकेँ अन्हारमे नेना डेराइत अछि–भीत होइत अछि। (१०२७) गरम मास सेराएल–निस्ताप भेल भात खाइ ।

(१०२८) हेर	अदृश्य होएब (नहि भेटब) ।
(१०२९) टर्र	इतस्ततः वृथा चलब ।
(१०३०) अगर	आनन्दसँ नाना चेष्टा करब ।
(१०३१) ओझर	दुरुद्धर होएब ।
(१०३२) सोझर	सूद्धर होएब ।
(१०३३) मड़र	मण्डलाकार आकाशमे घुमब ।
(१०३४) नितर	अभिमान करब ।
(१०३५) कदर	कातरवत् आचरण करब ।
(१०३६) फहर	आकाशमे वस्त्रक डोलब ।
(१०३७) अन्हर	अन्धकारावृत होएब ।
(१०३८) चोन्हर	आँखिक तेजःप्रतिबन्धक विकारयोग ।
(१०३९) चरचर	बहुत अश्रव्य बाजब ।
(१०४०) थरथर	कम्प ।

(१०२८) हमर छड़ी हेराएल–अदृश्य भए गेल । (१०२९) मन आनन्द रहलासँ नेना टर्राइत अछि–इतस्ततः घूमैत अछि । (१०३०) ई नेना अगराइत अछि–आनन्दसँ नाना चेष्टा करैत अछि । (१०३१) गेठिअएबाक काल जनौ ओझराएल–दुरुद्धर भेल । (१०३२) ई जनौ सोझराएल अछि–उद्धारमे सुकर अछि । (१०३३) गिद्ध मर देखि मड़राइत अछि–मण्डलाकार घुमैत अछि । (१०३४) ई नितराइत अछि–अभिमान करैत अछि। निन्दाशब्द। (१०३५) जाड़क हेतु पानिमे पैसबामे नेना कदराइत अछि–कातरवत् आचरण करैत अछि। (१०३६) उत्सवमे पताका फहराइत अछि–आकाशमे डोलैत अछि। (१०३७) सन्ध्या भेल, समय अन्हराएल–अन्धकारावृत भेल । ई अएना अन्हराएल अछि–मलरूप अन्धकारसँ आवृत अछि । (१०३८) लिखैत २ आँखि चोन्हराएल–तेजःप्रतिबन्धक विकारसँ युक्त भेल । (१०३९) नेनासब ततेक चरचराइत छल–अश्रव्य बहुत बजैत छल जे निद्रा नहि होअए पओलक । (१०४०) अबलक देह

चलबामे थरथराइत छैक–कम्पित होइत छैक। जाड़ेँ देह थरथराइत अछि–कपैत अछि।

(१०४१) बरबर अज्ञानसँ बाजब।
(१०४२) लरबर लरबर करब (अदृढ़ रहब)।
(१०४३) लरलर ,,
(१०४४) मिरमिर दुर्बलीभाव।
(१०४५) घुरघर देहपर कीड़ाक चलब।
(१०४६) फुरफुर इतस्ततः धावन।
(१०४७) सुरफुर लेबाक इच्छासँ एमहर-ओमहर करब।
(१०४८) बिल विलीन होएब (ठामहि अदृश्य होएब)।
(१०४९) फुल १. पुष्पक विकसन। २. फुलसँ युक्त होएब।
(१०५०) गोपल विनष्ट होएब।
(१०५१) कलकल भोजनक अत्यन्त इच्छा (बुभुक्षासँ आतुर होएब)।
(१०५२) गलगल अस्पष्ट बाजब।
(१०५३) दलदल आघातसँ भूमिक डोलब।
(१०५४) झलफल अस्पष्ट सूझब।

(१०४१) ज्वरक वेगमे बरबराइत अछि–अर्र - दर्र बजैत अछि। (१०४२-४३) झाँझनक पूल लरबराइत अछि वा लरलराइत अछि– अस्थिर होइत अछि। (१०४४) मिरमिराएकेँ बजैत अछि। दीप मिरमिराइत अछि। (१०४५) देहपर किछु घुरघुराइत अछि–कोनो कीड़ा चलैत अछि। (१०४६) ई नेना फुरफुराएल भेल फिरैत अछि–इतस्ततः दौड़ल भेल फिरैत अछि। (१०४७) ई नेना सुरफुराइत अछि–लेबाक इच्छासँ एमहर-ओमहर करैत अछि। (१०४८) मेघ बिलाएल–विलीन भेल। (१०४९) १. कमल सूर्य उगलासँ फुलाइत अछि–विकसित होइत अछि। २. फूलक बहुत गाछ वसन्तमे फुलाइत अछि–फूलसँ युक्त होइत अछि। (१०५०) ओ वस्तु गोपलाएल–नष्ट भेल। (१०५१) ई नेना कलकलाएल अछि–भूखसँ आतुर अछि। (१०५२) ई सुगा आब गलगलाइत अछि–अस्पष्ट बजैत अछि। (१०५३) ई भूमि दलदलाइत अछि–पादाघाघातसँ डोलैत अछि। (१०५४) हमर आँखि झलफलाइत अछि–सुझबामे दोषविशेषसँ युक्त होइत अछि।

(१०५५) खलबल तापसँ जलक संचार।

(१०५६) छलबल संचाल करब।
(१०५७) दलमल भूमिक डोलब।
(१०५८) गुलगुल गुलगुल होएब (कोमलीभाव)।
(१०५९) बिस परिणाममे दुःख देब।
(१०६०) अलस आलस्ययुक्त होएब।
(१०६१) कसकस सक्त होएब।
(१०६२) बिसबिस दंशनादिजन्य विषवेदना।
(१०६३) लुसफुस लोभसँ लेबाक चेष्टा करब।
(१०६४) दह जलक उपर भसिआएब।
(१०६५) नह स्नान।
(१०६६) सिह दर्शनसँ तद्विषयक स्पृहा।
(१०६७) बोह प्रवाहमे विनष्ट होएब।

(१०५५) चूल्हिपर जल खलबलाइत अछि–तापसँ सशब्द सञ्चलित होइत अछि। (१०५६) चल्हबा माछ वर्षा पड़ैत छलबलाइत अछि–उनटैत-पुनटैत अछि। (१०५७) चलैत रेलगाड़ीक लग धरती दलमलाइत अछि–डोलैत अछि। (१०५८) आम गुलगुलाएल–कोमल भेल। (१०५९) हम जे कुसंयम कएल से हमरा बिसाएल–विषवत् आचरण कएलक, अर्थात् परिणाममे दुःख देलक। (१०६०) हम जएबामे अलसाइत छी–आलस्ययुक्त होइत छी। (१०६१) तौलामे आँटा कसकसाएल अछि–सक्कत भेल बैसल अछि। (१०६२) साँप कटलक तेँ बिसबिसाइत अछि–वेदनाविशेष करैत अछि, तेँ मन्त्रसँ झाड़ि दिअ। (१०६३) ई नेना मधुरक हेतु लुसफुसाइत अछि–मधुरक लोभेँ लेबाक चेष्टा करैत अछि। (१०६४) धारमे काठ दहाइत अछि–उपर-उपर भसिआइत अछि। (१०६५) गङ्गामे नहाउ–स्नान करू। (१०६६) अपने खाइत छी नेना सिहाइत अछि– देखलासँ खएबाक इच्छायुक्त होइछ। (१०६७) जयलाल गङ्गामे बोहाए गेलाह–प्रवाहमे विनष्ट भेलाह।

(१०६८) सोह प्रिय लागब।
(१०६९) पन्ह मालक थनमे दुग्धपूर्ण होएब।
(१०७०) कुकुह कानक कुड़िऐनी।

(१०७१) टहटह घाओक वेदनाविशेष।

(१०७२) महमह सुगन्ध करब।

(१०७३) लहलह १. ज्वालाक आन्दोलन। २. जिह्वाव्यापार।

(१०७४) सहसह अनेक पीलुक संचाल।

(१०७५) चुहचुह वेदनाविशेषयोग।

(१०७६) बि प्रभव।

(१०७७) खि घर्षणसँ क्षीण होएब।

(१०७८) खे ,, ,,

(१०७९) जो परिपाकक पूर्वरूपप्राप्ति।

(१०८०) सो पाकसँ सक्त होएब।

(१०८१) औ किंकर्तव्यता - विमूढ़ होएब।

(१०८२) टौ अनाथ होएब।

(१०६८) ई हमरा नहि सोहाइत अछि–प्रिय नहि लगैत अछि। एहि धातुक प्रयोग प्रायः स्त्रीगण करैत अछि। (१०६९) हमर गाए पन्हाइत अछि–थनमे दुग्धपूर्ण होइत अछि। (१०७०) कान कुकुहाइत अछि–कुड़िआइत अछि। (१०७१) गूर टहटहाइत अछि–वेदनाविशेष करैत अछि। (१०७२) बेली फूल महमहाइत अछि–अति सुगन्ध करैत अछि। घरमे गुलाबक जल छीटल गेल अछि तैँ घर महमहाइत अछि। (१०७३) १. आगि लहलहाइत अछि–ज्वालायुक्त अछि। २. कालिकाक जीह लहलहाइत छैन्हि–सव्यापार छैन्हि। (१०७४) एहि सड़ल आममे पिलुआ सहसहाइत अछि–संचार करैत अछि। (१०७५) देह चुहचुहाइत अछि–कुचकुचाएब सदृश वेदना करैत अछि। (१०७६) हमर गाए बिआएल–गर्भमोचन कएलक। (१०७७) चलैत-चलैत खणाम खिआएल–क्षीण भए गेल। (१०७८) घास छिलैत-छिलैत खुरपी खेआएल–क्षीण भेल। (१०७९) गाछमे जोआएल–परिणामक पूर्वरूपापन्न लताम बहुत अछि। (१०८०) रन्हबाक काल भाँटा सोआए गेल–सक्कत भए गेल। (१०८१) अहाँ एना औआइत छी किएक–किंकर्त्तव्यमूढ किएक होइत छी? (१०८२) ई नेना माइक बिना टौआइत अछि–अनाथ भेल रहैत अछि।

(१०८३) बौ १. व्यामोहसँ अनभिप्रेत मार्गें गमन। २. ज्वरादिमे बिना ज्ञानें किछु-किछु बाजब।

(१०८४) हौ अधिक कुड़िऐनी।

(१०८५) नकि नाक देने बाजब।

(१०८६) छिछि इतस्ततः गमन।

(१०८७) खटि कम होएब।

(१०८८) ढठि नीक ढाठीपर आएब।

(१०८९) गड़ि आँखि दुखाएब।

(१०९०) जड़ि दृढ़मूल होएब।

(१०९१) भिँड़ि भीँडीरूपेँ अवस्थित होएब।

(१०९२) कुड़ि घर्षणनिवर्तनीय वेदना।

(१०९३) सुँढ़ि सिद्ध्युन्मुख होएब।

(१०९४) नेढ़ि वृथा इतस्ततः गमन।

(१०९५) लेढ़ि लेटब।

(१०९६) दँति दाँत निपोड़ि देब।

(१०८३) १. हम बौअएलहुँ–व्यामोहसँ अनभिप्रेत मार्गें चललहुँ। २. हिनका ज्वर बड़ तेज छैन्हि, बौआइत छथि–अज्ञानमे बजैत छथि। (१०८४) हमर देह कलकलिसँ हौआइत अछि–अधिक कुड़िआइत अछि। (१०८५) केओ २ नकिआइत अछि–नाकक सम्बन्धेँ बजैत अछि। (१०८६) हओ, तोँ रौदमे किएक छिछिआइत छह–इतस्ततः भेल फिरैत छह। (१०८७) हमरा गाममध्य मस बड छल, आब खटिआएल–कम भेल। (१०८८) ई नेना आब ढठिआएल–नीक ढाठी पर आएल। (१०८९) आँखि उठल अछि तैँ गड़िआइत अछि–दुखाइत अछि। (१०९०) ई गाछ जड़िआएल–दृढ़मूल भेल। दुःख जड़िआएल इत्यादि लाक्षणिक जानब। (१०९१) सुतरी भिड़िआउ–भीँड़ी रूपेँ अवस्थित करू। (१०९२) देह कुड़िआइत अछि– कण्डूसँ युक्त होइत अछि। (१०९३) आब काज सुँढ़िआएल–सिद्ध्युन्मुख भेल। (१०९४) ई नेना नेढ़िआइत अछि–इतस्ततः चलैत रहैत अछि। (१०९५) सूगर खातामे लेढ़िआइत अछि–लेढ़ैत अछि। (१०९६) दँतिअएलाह–दाँत निपोड़ि देलैन्हि तैँ हम छोड़ि देलिऐन्हि।

(१०९७) पति विश्वास करब।

(१०९८) भोति गन्तव्य मार्गक त्याग (संमोहसँ अगन्तव्य मार्गें चलब)।

(१०९९) हदि **निभरोस होएब ।**

(११००) उधि **पाकसँ ऊर्ध्वगति ।**

(११०१) पेनि **पाछाँ-पाछाँ भेल फिरब ।**

(११०२) खपि **खपब (क्षीण होएब) ।**

(११०३) हफि **हाफीसँ युक्त होएब ।**

(११०४) अरि **अकच्छ होएब ।**

(११०५) फरि **निर्विवाद होएब ।**

(११०६) छिरि **विकीर्ण होएब ।**

(११०७) घुरि **पुनरागति ।**

(११०८) ओरि **ठीक होएब ।**

(११०९) भसि **प्रवाहमे तदनुकूल जाएब ।**

(१११०) खिसि **१. क्रोध करब । २. गञ्जन ।**

(११११) घोँसि **थोड़ अवकाशमे पैसब ।**

(१०९७) हम अहाँक कथा नहि पतिआएब–निश्चित नहि मानब । यद्यपि ई धातु सकर्मक थीक किन्तु बजादिवत् अकर्मकत्वप्रयुक्त प्रत्यय अबैत अछि । महाराज हमर बात पतिअएलाह । (१०९८) हम भोतिअएलहुँ–भ्रममे पड़लहु । एकर मार्गभ्रममे मुख्य प्रयोग । (१०९९) हदिआउ नहि–निभरोस जनु होउ । (१११०) दूध उधिआइत अछि–आँच देने उपर बढ़ैत अछि । (११०१) जयलाल पेनिआइत छथि–पाछाँ-पाछाँ भेल फिरैत छथि । (११०२) ग्रहणमे सूर्यचन्द्रमा खपिआइत छथि–खपैत छथि । (११०३) अहाँ हफिआइत छी–हाफीसँ युक्त होइत छी । (११०४) हम अरिअएलहुँ–अकच्छ भेलहुँ । (११०५) हमरा जयसिंहसँ लेन-देन फरिआएल–साफ भेल । (११०६) चाउर छिरिआएल अछि–विकीर्ण अछि । (११०७) ई दुःखमे घुरिअएलाह–पुनः पुनः पड़लाह । (११०८) वस्तुसब ओरिआएल–ठीक भेल । (११०९) रेतमे लोक भसिआइत अछि–भासैत अछि । (१११०) १. हमरापर जयलाल खिसिआएल छथि–क्रुद्ध छथि । २. हमरा पर गुरूजी खिसिअएलाह–गञ्जन कएलैन्हि । इहो बजधातुवत् अकर्मकत्वप्रयुक्ते प्रत्यय उत्पन्न करैत अछि । (११११) गीदड़ सोन्हिमे घोँसिआएल–पैसल रहैत अछि ।

(१११२) ढेहि **बिना हेतु इतस्ततः गमन (निन्दाशब्द) ।**

(१११३) सन्हि **सन्धिमे पैसब ।**

(१११४) बधु **किंकर्तव्यविमूढ़ होएब ।**

(१११५) भकु **भक (आँखिक झपनी) लागब ।**

(१११६) छुछु **वृथा इतस्ततः जाएब ।**

(१११७) झुझु **कम देखि अपरितोष ।**

(१११८) घटि **क्रमशः घट्टी होएब ।**

(१११९) घटु **उदास होएब ।**

(११२०) लटु **लटब ।**

(११२१) बिधु **मुहक दुःखचेष्टा ।**

(११२२) अरु **सिद्धान्नक शुष्क होएब ।**

(११२३) मरु **आतपजन्य पत्रादिक अयथावत् स्थिति ।**

(११२४) मसु **पाकसँ कठोरताप्राप्ति ।**

(११२५) कन्हु **पशुक क्रोधचेष्टा ।**

तृतीय भाग समाप्त

धातुपाठ संपूर्ण भेल

(१११२) ई नेना ढेहिआइत रहैछ–वृथा इतस्ततः करैछ । (१११३) साप बीहरिमे सन्हिआएल–पैसल । (१११४) अहाँकेँ की भेल अछि जे बधुआएल छी–किंकर्तव्यविमूढ़ उदास छी ? (१११५) ई नेना भकुआएल अछि–औँघीसँ आँखिक झपनीसँ युक्त अछि । (१११६) ई नेना छुछुआएल भेल फिरैछ–वृथा एमहर-ओमहर दौड़बड़हा करैत अछि । (१११७) ई भूखल अधिक छथि तेँ थारीमे थोड़ भात देखि झुझुअएलाह–अपरितोष प्राप्त कएलैन्हि । (१११८) हुनका दिनानुदिन धन घटिजाइत छैन्हि–कम्म होइत छैन्हि । (१११९) अहाँ घटुआएल छी–उदास छी । (११२०) नेना अतीसार रोगक कारणेँ लटुआएल अछि–लटल अछि । (११२१) अहाँक मुह बिधुआएल किएक अछि–उदास किएक अछि ? (११२२) भात बड़ी काल रान्हल गेल, तेँ अरुआएल अछि–शुष्कप्राय अछि । (११२३) नव पात तीव्र रौदमे मरुआइत अछि–मूर्छित भए जाइत अछि । (११२४) भाँटा मसुआएल–पाकविरामप्रयुक्त कठोरता पओलक । (११२५) बड़द कन्हुआइत अछि–मारबाक चेष्टा करैत अछि, तेँ हटिकेँ जाउ ।

ग्रन्थकर्तृ-रचित भाषाविद्योतनक व्याख्या समाप्त

अथ तिङ्सारिणी

[वर्तमानादि अर्थमे बहुत तिङ्प्रत्यय धातुसँ साक्षात् विहित कएल गेल अछि। ताहि सबहिक अनुगत रूपेँ शीघ्रतया ठेकान हो, एहि हेतु तिङ्सारिणी लिखल जाइत अछि। आगाँ दू प्रकारक विस्तृत तिङ्चक्र देल अछि, एक प्रतिपदोक्त तिङक अर्थात् स्वरूपक उच्चारणपूर्वक विहितक, दोसर बिकादि धातुमे योजनीय कृतादेशक। ताहिमे प्रथम विस्तृत तिङ्चक्र आँखिक आगाँ राखि एहि सूत्रसभकेँ लगाएब।

पहिल विस्तृत तिङ्चक्रक पूर्ण अनुसन्धान भेलासँ कृतादेशक तिङ्सबहिक अनुसन्धान स्वतः शीघ्र भए जाएत। हेतु जे साक्षात् विहिततिङ् ओ कृतादेशक तिङ्मे थोड़ भेद अछि। तथा तिङ्सारिणीसँ बहुत आदेशापन्नो तिङ् संगृहीत अछि।]

छकारयुक्त तिङ् वर्तमानार्थक ॥१॥

जाहि तिङ्प्रत्ययमे छकार हो तकरा वर्तमानार्थक जानब। वर्तमानमे अनादरणीय आदरणीय आदि कर्तृभेदसँ एकैस तिङ् प्रत्यय कहल अछि–*ऐतअछि, ऐतअछ, ऐछ, ऐतछैक*, इत्यादि ताहि सभमे छकार देखि बुझब जे ई तिङ् वर्तमानार्थक थीक। यथा, *बतहा देखैतअछि, देखैतअछ वा देखैछ। बतहा सोमनाकेँ देखैतछैक* इत्यादि। बिकादिसँ पर कृतादेशक तिङ् *आइतअछि, आइतअछ, आइछ, आइतछैक* इत्यादि, एहूमे छकार अछिए। अतः *बिकाइतअछि* इत्यादिओ वर्तमान प्रयोग बुझल गेल। वर्तमान तिङ् दुइए शाखाक अछि। सामान्यसँ पर एक शाखाक, बिकादिसँ पर दोसर शाखाक ॥१॥

लकारयुक्त भूतार्थक ॥२॥

लकारसँ युक्त जे तिङ् तकरा भूतार्थक जानब। यथा *अलक, अलकैक, अल, अलैक* इत्यादि। *बतहा देखलक, दुखबाक हेतु ओकरा लग बसलैक। अलक* स्थानमे कृतादेशक *एल, ओल, इल, आएल* इहो सब लकारयुक्त अछि। *देल, पठाओल, मुइल, बिकाएल*। एवम् कृतादेशक आनो सब लकारयुक्त अछिए, तेँ नियमतः बुझब जे लकारबाला तिङ् भूतार्थक थीक ॥२॥

अतादि, अबादि भविष्यार्थक ॥३॥

अतादि अर्थात् जकर आदि अत्शब्द हो एवम् अबादि (जकर आद्यवयव *अब* हो)

से तिङ् भविष्यार्थक थीक। अतादि *अत, अतैक*, इत्यादि, *बतहा देखत, ओकरा देखतैक, बसत, ओकरा हेतु बसतैक*। अतक स्थानमे कृतादेशक *एत, ओत, इत, आएत* इत्यादि, इहो सब तत्स्थानापन्नन्यायसँ अतादि कहाओत–*देत, पठाओत, चुइत, बिकाएत*। अबादि–*अब, अबैक* इत्यादि, *हम देखब, ओकरा देखबैक*। अबादिक स्थानमे कृतादेशक *एब, आब, इब, आएब* इत्यादि–*हम देब, लेब, पठाएब, छुइब, बिकाएब* इत्यादि उक्तन्यायसँ अबादि कहाओत ॥३॥

ऐतअछि ऐतअछ ऐछ ऐतछैँ एतद्भिन्न वर्तमानमे साक्षात् विहित तिङ् प्रत्ययक छकारोत्तरभागसमान तथा अय(ए) अहिँ इच्छार्थक ॥४॥

जे तिङ् वर्तमानमे कहल अछि तकर छकारसँ अगिला भागक तुल्य इच्छार्थक जानब परन्तु ऐतअछ, *ऐतअछि, ऐछ* एकरा छाड़ि तथा *अय, अहिँ* इहो दुहू इच्छार्थक बुझब। यथा वर्तमान अर्थमे साक्षात् विहित *ऐतछैक ऐतछैन्हि* इत्यादि, तकर छकारसँ अगिला भाग *ऐक, ऐन्हि* इत्यादिए भेल, से इच्छार्थक थीक। *हमरा इच्छा जे बतहा सोनमाकेँ देखैक, ओकर लग रहैक। एक नोकर भूपझाकेँ देखैन्हि, हुनका लग रहैन्हि* इत्यादि। *बतहा नाच देखए, तोँ देखहिँ*। एहिसँ सिद्ध भेल जे *अए, ऐक, ऐन्हि* इत्यादि साक्षात् विहित इच्छार्थक भेल। इच्छार्थक ऐक प्रत्ययक स्थानमे कृतादेशक *आइक–बतहा गेनबाक हेतु बिकाइक*। एवम् *ऐन्हि, अहु, औक* इत्यादि स्थानमे कृतादेशक *आइन्हि, आहु, आउक* आदि थीक से द्वितीय विस्तृत तिङ्चक्रसँ बुझब। एहिठाम एक विषय ई जानब जे इच्छार्थक तिङ् संभावनार्थको थीक, हेतुहतुमद्भावार्थको। *संभव जे भूपझा आबथि, पानि होअए, पुण्य करी तँ स्वर्ग जाइ–* इत्यादि तिङर्थप्रक्रियाक अनुसन्धान राखब आवश्यक। अतश्च तिङ्चक्रमे इच्छा एहिशब्दक संग संभावना, हेतुहेतुमद्भाव इहो सभ बुझब ॥४॥

प्रायः इच्छार्थक तिङक सदृश प्रेरणार्थक ॥५॥

इच्छार्थक तिङक प्रायः सदृशे प्रेरणार्थक बुझब। यथा *अहु, औक* इत्यादि इच्छार्थक थीक ओहने प्रेरणार्थको। *हओ सङ्गी, भोलबा तोहरा देखहु। रओ तोरा देखौक। औकक* स्थानमे कृतादेशक *आउक* इत्यादि द्वितीय तिङ्चक्र देखिकेँ जानब ॥५॥

इच्छार्थक तिङक ऐकारक स्थानमे औकारयुक्त, अहीकक अनवयव ईकारक स्थानमे उकारयुक्त तथा इच्छार्थक अय(ए), अछि, अहिक स्थानमे अओ, अहु, अ ॥६॥

इच्छार्थक तिङ्सँ प्रेरणार्थकमे जतबा भेद अछि से देखाओल जाइत अछि। एहि हेतु सूत्रमे 'प्रायः' ई कहल गेल। इच्छार्थक तिङक ऐकारक स्थानमे ईकार लगओलासँ प्रेरणार्थक होएत, अर्थात् ऐकार-बाला इच्छार्थकसँ तत्स्थानमे औकारमात्रकृत भेद अछि, यथा इच्छार्थक *ऐक, ऐन्हि, इऐक, इऐन्हि* किन्तु प्रेरणार्थक *औक, औन्हि, इऔक, इऔन्हि*।

भोलबा, सोनमाकेँ देखौक, ओकरा लग बैसौक, बाबूजीकेँ देखौन्हि । अहाँ ओकरा देखिऔक, हुनका देखिऔन्हि । औक इत्यादि स्थानमे कृतादेशक तिङ् आउक आदि । बतहा सोनमाक हेतु बिकाउक इत्यादि द्वितीय तिङ्चक्र देखिकेँ बुझब ।

एवम् द्वितीय भेद जे अहीकक अनवयव जे इच्छार्थक ईकार तकरा स्थानमे ऊकारयुक्त प्रेरणार्थक । ईकारबाला इच्छार्थक अथीन्ह तथा ई । किन्तु प्रेरणार्थक अथून्ह, ऊ–महाराज दुखीकेँ देखथून्ह । अहाँ पुस्तक देखू । अहीक दुहूमे एके रङ्ग तेँ हेतु अहीकक अनवयव कहल अछि ।

एवम् तृतीय भेद जे अय(ए), अथि, अहिँ एहि इच्छार्थकक स्थानमे अओ, अथु, अ प्रेरणार्थक–नेना नाच देखओ । भूपझा देखथु । तोँ देख । अथीन्ह, ऊ इत्यादिक स्थानमे कृतादेशक तिङ् आथीन्ह, ऐथीन्ह, ओथीन्ह। अओ अथु अ एकरा स्थान कृतादेशक आओ, एअओ, आथु, एथु, आ इत्यादि द्वितीय चक्रसँ बुझब ॥६॥

इत्सँ युक्त छकारशून्य तथा ऐत अनिष्पत्त्यर्थक ॥७॥

इत्शब्दसँ युक्त जे तिङ् से परोक्ष व्यवहित भविष्यद्व्यापारविधिक बोधक जानब । इतैक, इतैन्हि इत्यादि साक्षाद्विहित । अइतैक, अइतैन्हि इत्यादि कृतादेशक इत्सँ युक्त अछि, तकर अनिष्पत्ति अर्थ । बतहा ओकरा मारितैक जँ ओ नहि पड़ाइत । भूपझाकेँ देखितैन्हि यदि लगमे रहितथि । एवं भोलबाक हेतु बतहा बिकइतैक यदि ओ कहितैक । बिकाइत अछि एहिमे तिङ् इत्सँ युक्त भेल किन्तु छकारशून्य नहि भेल तेँ ओ अनिष्पत्त्यर्थक नहि ।

एवम् ऐत तिङ् अनिष्पत्त्यर्थक बुझब–आशा छल जे नोकर लगमे रहैत । बिकाइत एहि ठाम आइत तिङ् इत्सँ युक्ते भेल तेँ ओहो अनिष्पत्त्यर्थक से बुझी ॥७॥

इहसँ युक्त परोक्षव्यवह्रितव्यापारविध्यर्थ ॥८॥

इह शब्दसँ युक्त परोक्षव्यवहित भविष्यद्व्यापारक विधिबोधक थीक । इहह, इहक, इहैक इत्यादि इहशब्दसँ युक्त भेल । एवम् अइहह, अइहक इत्यादि । हओ तोँ गाम जाए पढ़िहह, ओकरा हेतु पढ़िहक इत्यादि एवं तोँ बिकइहह । ओकराहेतु बिकइहहक ॥८॥

अथीन्ह भविष्य इच्छा उभयार्थक ॥९॥

अथीन्ह ई तिङ् भविष्य इच्छा उभयार्थक जानब । भूपझा आइ हुनका देखथीन्ह । हमरा इच्छा जे ओ सभ दिन देखथीन्ह । अथीन्हक स्थानमे कृतादेशक एथीन्ह, ओथीन्ह, अय(ए)थीन्ह । देथीन्ह, लेथीन्ह, पठओथीन्ह, बिकय(ए)थीन्ह ॥९॥

अथून्ह भविष्य इच्छा प्रेरणा त्र्यर्थक ॥१०॥

अथून्ह ई तिङ् भविष्य, इच्छा ओ प्रेरणा तीनू अर्थक पर्यायसँ बोधक जानब । ओ आइ हुनकासँ रुसथून्ह । हमरा इच्छा जे गुरूजी हिनका सङ्ग रहथून्ह । भूपझा ओकरा मारथून्ह

तखन ओ कार्य करतैन्हि । अथून्हक स्थानमे कृतादेशक तिङ् एथून्ह, ओथून्ह, अय(ए)थून्ह–देथून्ह, लेथून्ह, देखओथून्ह, बिकय(ए)थून्ह ॥

एहिठाम ई बुझबाक चाही जे प्रेरणार्थक तिङक प्रयोगक जगह इच्छार्थकहुक प्रयोग करब असगत नहि होएत । एवम् इच्छार्थक तिङक प्रयोगक जगह प्रेरणार्थकहुक प्रयोग कए सकी । यथा–अहाँ कार्य करू वा करी, अहाँ हुनका पुस्तक दिऐन्हि वा दिऔन्हि, लोक नाच देखओ वा देखए ॥१०॥

ऐक-हक-हीक-शब्दान्त अनादरणीय परगामिक्रियाफलार्थक ॥११॥

धातुसँ विहित जाहि तिङक अन्तभाग ऐक, हक, हीक हो से तिङ् आन अनादरणीयगत क्रियाफलक बोधक होइत अछि । व्यपदेशिवद्भावसँ अपनो अन्त अपने कहाओत अतः ऐक प्रत्ययो ऐकशब्दान्त भेल ।

बतहा सोमनाकेँ देखैत छैक वा देखैक, ओकरा लग बसलैक । हओ, तोँ ओकरा देखैत छहक, देखलहक, देखबहक । रओ तोँ ओकरा रखैत छहीक, रखलहीक, रखबहीक । ऐकक स्थानमे कृतादेशक तिङ् आइक– लोक ओकरालए बिकाइक ॥११॥

ऐन्हि औन्हि हून्ह शब्दान्त आदरणीय परगतक्रियाफलार्थक ॥१२॥

ऐन्हि, औन्हि, हून्ह शब्दान्त तिङ् आदरणीय परगामिक्रियाफलार्थक जानब । बतहा महाराजकेँ देखैत छैन्हि, देखलकैन्हि । लोक महाराज केँ देखौन्हि ।अहाँ भूपझाकेँ देखिऔन्हि । हओ, तोँ हुनका देखैत छहून्ह, देखलहून्ह ; देखबहून्ह । ऐन्हि, औन्हिक स्थानमे कृतादेशक आइन्हि, आउन्हि–लोक हुनका ओहिठाम जाइन्हि वा जाउन्हि ॥१२॥

अहु शब्दान्त हओपदसंबोध्य तोरा-शब्दार्थगतक्रियाफलार्थक ॥१३॥

अहुशब्दान्त ऐतछहु, अलकहु इत्यादि तिङ् हओपदसँ संबोधनयोग्य तोरा शब्दार्थ, तद्गतक्रियाफलार्थक जानब । हओ सङ्गी, लोक तोहरा देखैत छहु, देखलकहु । तोरा लग बसलहु ॥१३॥

औक शब्दान्त प्रायः रओपदसंबोध्य-तोरा - शब्दार्थगतक्रियाफलार्थक ॥१४॥

औकशब्दान्त औक, ऐतछौक, अलकौक, अलौक इत्यादि तिङ् रओ पदसंबोध्य अत्यधम तोराशब्दार्थगत क्रियाफलार्थक जानब । रओ हरिहरबा, लोक तोरा देखौक, देखैत छौक, देखलकौक । तोरा लग बसलौक । औकक स्थान कृतादेशक आउक–लोक तोरा हेतु बिकाउक ॥१४॥

थून्हशब्दान्त उभयविध तोराशब्दार्थगतक्रियाफलार्थक ॥१५॥

इति तिङ्सारिणी समाप्त

यून्‌शब्दान्त ऐतछथून्ह, अलथून्ह इत्यादि तिङ्‌ उभयविध तोराशब्दार्थ-गतक्रियाफलार्थक जानब। *सहदेव तोरा देखैत छथून्ह, देखलथून्ह* ॥१५॥

ग्रन्थकर्तृकृत व्याख्या समाप्त

इति इसहपुरग्रामवास्तव्य मैथिल श्रोत्रिय फेकूशर्मतनूज

पं० श्रीदीनबन्धु-रचित मिथिलाभाषाविद्योतन समाप्त

॥ शुभमस्तु ॥

सारिणी ३८ : विस्तृत तिङ्चक्र

छक् आदि धातुसँ आगाँ योजनीय

संख्या	कर्ता	क्रियाफलभागी	वर्तमान	भूत		भविष्य	प्रेरणा	इच्छा	अनिष्पत्ति	परोक्ष भविष्यद् व्यापारानुज्ञा
				सकर्मकसँ	अकर्मकसँ					
१	लोक	–	ऐतअछि, ऐछ	अलक	अल	अत	अओ	अय	ऐत	
२	,,	ओकरा	ऐतछैक	अलकैक	अलैक	अतैक	औक	ऐक	इतैक	
३	,,	हुनका	ऐतछैन्हि	अलकैन्हि	अलैन्हि	अतैन्हि	औन्हि	ऐन्हि	इतैन्हि	
४	,,	तोहरा	ऐतछहु	अलकहु	अलहु	अतहु	अह	अहु	इतहु	
५	,,	तोरा	ऐतछौक	अलकौक	अलौक	अतौक	औक	औक	इतौक	
१	महाराज		ऐतछथि	अलैन्हि अलन्हि	अलाह	अताह	अथु	अथि	इतथि	
२	,,	ओकरा वा हुनका	ऐतछथीन्ह	अलथीन्ह	अलथीन्ह	अथीन्ह	अथून्ह	अथीन्ह	इतथीन्ह	
३	,,	तोहरा वा तोरा	ऐतछथून्ह	अलथून्ह	अलथून्ह	अथून्ह	अथून्ह	अथून्ह	इतथून्ह	
१	हओ तोँ	–	ऐतछह	अलह	अलाह	अबह	अह	अह	इतह	इहह
२	,,	ओकरा	ऐतछहक	अलहक	अलहक	अबहक	अहक	अहक	इतहक	इहक
३	,,	हुनका	ऐतछहून्ह	अलहून्ह	अलहून्ह	अबहून्ह	अहून्ह	अहून्ह	इतहून्ह	इहौन्हि
१	रओ तोँ	–	ऐतछेँ	अलेँ	अलेँ	अबेँ	अ	अहिँ	इतेँ	इहेँ
२	,,	ओकरा	ऐतछहीक	अलहीक	अलहीक	अबहीक	अहीक	अहीक	इतहीक	इहैक
३	,,	हुनका	ऐतछहून्ह	अलहून्ह	अलहून्ह	अबहून्ह	अहून्ह	अहून्ह	इतहून्ह	इहौन्हि
१	हम वा अहाँ	–	ऐतछी	अलहुँ/अल	अलहुँ/अल	अब	ऊ	ई	इतहुँ	
२	,,	ओकरा	ऐतछिऐक	अलिऐक	अलिऐक	अबैक	इऔक	इऐक	इतिऐक	
३	,,	हुनका	ऐतछिऐन्हि	अलिऐन्हि	अलिऐन्हि	अबैन्हि	इऔन्हि	इऐन्हि	इतिऐन्हि	
४	हम	तोहरा	ऐतछिअहु	अलिअहु	अलिअहु	अबहु	इअहु	इअहु	इतिअहु	
५	,,	तोरा	ऐतछिऔक	अलिऔक	अलिऔक	अंबौक	इऔक	इऔक	इतिऔक	

सारिणी ३९: बिकादिसँ पर श्रूयमाण विस्तृत तिङ्चक्र

संख्या	कर्ता	क्रियाफलभागी	वर्तमान	भूत	भविष्य	प्रेरणा	इच्छा	अनिष्पत्ति	परोक्ष भविष्यद् व्यापारानुज्ञा
१	बतहा	–	आइत अछि/आइछ	आय(ए)ल	आय(ए)त	आओ	आय(ए)	आइत	
२	,,	ओकरालए	आइत छैक	अय(ए)लैक	अय(ए)तैक	आउक	आइक	अइतैक	
३	,,	हुनकालए	आइतछैन्हि	अय(ए)लैन्हि	अय(ए)तैन्हि	आउन्हि	आइन्हि	अइतैन्हि	
४	,,	तोहरालए	आइतछहु	अय(ए)लहु	अय(ए)तहु	आहु	आहु	अइतहु	
५	,,	तोरालए	आइतछौक	अय(ए)लौक	अय(ए)तौक	आउक	आउक	अइतौक	
१	बतहू झा	–	आइतछथि	अय(ए)लाह	अय(ए)ताह	आथु	आथि	अइतथि	
२	,,	ओकरा लए	आइतछथीन्ह	अय(ए)लथीन्ह	अय(ए)थीन्ह	आथून्ह	आथीन्ह	अइतथीन्ह	
	,,	हुनकालए	,,	,,	,,	,,	,,	,,	
३	,,	तोहरालए	आइतछथून्ह	अय(ए)लथून्ह	अय(ए)थून्ह	आथून्ह	आथून्ह	अइतथून्ह	
	,,	तोरालए	,,	,,	,,	,,	,,	,,	
१	हओ तोँ		आइतछह	अय(ए)लाह	अय(ए)बह	आह	आह	अइतह	अइहह
२	,,	ओकरालए	आइतछहक	अय(ए)लहक	अय(ए)बहक	आहक	आहक	अइतहक	अइहक
३	,,	हुनकालए	आइतछहून्ह	अय(ए)लहून्ह	अय(ए)बहून्ह	आहून्ह	आहून्ह	अइतहून्ह	अइहौन्हि
१	रओ तोँ		आइतछेँ	अय(ए)लेँ	अय(ए)बेँ	आ	आहिँ	अइतेँ	अइहेँ
२	,,	ओकरालए	आइतछहीक	अय(ए)लहीक	अय(ए)बहीक	आहीक	आहीक	अइतहीक	अइहैक
३	,,	हुनकालए	आइतछहून्ह	अय(ए)लहून्ह	अय(ए)बहून्ह	आहून्ह	आहून्ह	अइतहून्ह	अइहौन्हि
१	हम वा अहाँ	–	आइतछी	अय(ए)लहुँ	आय(ए)ब	आउ	आइ	अइतहुँ	
२	,,	ओकरालए	आइतछिऐक	अय(ए)लिऐक	अय(ए)बैक	अइऔक	अइऐक	अइतिऐक	
३	,,	हुनकालए	आइतछिऐन्हि	अय(ए)लिऐन्हि	अय(ए)बैन्हि	अइऔन्हि	अइऐन्हि	अइतिऐन्हि	
४	हम	तोहरालए	आइतछिअहु	अय(ए)लिअहु	अय(ए)बहु	अइअहु	अइअहु	अइतिअहु	
५	,,	तोरालए	आइतछिऔक	अय(ए)लिऔक	अय(ए)बौक	अइऔक	अइऔक	अइतिऔक	

सारिणी ४० : देख धातुक विस्तृत तिङ्चक्र

संख्या	कर्ता	क्रियाफलभागी	वर्तमान	भूत		भविष्य	प्रेरणा	इच्छा	अनिष्पत्ति	परोक्ष भविष्यद् व्यापारानुज्ञा
				सकर्मकसँ	अकर्मकसँ					
१	लोक	–	देखैतअछि/देखैछ	देखलक	बसल	देखत	देखओ	देखय(ए)	देखैत	
२	,,	ओकराहेतु	देखैतछैक	देखलकैक	बसलैक	देखतैक	देखौक	देखैक	देखितैक	
३	,,	हुनकाहेतु	देखैतछैन्हि	लेखलकै न्हि	बसलैन्हि	देखतैन्हि	देखौन्हि	देखैन्हि	देखितैन्हि	
४	,,	तोहराहेतु	देखैतछहु	देखलकहु	बसलहु	देखतहु	देखहु	देखहु	देखितहु	
५	,,	तोराहेतु	देखैतछौक	देखलकौक	बसलौक	देखतौक	देखौक	देखौक	देखितौक	
१	महाराज	–	देखैतछथि	देखलैन्हि देखलन्हि	बसलाह	देखताह	देखथु	देखथि	देखितथि	
२	,,	ओकराहेतु	देखैतछथीन्ह	देखलथीन्ह	बसलथीन्ह	देखथीन्ह	देखथून्ह	देखथीन्ह	देखतथीन्ह	
३		हुनकाहेतु	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	
४	,,	तोहराहेतु	देखैतछथून्ह	देखलथून्ह	बसलथून्ह	देखथून्ह	देखथून्ह	देखथून्ह	देखितथून्ह	
५		तोराहेतु	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	
१	हओ तोँ	–	देखैतछह	देखलह	बसलाह	देखबह	देखह	देखह	देखितह	देखिहह
२	,,	ओकराहेतु	देखैतछहक	देखलहक	बसलहक	देखबहक	देखहक	देखहक	देखितहक	देखिहक
३	,,	हुनकाहेतु	देखितछहून्ह	देखलहून्ह	बसलहून्ह	देखबहून्ह	देखहून्ह	देखहून्ह	देखितहून्ह	देखिहौन्हि
१	रओ तोँ	–	देखैतछेँ	देखलेँ	बसलेँ	देखबेँ	देख	देखहिँ	देखितेँ	देखिहेँ
२	,,	ओकराहेतु	देखैतछहीक	देखलहीक	बसलहीक	देखबहीक	देखहीक	देखहीक	देखितहीक	देखिहैक
३	,,	हुनकाहेतु	देखैतछहून्ह	देखलहून्ह	बसलहून्ह	देखबहून्ह	देखहून्ह	देखहून्ह	देखितहून्ह	देखिहौन्हि
१	हम वा/अहाँ	–	देखैतछी	देखलहुँ/देखल	बसलहुँ	देखब	देखू	देखी	देखितहुँ	
२	,,	ओकराहेतु	देखैतछिऐक	देखलिऐक	बसलिऐक	देखबैक	देखिऔक	देखिऐक	देखितिऐक	
३	,,	हुनकाहेतु	देखैतछिऐन्हि	देखलिऐन्हि	बसलिऐन्हि	देखबैन्हि	देखिऔन्हि	देखिऐन्हि	देखितिऐन्हि	
४	हम	तोहराहेतु	देखैतछिअहु	देखलिअहु	बसलिअहु	देखबहु	देखिअहु	देखिअहु	देखितिअहु	
५	,,	तोराहेतु	देखैतछिऔक	देखलिऔक	बसलिऔक	देखबौक	देखिऔक	देखिऔक	देखितिऔक	

सारिणी ४१ : अब् प्रत्ययान्त देखब् धातुक विस्तृत तिङ्चक्र

संख्या	कर्ता	क्रियाफलभागी	वर्तमान	भूत	भविष्य	प्रेरणा	इच्छा	अनिष्पत्ति	परोक्ष भविष्यद् व्यापारानुज्ञा
१	बतहा	–	देखबैतअछि / देखबैछ	देखओलक	देखाओत	देखाबओ देखबओ	देखाबय(ए) देखबय(ए)	देखबैत	
२	,,	ओकरा	देखबैतछैक	देखओलकैक	देखओतैक	देखाबौक देखबौक	देखाबैक देखबैक	देखबितैक	
३	,,	हुनका	देखबैतछैन्हि	देखओलकैन्हि	देखओतैन्हि	देखाबौन्हि देखबौन्हि	देखबैन्हि देखाबैन्हि	देखबितैन्हि	
४	,,	तोहरा	देखबैतछहु	देखओलकहु	देखओतहु	देखाबहु देखबहु	देखाबहु देखबहु	देखबितहु	
५	,,	तोरा	देखबैतछौक	देखओलकौक	देखओतौक	देखाबौक देखबौक	देखाबौक देखबौक	देखबितौक	
१	बाबूजी		देखबैतछथि	देखओलैन्हि	देखओताह	देखबथु देखाबथु	देखाबथि देखबथि	देखबितथि	
२	,,	ओकरा	देखबैतछथीन्ह	देखओलथीन्ह	देखओथीन्ह	देखबथून्ह	देखबथून्ह	देखबतथीन्ह	
३	,,	हुनका	,,	,,	,,	,,	,,	,,	
४	,,	तोहरा	देखबैतछथून्ह	देखओलथून्ह	देखओथून्ह	देखबथून्ह	देखबयून्ह	देखबितथून्ह	
५	,,	तोरा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	
१	हओ तोँ	–	देखबैतछह	देखओलह	देखएबह	देखाबह देखबह	देखाबह देखबह	देखबितह	देखबिहह
२	,,	ओकरा	देखबैतछहक	देखओलहक	देखएबहक	देखाबहक देखबहक	देखाबहक देखबहक	देखबितहक	देखबिहक
३	,,	हुनका	देखबैतछहून्ह	देखओलहून्ह	देखएबहून्ह	देखाबहून्ह देखबहून्ह	देखाबहून्ह देखबहून्ह	देखबितहून्ह	देखबिहौन्हि
१	रओ तोँ		देखबैतछेँ	देखओलेँ	देखएबेँ	देखा	देखाबहि देखबहि	देखबितैँ	देखबिहैँ
२	,,	ओकरा	देखबैतछहीक	देखओलहीक	देखएबहीक	देखबहीक	देखबहीक	देखबितहीक	देखबिहैक
३	,,	हुनका	देखबैतछहून्ह	देखओलहून्ह	देखएबहून्ह	देखबहून्ह	देखबहून्ह	देखबितहून्ह	देखबिहौन्हि
१	हम वा अहाँ		देखबैतछी	देखओलहुँ/देखाओल	देखाएब	देखाउ	देखाबी/देखबी	देखबितहुँ	
२	,,	ओकरा	देखबैतछिऐक	देखओलिऐक	देखएबैक	देखबिऔक	देखबिऐक	देखबितिऐक	
३	,,	हुनका	देखबैतछिऐन्हि	देखओलिऐन्हि	देखएबैन्हि	देखबिऔन्हि	देखबिऐन्हि	देखबितिऐन्हि	
४	हम	तोहरा	देखबैतछिअहु	देखओलिअहु	देखएबहु	देखबिअहु	देखबिअहु	देखबितिअहु	
५	,,	तोरा	देखबैतछिऔक	देखओलिऔक	देखएबौक	देखबिऔक	देखबिऔक	देखबितिऔक	

एवम् आनो अब्प्रत्ययान्त धातुक तथा धातुपाठपठित सरब्भिन्न सकल अनेकस्वर अबन्त्यान्त धातुक रूप जानब

सारिणी ४२ : देखबब् धातुक विस्तृ[illegible]तचक्र

संख्या	कर्ता	क्रियाफलभागी	वर्तमान	भूत	भविष्य	प्रेरणा	इच्छा	अनिष्पत्ति	परोक्ष भविष्यद् व्यापारानुज्ञा
१	हरिहरबा	–	देखबबैतअछि/देखबबैछ	देखबओलक	देखबाओत	देखबाबओ	देखबाबए	देखबबैत	
२	,,	ओकराहेतु	देखबबैतछैक	देखबओलकैक	देखबओतैक	देखबाबौक	देखबबैक	देखबबितैक	
३	,,	हुनकाहेतु	देखबबैतछैन्हि	देखबओलकैन्हि	देखबओतैन्हि	देखबाबौन्हि	देखबबैन्हि	देखबबितैन्हि	
४	,,	तोहराहेतु	देखबबैतछहु	देखबओलकहु	देखबओतहु	देखबाबहु	देखबाबहु	देखबबितहु	
५	,,	तोराहेतु	देखबबैतछौक	देखबओलकौक	देखबओतौक	देखबाबौक	देखबाबैक	देखबबितौक	
१	भूप झा		देखबबैतछथि	देखबओलैन्हि	देखबओताह	देखबाबथु	देखबाबथि	देखबबितथि	
२	,,	ओकरा हेतु	देखबबैतछथीन्ह	देखबओलथीन्ह	देखबओथीन्ह	देखबओथून्ह	देखबओथीन्ह	देखबबितथीन्ह	
३	,,	हुनकाहेतु	,,	,,	,,	,,	,,	,,	
४	,,	तोहरालए	देखबबैतछथून्ह	देखबओलथून्ह	देखबओथून्ह	देखबओथून्ह	देखबओथून्ह	देखबबितथून्ह	
५	,,	तोरालए	,,	,,	,,	,,	,,	,,	
१	हओ तोँ		देखबबैतछह	देखबओलह	देखबएबह	देखबाबह	देखबाबह	देखबबितह	देखबबिहह
२	,,	ओकरालए	देखबबैतछहक	देखबओलहक	देखबएबहक	देखबाबहक	देखबाबहक	देखबबितहक	देखबबिहक
३	,,	हुनकालए	देखबबैतछहून्ह	देखबओलहून्ह	देखबएबहून्ह	देखबाबहून्ह	देखबाबहून्ह	देखबबितहून्ह	देखबबिहौन्हि
१	रओ तोँ	–	देखबबैतछैँ	देखबओलेँ	देखबएबेँ	देखबा	देखबाबहि	देखबबितैँ	देखबबिहैँ
२	,,	ओकराहेतु	देखबबैतछहीक	देखबओलहीक	देखबएबवहीक	देखबाहीक	देखबाबहीक	देखबबितहीक	देखबबिहैक
३	,,	हुनकाहेतु	देखबबैतछहून्ह	देखबओलहून्ह	देखबएबबहून्ह	देखबाहून्ह	देखबबहून्ह	देखबबितहून्ह	देखबबिहौन्हि
१	हम वा अहाँ	–	देखबबैतछी	देखबओलहुँ देखबाओल	देखबाएब	देखबाउ	देखबाबी	देखबबितहुँ	
२	,,	ओकराहेतु	देखबबैतछिऐक	देखबओलिऐक	देखबएबैक	देखबबिऔक	देखबबिऐक	देखबबितिऐक	
३	,,	हुनकाहेतु	देखबबैतछिऐन्हि	देखबओलिऐन्हि	देखबएबैन्हि	देखबबिऔन्हि	देखबबिऐन्हि	देखबबितिऐन्हि	
४	हम	तोहराहेतु	देखबबैतछिअहु	देखबओलिअहु	देखबएबहु	देखबबिअहु	देखबबिअहु	देखबबितिअहु	
५	,,	तोराहेतु	देखबबैतछिऔक	देखबओलिऔक	देखबएबौक	देखबबिऔक	देखबबिऔक	देखबबितिऔक	

एवम् आनो अब्प्रत्ययद्वयान्त छकबब् इत्यादिक रूप

सारिणी ४३ : बिक् धातुक विस्तृत तिङन्तचक्र

संख्या	कर्ता	क्रियाफलभागी	वर्तमान	भूत	भविष्य	प्रेरणा	इच्छा	अनिष्पत्ति	परोक्ष भविष्यद् व्यापारानुज्ञा
१	लोक	–	बिकाइतअछि/बिकाइछ	बिकाए(य)ल	बिकाएत	बिकाओ	बिकाए(य)	बिकाइत	
२	,,	ओकराहेतु	बिकाइतछैक	बिकए(य)लैक	बिकएतैक	बिकाउक	बिकाइक	बिकइतैक	
३	,,	हुनकाहेतु	बिकाइतछैन्हि	बिकए(य)लैन्हि	बिकएतैन्हि	बिकाउन्हि	बिकाइन्हि	बिकइतैन्हि	
४	,,	तोहराहेतु	बिकाइतछहु	बिकए(य)लहु	बिकएतहु	बिकाहु	बिकाहु	बिकइतहु	
५	,,	तोराहेतु	बिकाइतछौक	बिकए(य)लौक	बिकएतौक	बिकाउक	बिकाउक	बिकइतौक	
१	मालिक	–	बिकाइतछथि	बिकए(य)लाह	बिकएताह	बिकाथु	बिकाथि	बिकइतथि	
२	,,	ओकराहेतु	बिकाइतछथीन्ह	बिकए(य)लथीन्ह	बिकएथीन्ह	बिकाथून्ह	बकाथीन्ह	बिकइतथीन्ह	
३	,,	हुनकाहेतु	,,	,,	,,	,,	,,	,,	
४	,,	तोहराहेतु	बिकाइतछथून्ह	बिकए(य)लथून्ह	बिकएथून्ह	बिकाथून्ह	बिकाथून्ह	बिकइतथून्ह	
५	,,	तोराहेतु	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
१	हओ तौं		बिकाइतछह	बिकए(य)लाह	बिकएबह	बिकाह	बिकाह	बिकइतह	बिकइहह
२	,,	ओकराहेतु	बिकाइतछहक	बिकए(य)लहक	बिकएबहक	बिकाहक	बिकाहक	बिकइतहक	बिकइहक
३	,,	हुनकाहेतु	बिकाइतछहून्ह	बिकए(य)लहून्ह	बिकएबहून्ह	बिकाहून्ह	बिकाहून्ह	बिकइतहून्ह	बिकइहौन्हि
१	रओ तौं	–	बिकाइतछैं	बिकए(य)लैं	बिकएबैं	बिका	बिकाहिँ	बिकइतैं	बिकइहैं
२	,,	ओकराहेतु	बिकाइतछहीक	बिकए(य)लहीक	बिकएबहीक	बिकाहीक	बिकाहीक	बिकइतहीक	बिकइहैक
३	,,	हुनकाहेतु	बिकाइतछहून्ह	बिकए(य)लहून्ह	बिकएबहून्ह	बिकाहून्ह	बिकाहून्ह	बिकइतहून्ह	बिकइहौन्ह
१	हम वा अहाँ	–	बिकाइतछी	बिकए(य)लहुँ	बिकाएब	बिकाउ	बिकाइ	बिकइतहुँ	
२	,,	ओकराहेतु	बिकाइतछिऐक	बिकए(य)लिऐक	बिकएबैक	बिकइऔक	बिकइऐक	बिकइतिऐक	
३	,,	हुनकाहेतु	बिकाइतछिऐन्हि	बिकएलिऐन्हि	बिकएबैन्हि	बिकइऔन्हि	बिकइऐन्हि	बिकइतिऐन्हि	
४	हम	तोहराहेतु	बिकाइतछिअहु	बिकएलिअहु	बिकएबहु	बिकइअहु	बिकइअहु	बिकइतिअहु	
५	,,	तोराहेतु	बिकाइतछिऔक	बिकएलिऔक	बिकएबौक	बिकइऔक	बिकइऔक	बिकइतिऔक	

लेखकक जीवनवृत्त

जन्म– शाके १८०० (१८७८ ई.) आश्विन शुक्ल चतुर्दशी ।

नाम-उपनाम– लालजी प्रसिद्ध दीनबन्धु झा ।

वंश– मड़रए-सिहौलिमूलक मैथिल ब्राह्मण ।

पिता-माता– फेकू प्रसिद्ध विद्यानाथ झा : जीबछ देवी ।

निवास– इसहपुर, सरिसब-पाही, मधुबनी (बिहार) ।

अध्ययन– दरभंगामे धनुर्धर झासँ; वाराणसीमे म.म. शिवकुमार मिश्रसँ, १५ वर्ष, व्याकरण, षड्-दर्शन, काव्यशास्त्र, धर्मशास्त्र। व्याकरणतीर्थ, कलकत्तासँ । १९०८ ई. मे दरभंगा राजक धौत परीक्षामे प्रथम स्थान।

अध्यापन– अपना घर पर चौपाड़ि पद्धतिसँ निःशुल्क विद्यादान दस वर्ष धरि; ततःपर देवघर, लक्ष्मीपुर, सरिसव आ दरभंगा संस्कृत विद्यापीठमे कुल ५५ वर्ष।

ग्रन्थलेखन– संस्कृत ओ मैथिलीमे बीससँ अधिक । सूची एहि पुस्तकक पीठ पर देखल जाए।

मान-सम्मान– प्रस्तुत ग्रन्थ पर १९४१ ई मे मैथिली साहित्य परिषद्सँ महावैयाकरणक उपाधि ओ राघोपुरक हरिनन्दन सिंह मेमोरिअल ट्रस्टसँ पुरस्कार ।

स्वर्गवास– शाके १८७७ (१९५५ ई.) माघ शुक्ल तृतीया ।

चर्चा-समर्चा– हिनक कृतित्वक विवेचन कए विद्यावारिधि डा. शशिनाथ झा पी. एच. डी. उपाधि पओलनि । शताब्दी-समारोहमे मूर्ति स्थापित भेल आ स्मृति-ग्रन्थ प्रकाशित कएल गेल ।

ग्रन्थकारक अन्यान्य कृति

(क) संस्कृत-ग्रन्थ

(१) **रमेश्वरप्रतापोदयम्,** १९०२, काशी (२) **रसिकमनोरंजिनी,** १९१२, दरभंगा (३) **स्तोत्रावली,** १९७७, दरभंगा (४) **मूलार्थविद्योतिनी,** १९८६ (५) **समासशक्तिदीपिका,** १९७८ (६) **उपसृष्टधात्वर्थसंग्रहः,** १९८१ (७) **बकारविवेकः,** १९४१, काशी (८) **लिङ्गवचनविचारः,** १९५३ दरभंगा (९) **भूषणसारदीपिका,** अप्रकोशित्त (१०) **हरिकारिका-टीका,** अप्रकाशित (११) **व्याकरणतत्वप्रीपः,** १९८८, दरभंगा (१२) **स्त्रीव्यवहारः,** अप्रकाशित (१३) **जीवितपुत्रिकाव्रतनिर्णयः,** अप्रकाशित (१४) **श्राद्धाधिकारिनिर्णयः,** १९७६, दरभंगा (१५) **गयाश्राद्धपद्धतिः,** १९७७ दरभंगा, **विजयदशमी निर्णयः,** '७७, दरभंगा। (१७) **बालशिक्षासोपानम्,** '८२, काशी

(ख) मैथिलीग्रन्थ

(१८) **विद्योतन,** १९४५६, दरभंगा (१९) **धातुपाठ,** १९५०, दरभंगा (२०) **मिथिलाभाषकोष,** १९५० पटना (२१) **अलंकारसागर,** १९६७, दरभंगा (२२) **अक्षरशिक्षा,** अप्रकाशित (२३) **मिथिलाभाषाक प्रसंग परामर्श,** अप्रकाशित।

मिथिलाभाषाविद्योतन • दीनबन्धु झा